

0130 - N. Nagor:

वैदिक संहिता व्याख्या
तृतीयाह्निक से लट्ठाह्निक.

material P

७/३० - N. Nagai:

वेदिक संहिता व्याख्या
तृतीय भाग से जस्ताखत.

material P

तु ५५ तितां शुद्धिदिने सात्त्विकं नि
५५ तनुतद्विषयं तं नैमित्तिकं नि
५५ तनुतद्विषयं तं नैमित्तिकं नि
५५ तनुतद्विषयं तं नैमित्तिकं नि

॥ तद्वाचकप्रवर्तनः ॥

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

100

[illegible]

[illegible]

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

3

। शर्व ।

सुभ्रांशः
देवः

de

विदित्वा मु

५

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

तमस्या। नेवत्वा। स्त्रुवा कनस्त्री। इयिषे। वरुणसि। । पताम्नि। कोता न० दे० । सा सुविद्वान्। जिप्य।
कविं विस्वरविदेनाम्ने नगसाः नः। स क्रव्यादेव रताता। यकी यान्। वा जे। वाको यो वनते। मृपाजि
प्रले। अमे। कविष्ठाती। इयसि। अहं। स्त्रु च्छु म्मां। नातिनी। प्यदायी। प्रुट रुक्ति। तिव्र। देव रता तिन
हुवा ताः। स्वग। नाति रसी। वस्तु रति। स रु० असे त्वा सः। लेकी यस्या। मनस्या। स्वाहुतः। हुत।
सिद्ध। स्त्रु टा मृतमर्था। सि कोश। अमे। ना सः। नृत्त मस्या। प्रचक्षुते। तुयामी ते। सुट्सुत रथे म्
वर्धः। तुनी पादि। दिदेइति। इयिने। अनी का। अमे। देव रता। यका वडा कनी सः। प्यः। ना। वक्र। देव रता
ति। य विष्ठा। लथः। यत्रा म्मा। दि कां। यकी स्थि। यत्रा दा। को ता न० अन ऊव। मिथये। निरसा
दर्य० तः। स क्रया या देवाः। सः। द० नः। अमे। स वृता। उक्र। बोधि। अपि। सर्वा स्थि। थं कि। नः।
तनुवु। । पताम्नि। दु ष र्णा० अस्विनी। इयि रक्षा। विष्णु शिवा नवते। व ड्डि। उकुँः। स्त्रु यन्तो ति
पः। स्त्रु पंतु। देवाः। स्त्रु कोष सः। अ धु र० बावरा ना म्मा मे। वी। ते। वा किना। वी। स प र स्या
ति स्यः। ते। किदा। नृत्त रता। पुवीः। ति स्यः। दुल इति। ते। त नृ० देव रता। ता तिः। नः। वादि
मियः। अ प्र च्छु क्तवा। अ मे। कुनी ति। त वे। का त र वेदः। देव। स्त्रु था। वः। अ म न स्या। ना मी। जा

ع

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

४

乙

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

五

5

[illegible]

五

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

[illegible]

वंत

१०

भाः। द्वाभितः मते विद्वत्। ताते वृत्तावीर्यति। तं किं। स्मृत्वा वृत्तं नृनयं ता नि। एकः।
 वा। द्वाभितः। किं। पूमानः। तवोभावाप्यविनीहृति। पर्वताः। जेन। वृताः।
 निमित्तादृवातः। त्रुता। ज्ञानं ये। पुत्रदुतः। त्वः। रत्तिः। एकः। दृष्टं। नृवः। वृत्तः।
 स्मृत्वा। मे। इति। विद्वत्। इति। नो। इति। इति। नृपा। ने। इति। यत्। त्वः। रत्तिः। एकः। दृष्टं। नृवः। वृत्तः।
 वा। द्वाभितः। प्रवृत्ता। द्वा। विद्वत्। ताते। वृत्तः। प्रवृत्ता। नृपा। ने। इति। यत्। त्वः। रत्तिः। एकः। दृष्टं। नृवः। वृत्तः।
 वः। विद्वत्। स्मृत्वा। कृत्वा। विद्वत्। नृपा। ने। इति। यत्। त्वः। रत्तिः। एकः। दृष्टं। नृवः। वृत्तः।
 मे। कः। स्मृत्वा। त्वः। इति। नृपा। ने। इति। यत्। त्वः। रत्तिः। एकः। दृष्टं। नृवः। वृत्तः।
 पुत्रदुतः। त्वः। इति। नृपा। ने। इति। यत्। त्वः। रत्तिः। एकः। दृष्टं। नृवः। वृत्तः।
 नृपा। ने। इति। यत्। त्वः। रत्तिः। एकः। दृष्टं। नृवः। वृत्तः।
 स्मृत्वा। नृपा। ने। इति। यत्। त्वः। रत्तिः। एकः। दृष्टं। नृवः। वृत्तः।
 वृत्तः। इति। नृपा। ने। इति। यत्। त्वः। रत्तिः। एकः। दृष्टं। नृवः। वृत्तः।
 नृपा। ने। इति। यत्। त्वः। रत्तिः। एकः। दृष्टं। नृवः। वृत्तः।

五

nn

उत्तर

पं. २८

मर्दि। क्तोतिः। तर्माः। निः। क्तान्न। तः। क्तान्तीः। प्रति। रुत्। क्तान्न। यन्। रुत्। यत्। पतिः।
 गवा। क्तान्न। वत्। एकः। इन्द्रः। वी। लो। स्त। तीः। क्तान्तीः। थ। रीः। क्तान्न। यन्। यत्। क्तान्न। यन्। यत्।
 सत्। वि। प्रः। वि। र्वा। क्तान्न। वि। दन्। प। यत्। न। त्। स्त। यत्। क्तान्न। यन्। यत्। क्तान्न। यन्। यत्।
 वि। दन्। यत्। वि। दन्। यत्। क्तान्न। यन्। यत्। क्तान्न। यन्। यत्। क्तान्न। यन्। यत्। क्तान्न। यन्। यत्।
 त्। यत्। यत्। क्तान्न। यन्। यत्। क्तान्न। यन्। यत्। क्तान्न। यन्। यत्। क्तान्न। यन्। यत्।
 प्र। रत्। मः। सत्। यत्। यत्। क्तान्न। यन्। यत्। क्तान्न। यन्। यत्। क्तान्न। यन्। यत्।
 सत्। यत्। यत्। क्तान्न। यन्। यत्। क्तान्न। यन्। यत्। क्तान्न। यन्। यत्। क्तान्न। यन्। यत्।
 वि। र्वा। वे। र। क्तान्न। यन्। यत्। क्तान्न। यन्। यत्। क्तान्न। यन्। यत्। क्तान्न। यन्। यत्।
 क्तान्न। यन्। यत्। क्तान्न। यन्। यत्। क्तान्न। यन्। यत्। क्तान्न। यन्। यत्। क्तान्न। यन्। यत्।
 क्तान्न। यन्। यत्। क्तान्न। यन्। यत्। क्तान्न। यन्। यत्। क्तान्न। यन्। यत्। क्तान्न। यन्। यत्।
 क्तान्न। यन्। यत्। क्तान्न। यन्। यत्। क्तान्न। यन्। यत्। क्तान्न। यन्। यत्। क्तान्न। यन्। यत्।
 क्तान्न। यन्। यत्। क्तान्न। यन्। यत्। क्तान्न। यन्। यत्। क्तान्न। यन्। यत्। क्तान्न। यन्। यत्।
 क्तान्न। यन्। यत्। क्तान्न। यन्। यत्। क्तान्न। यन्। यत्। क्तान्न। यन्। यत्। क्तान्न। यन्। यत्।
 क्तान्न। यन्। यत्। क्तान्न। यन्। यत्। क्तान्न। यन्। यत्। क्तान्न। यन्। यत्। क्तान्न। यन्। यत्।

٧

प० न०

2

नः

मर्माः। ३। क्रियाः। पतिः। तव। वृत्तम्। सुनृत्तानां। निरां। विन्दन्। श्रुः। वृत्तः। वयः। तथा। १। तं
 नि। नि। स्वैत्रे। नमः। स्या। स्य। पयः। नमः। कृत्वा। नि। स्य। नमः। पुनः। २। कृत्वा। वृत्तः। वि। या। दि। वृत्तः। ३। कृत्वा।
 नमः। ४। वृत्तः। वि। त्तः। ५। नमः। मन्त्रः। वयः। स्या। तयः। ६। मन्त्रः। पा। वृत्तः। ७। वृत्तः। ८। कृत्वा। वृत्तः।
 नमः। ९। वृत्तः। १०। कृत्वा। स्या। ११। वृत्तः। १२। वृत्तः। १३। वृत्तः। १४। वृत्तः। १५। वृत्तः। १६। वृत्तः। १७। वृत्तः। १८। वृत्तः। १९। वृत्तः। २०। वृत्तः।
 नमः। २१। वृत्तः। २२। वृत्तः। २३। वृत्तः। २४। वृत्तः। २५। वृत्तः। २६। वृत्तः। २७। वृत्तः। २८। वृत्तः। २९। वृत्तः। ३०। वृत्तः।
 नमः। ३१। वृत्तः। ३२। वृत्तः। ३३। वृत्तः। ३४। वृत्तः। ३५। वृत्तः। ३६। वृत्तः। ३७। वृत्तः। ३८। वृत्तः। ३९। वृत्तः। ४०। वृत्तः।
 नमः। ४१। वृत्तः। ४२। वृत्तः। ४३। वृत्तः। ४४। वृत्तः। ४५। वृत्तः। ४६। वृत्तः। ४७। वृत्तः। ४८। वृत्तः। ४९। वृत्तः। ५०। वृत्तः।
 नमः। ५१। वृत्तः। ५२। वृत्तः। ५३। वृत्तः। ५४। वृत्तः। ५५। वृत्तः। ५६। वृत्तः। ५७। वृत्तः। ५८। वृत्तः। ५९। वृत्तः। ६०। वृत्तः।
 नमः। ६१। वृत्तः। ६२। वृत्तः। ६३। वृत्तः। ६४। वृत्तः। ६५। वृत्तः। ६६। वृत्तः। ६७। वृत्तः। ६८। वृत्तः। ६९। वृत्तः। ७०। वृत्तः।
 नमः। ७१। वृत्तः। ७२। वृत्तः। ७३। वृत्तः। ७४। वृत्तः। ७५। वृत्तः। ७६। वृत्तः। ७७। वृत्तः। ७८। वृत्तः। ७९। वृत्तः। ८०। वृत्तः।
 नमः। ८१। वृत्तः। ८२। वृत्तः। ८३। वृत्तः। ८४। वृत्तः। ८५। वृत्तः। ८६। वृत्तः। ८७। वृत्तः। ८८। वृत्तः। ८९। वृत्तः। ९०। वृत्तः।
 नमः। ९१। वृत्तः। ९२। वृत्तः। ९३। वृत्तः। ९४। वृत्तः। ९५। वृत्तः। ९६। वृत्तः। ९७। वृत्तः। ९८। वृत्तः। ९९। वृत्तः। १००। वृत्तः।

ਬਾਨੂ

က

•

۵۸

[illegible]

५०२०

74

३३।

५२८

१५

9
152-1

৩৬

१०३३

۱۷۵

1

पतः

न२

क

रातकुतोइति रातकुतो। आ। ते। कनेषु। पुंवरसु। ३३। ताति। ते। का। दृणो। शार्गम। ३३।
वः। रवः। कुतः। अमृ। अथिषु। उरुतः। उरु। ते। गुष्ठां। तिना। मस्या। अवरिवतः। नः। का।
गदि। अयोइति। रांकापनावतः। दु०इति। लोकाः। लः। ते। अद्वि। रवः। ३३। इद। ततः।
का। गदि। ॥ अज्ञातशरश्वा। नीथला। मनीषा। अतः। नावाक्री। सुरधुमः। किंनः। का।
ति। प्रियाति। मर्षरात्र। पनाति। अथि। कवीम। ३३। अमि। संपदः। सुरधुमः। इना। उत। पुष्टा।
कनिमा। कवीनां। मनः। रथतः। सुरकतः। तक्रतायां। इमाः। दु०इति। ते। प्रराजः। वथि। ना।
मानः। रवाताः। अथ। अथि। मन्त्र। निष्ठा। इत। अत। गुष्ठा। यथा। नाः। उत। कवाया।
मे। रथी। इति। रणः। अं। कन्। रणः। मातृ। तिः। अमि। ने। येमः। इवीइति। अतः। अदीइति। रण।
मतेइति। रणः। रते। धाज। रणः। धुविति। धुः। अरति। हतः। पना। विरवः। अतुषन्। रिवजः।
वरणा। नः। वति। स्वरसो। विष। मत्त। तव। वत्तः। अरु। नरणा। ना। म। का। विरवः। पुनः। अम।
ता। न। तस्थो। अरु। उत। उर्वः। वृषतः। अया। न्। इमाः। अरणा। रणुथः। रणः। ति। पु।
वीः। विवः। नपाता। विरवः। रणः। अतिः। कलः। ना। काना। प्ररविः। इथा। योइति। ॥ ३॥

पतः

न२

55

७० नू
न

[illegible]

23

प० तः

۳۲

[illegible]

30

[illegible]

הר

[illegible]

कर्वा विट् जानराः सोयसीति मेरुनाटवान् तणः नका रे रुवाः मतीनां वि
 ताटव वातुः सुखवः वराः रथाः पतीवः नरुसः पृथः न वायुः वसुपतिः ॥३॥
 निचुबीन्नु मपावक्ता कृतिता सुयस्मि विट् तका ताण पियवाणाटव वाकं ॥३॥
 इः स्वादा विवतु यस्मिन् सोमः मागता तं मः वषतः मनुवा नका उरुटवा वाः पु
 तातां एतिः नन्नैः नका कस्मिन् रुविः तवः कासी नृथाः नका ते स्पवर्ग इति कवस्यो
 युनक्ति मय्योः मनु प्रटिवः रुशिः मावः इरु ता थयुः रुनयः सुटवा प्रविदा
 ॥३॥ ~~मनु कस्मिन्~~ नोः गोतिः मिमिनुं विवे सुटवान नद्रं क्तेष्टा यथारस्यो
 गुणा नाः मदानः सोमं पविटवान् नकी विमन् नका स्मर्ता पुनृथा गाः इषणा ॥३॥
 यक्षति रथतं मन्त्रवात उकथं ३३ गिनः वरुतीः कति ननुषत ववथा ॥३॥
 तं सुवक्त्रि रतिः नमस्मात् ननु मतात् उवेरिवे रातरक्तं नका विरा कर्ता ननं मिमं
 मो ३३ उपयंति विरवतः वाकुरसर्गि पुः रतिरं तुर्ति नका रतुनं थामरस्याव
 कति रस्यावः स्वः रविदं नका रकते वसोः कृतिता पुनस्पते कनेरुसः सुतः ३३ उवस्प
 ति विवस्वतः सारने नका दि विविमो स्पता र्स्यामं कति माति रदनं सुदि ज्ञातां कृ

۲۲

५०२०

22

पञ्च। ३३। आ। भु। न। स्व। वा। तु। त्तां। क। वा। नि। सि। स्त्र। ने। पु। नो। न्ना। रीं। वा। नः। प्य। सः। जो। ष। या। से।
मि। नः। वा। नः। व। धु। यः। र। व। शो। ष। ता। न। पु। नो। न्ना। रीं। प्य। न। र। सु। ता। प्रु। तः। र। ता। वे। कु। ष। स्व। नः। ३३।
३। क। तु। श। दि। ते। व। न। न। मा। धीं। न। स्या। स्य। व। न। स्या। धा। न। श। पु। नो। न्ना। रीं। ३३। क। ष। ३३। दा।
तुं। प्र। य। त्ता। र। स्या। ता। क। वि। ता। तु। ति। ष। न। यः। व। ष। र। ज। मा। ता। श। तु। प। णीः। र। तिः। शी। हूँ॥ १॥
तृतीये। धा। न। श। स्य। वे। ने। पु। नु। र। सु। ता। पु। नो। न्ना। रीं। का। र। कृतं। म। म। दृ। स्व। नः। व। लु। प्यं। तं।
वा। क्तं। र। वं। तं। वा। क। वे। व। यं। स्व। तः। तु। पा। र। श। मे। म। धा। ति। र। सिः। पु। ष। प्यं। र। वं। ते। ते। व। न। ता। क।
नं। तं। स्य। वि। च्यं। ते। क। वि। र। स्य। वा। य। धा। नः। श। पु। पं। म। धि। स्य। रं। ता। श। म। नु। कृतं। लिः। स्यो।
मं। पि। वा। वृ। त्तं। का। र। सु। ता। वि। द्वा। न्ना। प्र। ति। धा। न। श। स्य। न। त। तु। यं। श। न्ते। पु। नो। न्ना। रीं। वी। न। रतं।
मा। य। न। तां। वि। वे। रं। वि। वे। स्य। र। दृ। रीं। ३३। तु। त्तं। व। र्थं। तु। ता। स्यो। मं। र। पे। य। य। धु। षो। ३३।
॥ १॥ शिं। डा। पर्वता। वृ। क्तता। व। र्थे। न। वा। णीः। र। षः। आ। वृ। क्तं। सु। र। वी। नः। वी। तं। क। वा। नि।
न। धु। ने। पु। रं। वा। व। र्थे। धा। न। गी। र। तिः। इ। ल। य। म। वं। ता। ति। ष्ठा। सु। कं। म। प्यं। र। वं। न्ना। मा। प। न।
गाः। स्यो। मं। स्य। न्ना। व। ता। सु। र। रं। तस्या। य। नि। पि। तुः। न। पु। तः। सि। रं। का। नं। ते। ते। ३३।

प.त

७५

इ०।स्वादिह्यया।गिवा।रादीटवः।रांसा।वाअधुर्न।इति।प्रति।सोभा।लीदि।इ०।इया।वाचः।
 कृणवावाकुसं०।आ।इ०।वर्धिः।यकमानस्या।स्त्री।इ०।अध।वा।सुत्र।इ०।अध०।इ०।इया।
 रासं।क्राया।इ०।असं।मप्यरवन्।सा।इ०।इ०।इ०।लीनिः।तत्र।इ०।वा।युक्ताः।
 मनेयः।वृद्धं।यदा।कृता।विरुनवा।मप्योमं०।अग्निः।त्वा।इ०।अधु।तत्र।अनु।
 पता।जादि।मप्यरवन्।आ।वा।रा।दि।इ०।त्वातः।इ०।अधु।तत्र।अनु।
 स्या।वृद्धतः।अथार्थं०।विरुनवा।वर्धिः०।नार्यतरप०॥॥॥।अपीः।रुपे।
 मं०।असं०।इ०।इ०।प्र।या।दि।कल्या।लीः।क्राया।रुपे।नार्य०।अथोते०।इ०।अपार।
 वत्।इ०।ते।क्राया।अंनिनस्यः।विरुनवाः।इ०।पुतास्यः।असुनरप०।वीनाः।विरुमिक्ता।
 या।इ०।तः।मप्यानि।समस्यरस्यावे।प्रतिर्नते।आयुः।नुप०।रुप०।मप्यरवा।वोतवाति।
 मायाः।कृणवनः।तद्वपवि।स्या०तिः।यत्वा।इ०।पवि।मप्यरुतः।आ।अगातः।स्वैः।मलेः।
 अनुरपाः।रुतर्वा।मप्यानि।विरुनवाः।इ०।इ०।इ०।इ०।असं०।मप्यानि।
 नृत्तसीः।विरुमिक्ताः।यत्वा।अवन्तः।रुपे।नार्य०।अथि।या।यत।कृता।केतिः।इ०।इ०।

प.त

७६

۴۵

१५

२५

२५

पञ्च

934

प.त.
७६

३०। पुनरुक्तोऽस्य स्वस्वत्वात् । वषः । द्वितीयः । कृष्णः । अक्षयः । मिमीक्षितः । स्वर्गः । विस्वः ।
 नोऽक्षयः । पुनरुक्तः । तात्त्विकः । राक्षसः । अक्षयः । विस्वः । पुनरुक्तः । द्वितीयः । नः । ७७ । पुनरुक्तः ।
 पुनरुक्तः । मिमीक्षितः । विस्वः । अक्षयः । विस्वः । अक्षयः । गोष्ठः । पुनरुक्तः । देवः । पुनरुक्तः ।
 पुनरुक्तः । अक्षयः । देवः । पुनरुक्तः । नः । ७८ । अक्षयः । पुनरुक्तः । देवः । पुनरुक्तः ।
 पुनरुक्तः । अक्षयः । पितृवः । पुनरुक्तः । पुनरुक्तः । केतुः । अक्षयः । विस्वः । पुनरुक्तः ।
 पुनरुक्तः । कोष्ठः । राक्षसः । अक्षयः । पुनरुक्तः । पुनरुक्तः । अक्षयः । पुनरुक्तः ।
 नः । नाक्षयः । विस्वः । पुनरुक्तः । राक्षसः । पुनरुक्तः । वषः । अक्षयः । अक्षयः । तन्त्रः ।
 नैति । अक्षयः । अक्षयः । पुनरुक्तः । अक्षयः । अक्षयः । अक्षयः । अक्षयः ।
 तन्त्रः । अक्षयः । पुनरुक्तः । अक्षयः । पुनरुक्तः । पुनरुक्तः । अक्षयः ।
 अक्षयः । अक्षयः । अक्षयः । अक्षयः । अक्षयः । अक्षयः । अक्षयः ।
 अक्षयः । अक्षयः । अक्षयः । अक्षयः । अक्षयः । अक्षयः । अक्षयः ।
 अक्षयः । अक्षयः । अक्षयः । अक्षयः । अक्षयः । अक्षयः । अक्षयः ।
 अक्षयः । अक्षयः । अक्षयः । अक्षयः । अक्षयः । अक्षयः । अक्षयः ।

प.त.
७६

त्रिःस्त्रिःपथः। गोः।। नि। वेवेति। यत्नितः। इतः। आसु। संतः। अन्नां वरुति। गो वनेना वपु
 पि। विवेत्तु। अन्नि। नः। वि। वृष्टौ।। विष्णुः। गोपाश वरुमा। पाति। पार्थः। विद्या। धामाति।
 अन्नात्।। इथानः। अन्निः। ता। विस्वा। सुर्वना। नि। वे। दा।। गो। तानी। वक्राते इति। यम्मा।
 वपुष्पि। तयोः। अन्नाः। गोवते। कृष्णः। अन्नात्। रणावी। व। अन्तु। अन्तुणी। वा। स्वसा
 नौ।। माता। वा। यत्न। उदिता। वा। यत्न। इति। स्ववृत्ते। इति। स्ववृत्तः। उद्ये। धा। पार्थते। इति। सन्ना
 वी। इति। स्व। उदीवी। नृत्तस्या। ते। इति। स्व। इति। शीले। संतः।। अन्ना। रणा।। वृष्टप। विद्वती।
 मिमाय। कया। सुता। नि। इथे। येगुः। इथः।। नृत्तस्या। रणा। पार्थसा। अपि। वृत्ता। इन्ना।।
 पन्ना। वृष्टे। पुनृत्तुपा। वपुष्पि। इ। धामि। रण्यौ। विरजवि। वे। विद्याता। नृत्तस्या। स्व
 न्ना। वि। वृत्ता। विद्याव।। पुदेश्वेति। पदे। रव। निदिते। इति। निरदिते। इत्ये। अन्तविति।
 नयोः। अन्नात्। गुम्मा। आविः। अन्नात्। रण्यवीना। पन्ना। रणा। विपुवी।। व०।।
 न्ना। धेनवः। पुनृत्तुपा। अन्नि। रवी। स्ववृत्तः। उद्ये। रणा। अन्तुत्तुपा। नव्या। र
 नव्याः। अन्तुवतः। तवतीः। यत्न। अन्नात्। वपुत्ता। गोवदीति। स्वः। अन्तुत्तुपा। उद्ये।

۲۲

पान्थ
७२

स्यः। नेतः। थाः। वृष्णः। रास्वती। नो। कृतिके। श्रावण। पक्ष्मिः। श्रवण। श्रादित्यानी। क
 वे। धातु। नाही। ज्ञानः। विदुः। कास्वमे। ज्ञानमन्तदेवीः। पृथ्वी। वृक्षः। तीः। पविः। स्त्री। कवुं कव
 वी। स्यथरण्या। सिंधवः। विः। कवीना। उत। द्विरभाता। विदयेषु स्वंमाह। नृतरवनीः।
 जोषाणाः। तिस्रः। जपाः। त्रिः। ज्ञा। द्विः। विदये। पत्तमानाः। विः। ज्ञा। द्विः। स्यवितुः।
 वार्यमि। द्विद्विदे। ज्ञा। सुवातिः। नः। कद्रुः। द्विरधातु। नायः। ज्ञा। सुवा। वस्तुनि। तग।
 त्रातः। पिषणो। सातये। थाः। स्यवितु। रणो। स्यवीक्षो। ज्ञापः। द्विः। कस्त्या। नोइस्त्री।
 तौ। प्रितु। कुवीइति। ननः। तिस्रः। स्यवितुः। स्यवाया। विः। उतु। रतमा। उः। रतरो। नोवनीनि।
 वयः। नाकः। स्त्री। कस्त्युन स्या। वीनाः। नृतरवानः। इक्ष्मिनाः। उः। रयती। स्यमः। स्यतु। देवाः।
 प्राप्ते। विदिकान। कविदुः। मनीषा। र्थजुं। वनंती। प्रदयुतां। मर्गोपा। स्यमः। विदुः। या।
 उउदे। नुवि। थासोः। इः। इः। तत्र। कस्मिः। पतितानी। कस्त्या। इः। इः। स्य। पुषा। वृष्णा। स्य
 रदस्ती। द्विः। न। प्रीताः। रासायं। उउदे। विरे। यत्तु। कस्त्या। नायः। ती। देवाः। प्रावः।
 कलावसुवः। स्यमः। कस्त्या। रासायं। या। कस्त्या। मयः। वृत्ति। इः। इः। ती। राकि। मस्त्या। ती। कानते।

کساو

प.३-

95

वां। मृष्यवाना। कनेषु। ॥ ३॥ अनुतां। अर्कः। स्यस्यां। शिवं। वां। लुकोऽनना। इवितां। कृद्वाकां।
 पुनवितां। कृद्वाकाः। स्यस्यां। शिवं। निमथा। मदेमास्यद। न। स्यमाताः। अस्विना। वा। युनी। यु
 वं। स्यु२३को। निमथुतिः। वा। स्यु२कोषस्या। युवाना। नास्यत्या। तिवः२। मन्म०। कृष्णा। र्णा। र्णा।
 निवतां। अस्विथा। स्यु२। नु२। रतिः। स्यु२। कानु। अस्विना। पविवां। र्षः। पु२। वीः। शीयुः। गीः। रतिः। य
 तमाताः। अम०। प्राः। नर्थः। रु। वा०। नृतरकाः। अर्द्धिः। कृतः। पविआवां। प०। यि०। वी०। रतिः। य
 स्यु२। अस्विना। म०। पु०। स्यु०। व०। रतेमः। यु०। वा०। कृः। स्यो०। मः। त०। पा०। त०। अ०। ग०। त०। उ०। रो०। पो०। न०। तु०। वि०।
 वर्षः। क०। वि०। कृ०। स्यु०। र०। र०। व०। तः। निः०। र०। कृत०। अ०। र०। म०। मि०। मः०॥ ॥ ॥ मितः। कृ०। न०। न०। आ०। त०। ति। यु०। वा०।
 पा०। मितः। द०। था०। न०। प०। यि०। वी०। उ०। त०। म०। मितः। कृ०। शीः। अ०। नि०। र्णा। अ०। ति। वृ०। शीः। मितः। यी०। यु०। वा०।
 नृतर०। व०। कृ०। न०। त०। अ०। स्यः। मितः। म०। तः। स्यु०। स्यु०। प्र०। य०। र्णा। य०। यः। तः। अ०। रतिः। शि०। रतिः। वृ०। तेन०।
 ना०। कृ०। न०। तेन०। कृ०। य०। तेन०। व०। र०। कृतः। न०। ए०। न०। अ०। न०। अ०। र०। नो०। ति०। अ०। रतिः। तः। न०। उ०। न०। त०। अ०। न०। मी०। वा०।
 स्यः। इ०। ले०। य०। म०। र०। तः। मितः। र०। वः। व०। वि०। म०। अ०। प०। यि०। वा०। अ०। रतिः। स्यु०। वृ०। त०। उ०। प०। र०।
 य०। तः। व०। य०। मितः। स्यु०। वितुः। स्यु०। म०। अ०। य०। मितः। न०। म०। स्यु०। स्यु०। र०। यो०। वः। ना०। कृ०। स्यु०।
 कृतः। अ०। कृ०। नि०। स्यु०। वे०। था०। म०। कृ०। न०। अ०। रतिः। तः। न०। म०। स्यु०। उ०। प०। र०। स्यु०। य०। य०। त०। य०। त०। र०। कृतः॥

— 24 —

पं०
१५

५३

[illegible]

五

५०

30

पत्र
३८

[illegible]

प. २

३७

तः। वि। को। नृ। प। ख। र। चं। स्म। र। नः। अ। नि। का। नः। अ। र्व। नृ। वि। रं। तं। अ। तः। म। कृ। पं। तं। श। तः।
 तं। ए। क। ता। अ। नं। स्म। ॥ ३७ ॥ उ। व। यं। गः। रं। म। नः। अ। प। नि। रं। तं। अ। र्वं। ॥ ३८ ॥ नः। व। र्वं।
 स्म। ॥ ३९ ॥ नः। व। र्वं। ॥ ४० ॥ ग। रं। म। नं। तं। उ। र्वं। कः। वि। वृ। वृ। वि। तं। वृ। ॥ ४१ ॥ तं। म। नृ। तं। प्र। यं। मं। न।
 मी। थं। नोः। विः। स। प्र। म। तः। प। नृ। म। ति। विः। नृ। तं। कृ। नृ। तः। अ। ति। अ। नृ। तं। वृ। ॥ अ। विः।
 ॥ ४२ ॥ अ। नृ। तः। य। रं। स। ॥ गं। ॥ नृ। रं। वृ। तं। मः। उ। र्वं। तं। नृ। वृ। तं। ॥ ४३ ॥ उ। र्वं। ॥ ४४ ॥ उ। र्वं। ॥ ४५ ॥
 उ। र्वं। ॥ ४६ ॥ अ। नृ। तः। अ। नृ। तः। ॥ ४७ ॥ अ। नृ। तः। ॥ ४८ ॥ अ। नृ। तः। ॥ ४९ ॥ अ। नृ। तः। ॥ ५० ॥
 ॥ ५१ ॥ अ। नृ। तः। ॥ ५२ ॥ अ। नृ। तः। ॥ ५३ ॥ अ। नृ। तः। ॥ ५४ ॥ अ। नृ। तः। ॥ ५५ ॥
 ॥ ५६ ॥ अ। नृ। तः। ॥ ५७ ॥ अ। नृ। तः। ॥ ५८ ॥ अ। नृ। तः। ॥ ५९ ॥ अ। नृ। तः। ॥ ६० ॥
 ॥ ६१ ॥ अ। नृ। तः। ॥ ६२ ॥ अ। नृ। तः। ॥ ६३ ॥ अ। नृ। तः। ॥ ६४ ॥ अ। नृ। तः। ॥ ६५ ॥
 ॥ ६६ ॥ अ। नृ। तः। ॥ ६७ ॥ अ। नृ। तः। ॥ ६८ ॥ अ। नृ। तः। ॥ ६९ ॥ अ। नृ। तः। ॥ ७० ॥
 ॥ ७१ ॥ अ। नृ। तः। ॥ ७२ ॥ अ। नृ। तः। ॥ ७३ ॥ अ। नृ। तः। ॥ ७४ ॥ अ। नृ। तः। ॥ ७५ ॥
 ॥ ७६ ॥ अ। नृ। तः। ॥ ७७ ॥ अ। नृ। तः। ॥ ७८ ॥ अ। नृ। तः। ॥ ७९ ॥ अ। नृ। तः। ॥ ८० ॥
 ॥ ८१ ॥ अ। नृ। तः। ॥ ८२ ॥ अ। नृ। तः। ॥ ८३ ॥ अ। नृ। तः। ॥ ८४ ॥ अ। नृ। तः। ॥ ८५ ॥
 ॥ ८६ ॥ अ। नृ। तः। ॥ ८७ ॥ अ। नृ। तः। ॥ ८८ ॥ अ। नृ। तः। ॥ ८९ ॥ अ। नृ। तः। ॥ ९० ॥
 ॥ ९१ ॥ अ। नृ। तः। ॥ ९२ ॥ अ। नृ। तः। ॥ ९३ ॥ अ। नृ। तः। ॥ ९४ ॥ अ। नृ। तः। ॥ ९५ ॥
 ॥ ९६ ॥ अ। नृ। तः। ॥ ९७ ॥ अ। नृ। तः। ॥ ९८ ॥ अ। नृ। तः। ॥ ९९ ॥ अ। नृ। तः। ॥ १०० ॥

प. २

३७

486 DX - 50 MHZ 487

प. ८

२३

यशः। का। दोषा। यशः। उवसि। प्ररं। रं। वा। प्री। र्वा। वा। का। वते। वि। वान्। अश्वः। न। स्वे।
 ३। मे। अ। प्रे। म। त्वा। न। न। अ। स। सः। पी। व। नः। त। र्वा। र्वा। यः। अ। मे। अ। म। ता। दा। रा। न। उ।
 वः। ते। ३। ती। कु। व। ते। य। त। र्वा। म। न। सः। ना। यो। रा। रा। म। नः। वि। यो। य। न। ए। नः। अ। रः।
 प। रि। व। न। अ। प। र। योः। य। र्वा। वः। अ। मे। अ। धु। नः। अ। र्वा। यः। दे। वः। म। र्वा। सु। र। म। तः। व।
 ना। मः। प्री। ता। ३। व। अ। स। त। दो। वा। सा। य। वि। म। अ। र्वा। म। य। र्वा। वि। यतः। व। य। र्वा। ॥ १॥
 वि। ति। अ। वि। ति। वि। न। व। वि। वि। व। न। प। र्वा। दे। वा। की। ता। व। कृ। ना। व। म। र्वा। ना। ये। व। नः।
 सु। य। व। य। य। दे। वा। वि। ति। व। ना। र्वा। अ। र्वा। उ। य। म। क। वि। रा। रा। सुः। क। व। यः। अ। र्वा। य।
 नि। र्वा। म। तः। उ। य। म। अ। योः। अ। तः। दः। ३। र्वा। म। अ। मे। ए। ता। म। र्वा। प। र्वा। यः। प। र्वा।
 अ। र्वा। म। अ। यः। ए। र्वा। वः। अ। मे। वा। य। र्वा। सु। र। म। तिः। सु। त। र्वा। म। यो। वि। यतः। य। वि। म।
 न। न। न। रा। रा। म। ना। यो। य। यो। प। र्वा। व। ३। अ। र्वा। व। र्वा। व। र्वा। यः। अ। यो। दा। य। र्वा। व। यो। अ।
 मे। दा। र। यो। प। र्वा। यः। य। र्वा। यः। व। कृ। मा। त। न। तिः। व। र्वा। न। कृ। तः। अ। र्वा। तु। म। र्वा।
 म। तः। यो। मः। सु। र। यः। अ। र्वा। यो। म। नः। उ। य। यः। य। र्वा। वि। योः। अ। यो। म। दा।

तुं।

प. ८

२३

22

ध्ये। अरुणाः। नृत्तः। वी। चि। नृत्तः। वि। नृत्तः। अरुणाः। कदा। ते। उ। कथा। स्थ। थ। म। अ। नि। कदा। स। वं। ति। स।
 रणा। ग। जे। वे। कथा। च। स। व। व। उ। ता। य। त्। अ। ध्ये। कथा। च। वे। म। वं। स। कत्। नः। का। गः। कथा। म। ता।
 य। मी। दु। र्धे। प। धि। के। व। वः। कत्। अ। य। मी। कत्। त। ग। य। ॥ ॥ कत्। पि। ली। ता। सु। व। थ। य। नः। अ। ध्ये।
 कत्। वा। ता। य। प्र। तं। वं। स। र। तं। रं। य। प। वि। रं। ज्ज। ने। ना। स। त्ता। य। के। व। वः। कत्। अ। ध्ये। उ। डा। य। ज्ज। ट्ठे।
 कथा। म। न्ते। पु। सिं। दं। ता। य। पु। ली। कत्। उ। डा। य। सु। रं। मी। स। य। च। विः। रं। दे। कत्। वि। ली। वे। ठ। उ। रं।
 य। य। रं। तः। व। वः। कत्। अ। ध्ये। रा। नं। वे। वृ। द्धं। तौ। कथा। रा। थं। य। म। उ। तां। नृ। तां। कथा। सु। रे। व।
 द्धं। ते। पु। ली। मा। नः। प्र। ली। वृ। वः। म। दि। ते। य। तु। नां। य। स। थं। वः। अ। नृ। तं। वे। दः। वि। किं। का। न्दं। नृ। ते। न।
 नृत्तं। नि। रं। यं। तं। इ। नि। ज्ञा। मी। ज्ञा। मा। स। री। म। पु। रं। म। नृ। प। वं। अ। ध्ये। कत्। ली। यं। ती। पु। रं। ता।
 या। स्थि। ता। ए। य। अ। मं। ये। ता। प। यं। स। पी। पा। य। नृ। ते। न। चि। स। म। वं। वं। तः। दि। न्दं। अ। क्कः। उ। मा। न्दं।
 म। ध्ये। प। यं। स। पु। म्मे। न। म। ली। द्धं। म। नः। अ। वं। रं। वं। यः। रं। धां। वं। य। उ। क्कं। उ। उं। चि। प। रं। निं। उ।
 थं। ॥ ॥ नृ। ते। न। अ। डि। मे। वि। म। ली। नृ। सिं। दं। तं। स। म। ली। नृ। वं। ज्ज। वं। तं। गो। निः। नृ। नं। ज्ज। वं।
 प। वि। स। दं। नृ। उ। यं। रं। अ। विः। रं। वः। अ। नृ। वं। क्क। ने। अ। ध्ये। नृ। ते। न। दे। वीं। अ। म्मं। ताः। अ। म्मं।
 क्काः। अ। र्कः। रं। निः। अ। ध्ये। म। पुं। म। नृ। रं। निः। अ। ध्ये। वा। की। नि। स। मं। पु। वृ। द्धं। नृ। तां। नः। प्र। स। दं।

५२८

25

व. २०

२५

एतात्तु सिद्धयेते यः। नः। अमातिं संधरथात्तु। सुको। जीवातां पक्षि। अतर्त्ता। न। सु। कौ। उर्ध्व।
 तव। इति। विधा। नयि। अस्मत्तु। अविः। कृष्ण। देवा। नि। अमे। अर। स्थिता। तनु। नि। या। तनु। कुर्वा। ना
 मि। अमा। मि। प्र। मालि। नि। तनु। म। अर। सः। ते। अना। नि। सु। दमति। यव। स। यः। प्री। वते। वृक्ष। ता।
 गा। तु। पें। त। विरवा। नि। अस्मै। सु। ददते। नि। ना। यः। अमा। नि। अर। यः। वि। उरः। अना। यौ। त। सः।
 रुका। अमे। अस्तु। सु। दतमः। सु। ददते। मयः। ता। नि। ते। न। अविषा। यः। उर्ध्वः। पि। प्री। यति। अस्मै। अ
 उ। वि। उर। ता। विरवा। इन्। अस्मै। सु। ददते। अना। अस्मै। इ। अस्मै। अदी। मि। ते। सु। दमति। यो। यि।
 अदी। क। स। गे। ववाता। कन। तां। इत्यमीः। सु। दमरवाः। ता। सु। दमयां। मर्क। यो। म। अस्मै। इ। अस्मै।
 अता। ति। धान। योः। अना। सु। न। इन्। द्वा। बु। वि। ना। वरेन्। उ। र। ता। न। दो। पार। वरः। दी। दि। दवां
 र्त्ता। अना। अना। की। ले। तः। द्वा। सु। दमनर्यः। र। वे। म। अति। अमा। तस्मिन्। दवां। र्यः। कन। ना।
 यः। द्वा। सु। दमर्यः। सु। दमिन्। मय। अमे। उ। वरयाति। वर्यु। दमता। नयेन। तन्म। ता। ता। नव
 स्थि। तन्म। स। स। यः। ते। अति। धन। अना। नु। षड्। कु। को। वरु। ॥ ५॥ मरुः। उ। मा। मि। व
 यता। वरः। रतिः। तन्म। अ। पितुः। जो। तमा। अना। नु। य। य। ता। नः। अस्मै। वर्यः। वि। कि

व. २५

२५

[illegible]

२५

२५३

進

[illegible]

ਜੇਠੀ

८१०

२८

CSU-Springer Campus Rare Book and Manuscript Collection, Springer

उपनःसु तमागहि =
CSU-Springer

प. ३६

॥३६॥

आ। गृहि। बृहिः। सखा। यवः। मिः। सुतः। कुविता। दुः। अरुः। तुनावः। हृद्रा। इत्या। तिरः। समः। ल
 खः। अयः। इषिता। इतः। आऽवते। सोमऽपीतये। इह। सोमः। स्या। पीतये। लोमेः। इह। हवा
 मुहे। उक्ते। मिः। कुविता। आऽगमन्त। नितान। दधिष्णु। शतक्रतो इति शतऽक्रतो। जवः। ज
 जिनीवसे। इति वाजिनीऽवसे॥५॥ विद्म। हि। वाधनऽजयं। वाजेषु। दधुषं। कुवे। अध। ते। सु
 म्ना। इह। इमं। इडा। गोऽआशिरं। यवऽआशिरं। वानः। पिव। आऽगत्यं। दृषऽमिः। सुतः। तुभ्यां।
 इतः। इडा। स्वे। ओके। सोमः। वोद। मि। पीतये। एषः। ररन्तु। ते। हृदि। त्वाः। सुतस्य। पीतये। प्रत्तः।
 इह। इया। मुहे। इ। शिकासः। अवस्यः॥६॥ आ। याहि। अवीड्। उप। वंधुरेऽस्ताः। तव। इतः। अ
 नु। सुऽदिवः। सोमऽपेयः। प्रिया। सखाया। वि। मुव। उप। बहिः। त्वां। इमे। हव्यऽवाहः। हवन्ते। आ। या
 हि। पूर्वीः। अतिः। वर्षणीः। आ। अर्यः। आऽशिर्यः। उप। नु। हरिऽभ्यां। इमाः। हि। त्वा। सतयः। मे

मंसतः। इन्द्र। हवते। सख्यं। जुषाणाः। आ। नः। यज्ञं। नमः। रवर्धं। सुजोषाः। इन्द्र। देव। हरिः
 मिः। याद्वि। तूयं। अहं। हि। त्वा। मतिः। मिः। जोहवीमि। घृतः। प्रयाः। सुधुः। मादे। मधूनां। आ।
 वृ। त्वा। एता। वृषेणा। वहतः। हरी। इति। सखाया। सुधुरा। सुअंगा। धाना। वत। इन्द्र। सव
 नं। जुषाणाः। सखा। सख्युः। शृणुवत्। वदनानि। कुवित्। मा। गोपां। करसे। जनेस्य। कु
 त्। राजानं। मघः। वनः। ऋजीषिन्। कुवित्। मा। ऋषिं। पपिः। वांसं। सुतस्य। कुवित्। मे। व
 स्वः। अमृतस्य। शिक्षाः। आ। त्वा। वृहंतः। हरयः। युजानाः। अर्वाक्। इन्द्र। सुधुः। मादेः। वृहंतः।
 प्राये। द्विता। दिवः। ऋजंति। आताः। सुसंमृष्टासः। वृषभस्य। मूराः। इन्द्र। पिब। दृषधृतस्य।
 वृक्षः। आ। यंते। श्येनः। उशते। जषारं। यस्य। मदे। यवयसि। प्राकृष्टीः। यस्य। मदे। अ
 प। गोत्रा। वृषयः॥७॥ अयंते। अस्तु। हर्यः। सोमः। आ। हरिः। मिः। सुतः। जुषाणाः।

शुनहुवे ०२९

प. त.

॥२७॥

इन्द्र। हरिः। मिः। नः। आ। गृहि। आ। तिष्ठ। हरितं। रथं। हर्यन। उपसं। अर्वयः। सूर्यः। इयं
 न। अरो वयः। विद्वान्। विक्रितान्। हरिः। अश्वः। वृद्धे। इन्द्र। विश्वाः। अमि। श्रियः। द्यां।
 इन्द्रः। हरिः। धायसं। पृथिवी। हरिः। वर्षसं। आधारयत्। हरितोः। भूरि। भोजनं। ययोः।
 अंतः। हरिः। वरत्। ज्ञानः। हरितः। वृषा। विश्वा। आ। साति। रो वनं। हरिः। अश्वः। ह
 रितं। धत्ते। आयुधं। आ। वज्रं। बाहोः। हरिः। इन्द्रः। हर्यत। अर्जुनं। वज्रं। सुक्तेः। अमिः
 वृतं। अप। अवृणोत्। हरिः। मिः। अद्रिः। मिः। सुतं। उत्। गाः। हरिः। मिः। आजत॥ ८॥
 आ। मंड्रेः। इन्द्र। हरिः। मिः। याहि। मयूररोमः। मिः। मा। त्वा। के। चित्। नि। यमन।
 वि। न। पाशिनः। अति। धन्वः। इव। तान्। रुहे। वृत्रः। खादः। वलः। रुजः। पुरां। दुर्मः। अपा। अ
 जः। रक्षात। रथस्य। हर्योः। अमिः। स्वरे। इन्द्रः। दृक्। चित्। आ। रुजः। गंभीरान्। उदधी

॥२७॥

नऽइव। क्रतुं। पुष्यसि। गाः२इव। प्र। सुगोपाः। यवसं। धेनवः। यथा। द्रुदं। कुल्याः२
 इव। आशत। आ। नः। तुंजं। रुयिं। मरा। अंशं। न। प्रतिऽज्ञानते। वृक्षं। पुष्कं। फलं। अंकीऽ
 इवें। धूनुहि। इंदं। संऽपारणं। वसु। स्वयुः। इंदु। स्वराट्। असि। स्मत्तऽदिष्टिः। स्वय
 शः२तरः। सः। वृधानः। ओजसा। पुरुऽस्तुत। मव। नः। सुश्रवः२तमः॥९॥ युधस्य।
 ते। वृषस्य। स्वराजः। उग्रस्य। यूनः। रुक्मिरस्य। घृधेः। अजूर्यतः। वज्रिणः। वीर्य
 णि। इंदं। श्रुतस्य। महत्तः। महानि। महान। असि। महिषु। वस्त्रेभिः। धनऽस्थत।
 उग्र। सहमानः। अन्यान्। एकः। विश्वस्य। सुवनस्य। राजा। सः। योधय। व। क्षयय।
 व। जनान्। प्र। मात्राभिः। रिरिवे। रोचमानः। प्र। देवेभिः। विश्वतः। अप्रतिऽइतः।
 प्र। मुज्मना। दिवः। इंदं। पृथिव्याः। प्र। उरोः। महः। अंतरिक्षात्। कुजीषी। उरु। ग

प. त.

॥२८॥

मीरं। जनुषा। अमि। उग्रं। विश्वः। वसं। अवतं। मतीनां। इन्द्रं। सोमासः। प्रुदिवि। सु
 तासः। समुद्रं। न। स्रवतः। आ। विशंति। यं। सोमं। इन्द्र। पृथिवीद्याव। गर्भं। नामा
 ता। विभृतः। त्वया। तं। ते। हिन्वति। तं। उइति। ते। मृजंति। अध्वर्यवः। वृषभ। पातवै।
 कुंइति॥३॥ मरुत्वान्। इन्द्र। वृषभः। रणाय। पिव। सोमं। मनुः। स्वधं। मदाय। आ।
 सिन्धु। जठरे। मध्वः। कुर्मि। त्वं। राजा। असि। प्रुदिवः। सुतानां। सजोषाः। इन्द्र।
 सगणः। मरुतः। मिः। सोमं। पिव। वृत्रः। हा। मरु। विद्वान्। जहि। शत्रून्। अपामृधः।
 नुदस्व। अथ। अमयं। कणुहि। विश्वतः। नः। इत। क्रतुः। मिः। क्रतुः। पाहि।
 सोमं। इन्द्र। देवेभिः। सखिभिः। सुतं। नः। यान। आ। अमजः। मरुतः। ये। त्वा। अ॥२८॥
 नु। अहन्। वृत्रं। अदधुः। तुभ्यं। ओजः। ये। त्वा। अहिः। हत्ये। मघः। वन। अवर्द्धन।

ये।शांबुरे।हरिऽवुः।ये।गोऽईष्टे।ये।त्वा।नूनं।अनुऽमदंति।विप्राः।पिब।इंद्र।सोमं।
 सऽगोणः।मुरुतऽभिः।मुरुत्वंतं।वृषभं।वृधानं।अकवऽअरिं।दिव्यं।शासं।इंद्रं।वि
 श्वऽसहं।अवसे।नूतनाय।उग्रं।सुहः२दां।इह।तं।इवेम॥११॥सद्यः।ह।जातः।वृषभः।
 कुनीनः।प्रऽपतुं।आवत।अंधसः।सुतस्य।साधोः।पिब।प्रतिऽकर्म।यथा।ते।रसऽआ
 शिरः।प्रथमं।सोम्यस्य।यत्।जायथाः।तत्।अहः।अस्य।कामे।अंशोः।पीयूषं।अ
 पिबुः।गिरिऽरुहां।तं।ते।माता।परि।योषा।जनित्री।महः।पितुः।दमे।आ।असिंवत।
 अग्रे।उपुऽरुहाय।मातरं।अन्नी।ऐदृ।तिग्मं।अपृथ्यत्।असि।सोमं।ऊर्ध्वः।प्रऽयवय
 न।अवरत्त।गृहः।अन्यान्।महानि।वृक्के।पुरुधऽप्रतीकः।उग्रः।तुराषाद्।अभिभू
 तिऽओजाः।यथाऽवशं।तन्वं।वृक्के।एषः।त्वष्टारं।इंद्रः।जुनुषा।असिऽभूर्य।आऽमुष्य

शुनं हुवेम ०२

प. त.

॥२०॥

सोमं। अपिबत। नमूषु॥ १२॥ शंस। मुहां। इंदं। यस्मिन्। विश्वाः। आ। कृष्टयः। सोमः पाः। का
 मं। अच्यन्। यं। सुः क्रतुं। धिषणे इति। विश्वः तष्टं। घ्नन्। वृत्राणां। जुनयत देवाः। यं। नु। न
 किः। एतना सु। स्वः राजं। द्विता। तरेति। नः तमं। हरिः स्था। इतः तमः। सत्त्वः मिः। यः। हः।
 श्रेष्ठः। द्युः ज्ञयाः। अमिनात्। आयुः। दस्योः। सहः वा। एतः सु। तरणिः। न। अवी। विः अ
 नाशिः। रोदसी इति। मिहनाः वान। मगः। न। कुरे। हव्यः। मतीनां। पिता इव। वारुः। सुः हवः।
 वयः। रथाः। धृत्ता। दिवः। रजसः। दृष्टः। कृध्वः। रथः। न। वायुः। वसुः मिः। नियुत्वा न। क्षपां। व
 स्ता। जनिता। सूर्यस्य। विः मन्ता। मारगं। धिषणा इव। वाजं॥ १३॥ इंदं। स्वाहा। पिबतु
 यस्य। सोमः। आः गत्ये। तुम्रः। वृषभः। मरुत्वा न। आ। उरुः व्यवाः। दृणतां। एमिः। अनेः।
 आ। अस्य। हविः। तन्वः। कामं। क्रुध्याः। आ। ते। सपर्य इति। जुवसे। युनज्मि। ययोः। अनु।

॥२०॥

शुनं हुवेम ०३

प्रऽदिवः । श्रुतिं । आवः । इह । वा । धेयुः । हरयः । सुऽशिप्र । पिब । तु । अस्या । सुऽसुतस्य । वारो ।
 गोभिः । मिमिक्षं । दधिरे । सुऽपारं । इन्द्रं । ज्येष्ठाया । धार्यसे । गुणानाः । मुद्वानः । सोमं ।
 पृषिऽवान् । ऋजी । पिन् । सं । अस्मभ्यं । पुरुधा । गाः । इषण्यन् । ३५ । चर्वणिऽधृतं । सु
 घऽवानं । उक्थ्यं । इन्द्रं । गिरः । बृहतीः । अग्नि । अनुषत । वृधानं । पुरुऽद्वतं । सुवृत्तिऽभिः ।
 अमर्त्यं । जरमाणं । दिवेऽदिव । शतऽकृतं । अण्वं । शाकिनं । नरं । गिरः । मे । इन्द्रं । उषा
 यंति । विश्वतः । वाजुऽसानि । पूः । रमिदं । तूष्णि । अपऽतुरं । धामुऽसानं । अग्निऽसानं । स्वः ।
 विदं । आऽकरे । वसोः । जरिता । पुनस्यते । अनेहसः । स्तुभः । इन्द्रः । दुवस्यति । विवस्व
 तः । सदेने । आ । हि । पिप्रिये । सत्राऽसहं । अग्निमग्निऽहनं । स्तुहि । नृणां । कुं । इति ।
 वा । नऽतमं । गीः । रमिः । उक्थ्ये । अग्नि । प्र । वीरं । अर्चत । सुऽबाधः । सं । सहसे । पुरुऽ

सं० तृ०

॥३०॥

मायः। जिहृति। नमः। अस्य। प्रुदिवः। एकः। ईशे। पूर्वः। अस्य। निः२ सिधः। म
 त्येषु। पुरु। वसूनि। पृथिवी। विमर्ति। इंद्राय। द्यावः। ओषधीः। उत। आपः। इयि।
 रसंति। जीरयः। वनोनि। ॥३५॥ तुभ्यं। ब्रह्मणि। गिरः। इंद्र। तुभ्यं। सुत्रा। दधि
 रे। हरिः। वः। जुषस्व। बोधि। आपिः। अवसः। नूतनस्य। सखे। वसो इति। इ
 रिहभ्यः। वयः। धाः। इंद्र। मरुतः। इह। पाहि। सोमं। यथा। शार्याते। अपि
 वः। सुतस्य। तव। प्रदीती। तव। भूर। शर्मन्। आ। विवासंति। कुवयः। सु
 यज्ञाः। सः। वावशानः। इह। पाहि। सोमं। मरुतः। मिः। इंद्र। सखिः। मिः। सुतं
 नः। ज्ञातं। यत्। त्वा। परि। देवाः। अभूषन्। मुहे। मरय। पुरु। हुत। विभे। अ
 पः। तूर्य। मरुतः। आपिः। एषः। अर्मदन। इंद्र। अनु। दातिः। वाराः। तेभिः। साकं।

॥३०॥

पिवत्। वृत्रः स्वादः। सुतं। सोमं। दाश्रुषः। स्वे। सधः स्थे। इदं। हि। अनु। ओजसा। सुतं।
 राधानां। पते। पिवत्। तु। अस्य। गिर्वणः॥ यः। ते। अनु। स्वधां। असत्। सुते। नि। य
 छ। तुन्वं। सः। त्वा। ममत्तु। सोम्यं। प्र। ते। अश्वो। तु। कुस्योः। प्र। इन्द्र। ब्रह्मणा। शिरः।
 प्र। वाहू इति। श्रूरा। राधसि॥ १६॥ धानाऽर्वतं। करंभिणं। अपूपऽर्वतं। उक्थिनं। इन्द्र।
 प्रातः। जुषस्वानः। पुरोकाशं। पुनृत्यं। जुषस्व। इन्द्र। आ। गुरस्व। वा। तुभ्यं। हव्यानि। सि
 स्रते। पुरोकाशं। वा। नः। धसः। जोषयासे। गिरः। वा। नः। वधूयुः२ इव। योषणां। पु
 रोकाशं। सनऽश्रुत। प्रातः। रसावे। जुषस्व। नः। इन्द्र। क्रतुः। हि। ते। बृहच्च। माध्यंदिनं
 स्य। सवन्स्य। धानाः। पुरोकाशं। इन्द्र। रुघ्न। इह। चारुं। प्रायत्। स्तोता। जुरिता। तू
 णिऽअर्थः। वृषऽयमाणः। उप। गीः२भिः। इह॥ १७॥ तृतीये। धानाः। सवने। पुरुऽ

नृ

प. त.

॥३३॥

त्तुत। पुरोकाशं। आऽङ्कतं। समुहसु। नु। ऋषुऽमंती। वाजऽवंतं। त्वा। कुवे। प्रयस्वंतः।
 उयं। शिखेमु। धीतिऽमिः। पूषणऽवते। ते। वृकुम्। करणं। हरिऽवते। हरिऽअश्वाय।
 धानाः। अपूर्णं। अदि। सऽगणः। मरुतऽमिः। सोमं। पिब। वृत्रऽहा। शूर। विद्वान्।
 प्रति। धानाः। सरत्। तूयं। असेमो। पुरोकाशं। वीरऽतमाय। नृणां। दिवेऽदिवे। सुऽ
 दृशीः। इन्द्र। तुभ्यं। वर्द्धेत्। त्वा। सोमऽपेयाय। धृष्टो इति॥३८॥ इन्द्रा पर्वता। बृहता
 रथेन। वामीः। इषः। आ। बृहत्। सुऽवीराः। वीतं। हव्यानि। अध्वरेषु। देवा। वर्द्धेथां।
 गीः। रमिः। इक्ष्वा। मर्दता। तिष्ठ। सु। वं। मघऽवृन्। मा। परा। गाः। सोमस्य। नु। त्वा।
 सुऽसुतस्य। युक्षि। पितुः। न। पुत्रः। सिर्वं। आ। रणे। ते। इन्द्र। स्वादिष्ठया। गिरा।
 शचीऽवः। शंसाव। अध्वर्यो इति। प्रतिमि। गृणीहि। इन्द्राय। वाहः। कृणुवाव। जुष्टं।

॥३३॥

आ । इदं । बर्हिः । यजमानस्य । सीदु । अथ । वा । षूत । उक्थं । इंद्रीय । शास्तं । ज्ञाया । इ
 त । अस्तं । मघः । वृन् । सा । इत् । कुं इति । यो निः । तत् । इत् । त्वा । युक्ताः । हरयः । वहंतु । य
 दा । कुदा । वा । सुनवाम । सोमं । अग्निः । त्वा । इत्तः । धुन्वाति । अछे । परा । याहि । मघः । वृन् ।
 आ । वा । याहि । इंद्र । भ्रातः । उषयत्र । ते । अर्थे । यत्र । रथस्य । बृहतः । निः । धाने । विः । मो
 र्वनं । वाजिनः । रासं । मस्य ॥ १९ ॥ अपाः । सोमं । अस्तं । इंद्र । प्रा । याहि । कल्याणीः । ज्ञाया ।
 सुः । रणं । गृहे । ते । दक्षिणाः । वत् । इमे । षो जाः । अंगिरसः । विः । रूपाः । दिवः । पुत्रासः ।
 असुरस्य । वीराः । विश्वामित्राय । ददतः । मघा नि । सहस्रः । सुवे । प्रा । तिरंते । आयुः । रू
 पं । रूपां । मघः । वा । बोधवीति । मायाः । कृण्वानः । तुन्वा । परि । स्वां । त्रिः । यत् । दिवः । परि ।
 मुहुर्ते । आ । अगात् । स्वेः । मंत्रैः । अनृतुः । पाः । क्रुतः । वा । महान् । ऋषिः । देवः । जाः । दे

प. तं

॥३२॥

वऽजृतः। अस्तभ्नात्। सिंधुं। अर्णवं। नृऽवक्षाः। विश्वामित्रः। यत्। अवहत्। सुऽदासं। अप्रि
 यायत्। कुशिकेभिः। इंद्रः। हंसाः। रईवा। कृणुयु। श्लोकं। अर्द्धिऽभिः। मर्दतः। गीः। रभिः। अध्व
 रे। सुते। सवा। देवेभिः। विष्ठाः। क्रुषयुः। नृऽवक्षसः। वि। पिबुध्वं। कुशिकाः। सोम्यं। मधु। ॥३॥
 उप। प्रा। इत्। कुशिकाः। वेतयध्वं। अश्वं। राये। प्रा। मुंवत्। सुऽदासः। राजा। वृत्रं। जंघनुत्। प्रा
 क। अपाक। उदक। अथ। युजाते। वरे। आ। वृष्टिऽव्याः। यः। इमेइति। रोदसीइति। उमेइति।
 अहं। इंद्रं। अतुस्तवं। विश्वामित्रस्य। रसति। ब्रह्मा। इंद्रं। पारतं। जनं। विश्वामित्राः। अरास
 त। ब्रह्मा। इंद्राय। वज्रिणे। करत। इत्। नुः। सुऽसार्धसः। किं। ते। कृण्वंति। कीर्कटेषु। गार्वः।
 ना। आऽशिरी। इंद्रे। ना। तपंति। धर्मं। आ। नुः। मरु। प्रऽमगंदस्य। वेदः। नेवाऽशाखं। मधुऽवन। ॥३॥
 रंधयु। नुः। सुसर्परीः। अमेतिं। वार्धमाना। बृहत्। मिमायु। जमदग्निऽदत्ता। आ। सूर्यस्य।

दुहिता। ततानु। श्रवः। देवेषु। अमृतं। अजुर्यं॥२१॥ ससर्परीः। अपरत। तूर्यं। एष्यः। अधि।
 श्रवः। पार्कज्यासु। कृष्टिषु। सा। पृथ्या। नव्यं। आयुः। दधाना। यां। मे। पुलस्तिः। जम
 दग्नयः। दुदुः। स्थिरो। गावो। श्रवतां। वीळुः। अक्षः। मा। ईषा। वि। वहि। मा। युगं। वि। शशिः।
 इंद्रः। पातुत्ये। इति। ददतां। शरीतोः। अरिष्टनेमे। अमि। नः। सवस्व। बलं। धेहि। तनू
 अ। षु। नः। बलं। इंद्र। नकुतः। सु। नः। बलं। तोकाय। तनयाय। जीवसे। तं। हि। बलुः। दाः। असि।
 अमि। व्ययस्व। खदिरस्य। सारं। ओजः। धेहि। स्पंदने। शिंशपायां। अक्षः। वीळो इति। वी
 लितु। वीळयस्व। मा। यामात। अस्मात। अव। जीहिपः। नः। अयं। अस्मान्। वनस्पतिः।
 मा। वृ। हाः। मा। वृ। रिरिषत। स्वस्ति। आ। गृहेभ्यः। आ। अवः। से। आ। विः। मोर्वनात्॥२२॥
 इंद्र। कृतिः। मिः। वृ। ला। मिः। नः। अद्य। यातः। श्रेष्ठामिः। मघः। वन। शूर। जिन्व। यः। नः।

प-त-

॥३३॥

द्वेष्टि। अधरः। सः। पृथुः। यः। कुं इति। द्विष्मः। तं। कुं इति। प्राणः। जहातु। पुरश्च। वित। वि। तप
 ति। शिबुलं। वित। वि। वृश्चति। उखा। वित। इन्द्र। येषंती। प्रयस्ता। फेनं। अस्यति। न। सार्च
 कस्य। विकिते। जनासुः। लोधां। नयंति। यष्मामन्यमानाः। न। अवाजिनं। वाजिनं। हासयं
 ति। न। गर्दिषां। पुरः। अश्वात्। नयंति। इमे। इन्द्र। मरुतस्य। पुत्राः। अपुःपितृ। विकितुः। न। प्रय
 त्वां। हिन्वति। अश्वं। अरणं। न। नित्यं। ज्याऽवाजं। परि। नयति। आजो॥३३॥ ॥ अनुवाकः ॥
 इमं। मुहे। विदध्याय। श्रूषं। शश्वत्। कृत्वा। ईड्याय। प्र। जभुः। शृणोतु। शृणोतु। अग्निः।
 दिव्येः। अजस्रः। महि। मुहे। दिवे। अर्वा। पृथिव्ये। कामः। मे। इच्छन्। वरति। प्र। जानन्। ययोः।
 हास्तोमे। विदधेषु। देवाः। सपर्यवः। मादयते। सर्वा। आयोः। युवोः। क्रतुं। रोदसी इति। सत्यं॥३३॥
 अस्तु। मुहे। सु। नः। सुविताय। प्र। भूतं। इदं। दिवे। नमः। अग्ने। पृथिव्ये। सपर्यामि। प्रयसा।

नोदमेपिरनो कैः=४

यामि। रत्न। उतो इति। हि। वां। पूर्वाः। आऽवि विदे। ऋतवरी इत्युतऽवरी। रोदसी इति। सत्यऽ
 वाचः। नरः। वित्। वां। संऽइथे। शूरऽसातो। ववंदिरे। पृथिवि। वेविदानाः। कः। अद्धा। वेद। कः। इ
 ह। प्रा। वोचत। देवाना। अल्ल। पृथ्या। का। सं। एति। ददंशे। एषां। अवुमा। सदां सि। परेषु। या। गुह्ये
 षु। वृतेषु॥ २४॥ कविः। नृऽवक्षः। अमि। सी। अवष्ट। ऋतस्य। योना। विधृति इति विधृति। मदं
 ती इति। नाना। वक्रते इति। सदनं। यथा। वेः। समानेन। क्रतुना। संविदाने इति संविदाने। स
 मान्या। वियुत इति वियुति। दूरे अंते इति दूरेऽअंते। ध्रुवे। पदे। तखुतुः। जागरूके इति। उत। स्व
 सारा। युवती इति। शर्वती इति। आत। कुं इति। ब्रुवाते इति। मिथुनानि। नाम। विश्वा। इत। एते
 इति। जनिम। सं। विविक्तः। महः। देवाना। विभ्रता इति। न। व्यथेते इति। एजत। ध्रुवं। पत्यते। विश्वं।
 एकं। चरत। पतत्रि। विषुणं। वि। ज्ञातं। सना। पुराणं। अधि। एमि। आरात। महः। पितुः। जनिनु।

प. त.

॥३४॥

नामि। तत्। नुः। देवासः। यत्र। पुनितारः। एवैः। कुरो। पृथि। विऽउति। तस्युः। अंतरिति। इमं। स्तोमं।
 रोदसीति। प्र। ब्रवीमि। क्रुदुदराः। शृणुवन्। अग्निऽद्विक्काः। मित्रः। संऽराजः। वरुणः। युवानः।
 आदित्यासः। कुवयः। पृथुधानाः॥२५॥ हिरण्यपाणिः। सुविता। सुऽजिह्वः। त्रिः। आ। दिवः। वि
 दधे। पत्यमानः। देवेषु। वा। सुवितरिति। श्लोकं। अश्वेः। आत्। अस्मभ्यै। आ। सुव। सर्वऽतति।
 सुऽकृत। सुऽपाणिः। स्वऽवान्। क्रुतऽवा। देवः। त्वष्टा। अवसे। तानि। नुः। धात्। पूषणऽवंतः। क्रुस
 वः। मादयुध्वं। ऊर्ध्वऽग्रावाणः। अध्वरं। अतष्ट। विद्युतऽरेथाः। मरुतः। क्रुष्टिऽमंतः। दिवः।
 मर्याः। क्रुतऽजाताः। अयासः। सरस्वती। शृणुवन्। यज्ञियासः। धातं। रुयिं। सहऽवीरं। तु
 रासः। विष्णुं। स्तोमासः। पुरुऽदुस्मं। अर्काः। मरुस्यऽद्वाकाणिः। यामनि। गमुन्। उरुऽकृ ॥३४॥
 मः। ककुहः। यस्य। पूर्वः। न। मर्द्धति। युवतयः। जनित्रीः। इंदः। विश्वेः। वीर्यैः। पत्यमानः।

उमेरति। आ। पञ्चो। रोदसीदति। महिः। त्वा। पुरं। दुरः। वृत्रः। हा। धृष्टुः। सेनः। सं। गृभ्यः। नः। आ।
 मरः। भूरि। पृथ्वः। रदः। नासत्या। मे। पितरः। बंधुः। पृच्छा। सः। ज्ञात्यः। अश्विनोः। वारु। ना
 मः। युवं। हि। स्थः। रुचिः। दो। नः। रथीणां। दात्रं। रसेथेदति। अर्कवेः। अदः। ब्रा। महत्। तत्।
 वः। कव्युः। वारु। नाम। यत्। हा। देवः। मवय। विश्वे। इंद्रे। सखः। क्रुमुः। मिः। पुरुः। दूतः।
 प्रियेः। इमां। धिर्यः। सातये। तस्यत। नः। अर्यमा। नः। अदितिः। युजियासः। नः। युयोता
 नः। अनुपत्यानि। गंतोः। प्रजाः। वानः। नः। पृथुः। मानः। अस्तु। गातुः। देवानां। दूतः। पुरु
 धः। प्रः। सूतः। अनागानः। नः। वोवतु। सर्वः। ताता। शृणोतु। नः। पृथिवी। द्यौः। उत। आपः।
 सूर्यः। नक्षत्रैः। उरु। अंतरिक्षं। शृण्वंतु। नः। वर्षणः। पर्वतासः। ध्रुवः। सेमासः। इक्ष्वाकुः।
 मर्दतः। आदित्येः। नः। अदितिः। शृणोतु। यच्छंतु। नः। मरुतः। शर्म। मृदं। सदा। सुंगः। रि

अदब्धा निवर्त
 नस्य प्रतापि

प.तः

॥३५॥

तुऽमाना अस्तु पथाः॥ मध्वा देवाः॥ ओषधीः॥ सं पिष्टुक्त॥ सर्गः॥ मे॥ अग्ने॥ सख्ये॥ ना॥
 मृध्याः॥ उता रायः॥ अश्याः॥ सदनं॥ पुरुऽक्षोः॥ स्वर्दस्व॥ हव्या॥ सं॥ इषः॥ दिदीहि॥ अस्मद्वा
 क॥ सं॥ भिमीहि॥ अवीसि॥ विश्वान्॥ अग्ने॥ एत॥ सु॥ तान्॥ जे॥ वि॥ शत्रून्॥ अहा॥ विश्वा॥ सु॥
 मनाः॥ दीदिहि॥ नुः॥ ॥ २० ॥ उषसः॥ पूर्वाः॥ अधो॥ यत्॥ वि॥ रु॥ षुः॥ महत्॥ वि॥ ज॥ जे॥ अ॥ क्षरं॥
 पु॥ दे॥ गेः॥ वृता॥ देवानां॥ उप॥ नु॥ प्र॥ षू॥ षन्॥ महत्॥ देवानां॥ अ॥ सुर॥ त्वं॥ एकं॥ मो॥ इति॥ सु॥
 न॥ अ॥ त्र॥ जु॥ ह॥ रं॥ त॥ देवाः॥ मा॥ पूर्वे॥ अग्ने॥ पितरः॥ पद॥ ज्ञाः॥ पुरा॥ ण्योः॥ स॥ च॥ नोः॥ के॥ तुः॥ अ॥
 तः॥ ॥ वि॥ मे॥ पुरु॥ त्रा॥ प॥ त॥ य॥ ति॥ का॥ माः॥ श॥ मि॥ अ॥ ह्वा॥ दी॥ द्यो॥ पू॥ र्वा॥ णि॥ सं॥ इ॥ द्दे॥ अ॥ ग्ने॥
 कृ॥ तं॥ इ॥ ता॥ व॥ दे॥ मु॥ ॥ स॥ मा॥ नः॥ रा॥ ज॥ त॥ वि॥ भ॥ रतः॥ पुरु॥ त्रा॥ श॥ ये॥ श॥ या॥ सु॥ प्र॥ थु॥ तः॥ व॥ नः॥ अ॥
 नु॥ अ॥ न्या॥ व॥ त्सं॥ म॥ र॥ ति॥ क्षे॥ ति॥ मा॥ ता॥ ॥ आ॥ क्षि॥ त्वा॥ पू॥ र्व॥ सु॥ अ॥ प॥ राः॥ अ॥ नू॥ रु॥ त॥ सु॥ द्यः॥

॥३५॥

ज्ञातासु। तरुणीषु। अंतरिति। अंतःखरीः। सुवते। अग्रः वीताः। ॥ १॥ शयुः। पुरस्तात्।
 अधः। नु। द्विः। माता। अवंधनः। वरति। वत्सः। एकः। मित्रस्य। ता। वरुणस्य। वृत्तानि। ॥ द्विः। मा
 ता। होता। विदधेषु। सुः। राट्। अनु। अग्रः। वरति। सेति। बुध्नः। प्र। रण्यानि। रण्युः। वाचः। मरु
 ते। ॥ मूरस्यः। इव। युध्यतः। अंतुमस्य। प्रतीचीनः। दृष्टो। विश्वं। आः। यत्। अंतः। मृतिः। वर
 ति। निः। सिध्दः। गोः। ॥ नि। वेवेति। पलितः। दूतः। आसु। अंतः। महान्। वरति। रोचनेन। वर्ष
 षि। बिभ्रत। अमि। नुः। वि। वृष्टे। ॥ विस्रुः। गोपाः। पुरमं। पाति। पार्थः। प्रिया। धार्मानि। अमृ
 ता। दधानः। अग्निः। ता। विश्वं। भुवनानि। वेदु। ॥ २॥ नाना। वृकृते इति। यम्या। वर्षषित
 योः। अन्यत्। रोचते। कुल्लं। अन्यत्। श्यावी। वा। यत्। अरुषी। वा। स्वसीरो। ॥ माता। वा। यत्र। दु
 हिता। वा। धेनू इति। सबडुघे इति। सबुः। दुघे। धापयेते इति। समीची इति। सं। इवी। क्रुतस्य। ते इ

प. त. ति। स दसि। ईळे। अंतः॥०॥ अन्यस्याः। वत्सं। रिहती। मिमय। कया। भुवा। नि। दधे। धेनुः। ऊ
 ॥३६॥ धः। क्रुतस्य। सा। पर्यसा। अपिन्वत। इका।०॥ पद्या। वस्ते। पुरुः। रूपा। वपूंषि। ऊर्ध्वी। तस्त्रो।
 त्रिः। अर्वि। रे रिहाणा। क्रुतस्य। सद्म। वि। वरासि। विद्वान्।०॥ पुदे इवेति पुदेः इव। निहिते इति
 निः। हिति। दुस्मे। अंतरिति। तयोः। अन्यत। गुह्यं। आविः। अन्यत। सध्रीवीना। पथ्या। सा।
 विष्वी।०॥३०॥ आ। धेनवः। धनयन्ता। अशिम्बीः। सबुः। रदुघाः। शशयाः। अग्रः। दुग्धाः।
 नयाः। रनयाः। युवतयः। सर्वतीः।०॥ यत। अन्यासु। वृषभः। शेरवीति। सः। अन्यस्मिन्।
 यूथे। नि। दधाति। रेतः। सः। हि। क्षपाः। वान्। सः। मर्गः। सः। राजा।०॥ वीरस्य। नु। सुः। अ
 ष्यै। जनासुः। प्रानु। वो वाम। विदुः। अस्थ। देवाः। षोक्ता। युक्ताः। पंचः। पंच। आ। वहति।०॥३६॥
 देवः। त्वष्टा। सविता। विश्वः। रूपः। पुपोष। प्रुः। ज्ञाः। पुरुधा। ज्ञान। इमा। व। विश्वा। भुवना

नि। अस्य। मही इति। सां। ऐरुत। वृम्वा। समीची इति सं। ईवी। उमे इति। ते इति। अस्य। व
 सुना। न्यृष्टे इति निः। ऋष्टे। शृण्वे। वीरः। विंदमानः। वसूनि। इमां। वानुः। पृथिवी। वि
 श्वधायाः। उप। ह्येति। निः। रसिध्वरीः। ते। वाते। इन्द्र। पृथिवी। विमर्त्ति। सखायः। ते। वा
 मुः। भाजः। स्याम। ॥ ३३ ॥ श्री॥ इति तृतीयाष्टके तृतीयोऽध्यायः॥ ॥ हरिः ओ॥ ॥
 ना। ता। मिनुंति। मायिनः। नाधीराः। वृता। देवानां। प्रथुमा। ध्रुवाणि। ना। रोदसी इति। अ
 दुहा। वेद्याभिः। ना। पर्वताः। निः। नमे। तस्त्रिः। वांसः। षट्। भारान्। एकः। अवरन। विम
 र्त्ति। क्रतुं। वर्षिष्ठं। उप। गावः। आ। अगुः। तिस्रः। महीः। उपराः। तसुतुः। अत्याः। गुहा।
 दे इति। निहिते इति निः। हिते। दर्शि। एका। त्रिः। पाज्ञस्यः। वृषभः। विश्वः। रूपः। उत। त्रिः। उ
 धा। पुरुधः। प्रजाः। वान्। त्रिः। अनीकः। पत्यते। माहिनः। वान्। सः। रेतः। रथाः। वृषभः।

प. तृ.

॥३७॥

शश्वतीनां। अश्वके। आसुं। पदऽवीः। अबोधि। आदित्यानां। अद्भे। वारुं। नामं। आपः।
 वित्। अस्मे। अरमंतादेवीः। पृथक्। व्रजतीः। परि। सुं। अवृजन्। त्री। सधऽस्था। सिं
 धवः। त्रिः। कुवीनां। उत। त्रिऽमाता। विदथेषु। सुं। राट्। कुतऽवरीः। योषणाः। तिस्रः।
 अप्याः। त्रिः। आ। दिवः। विदथे। पत्यमानाः। त्रिः। आ। दिवः। सवितुः। वार्याणि। दिवे
 दिवे। आ। सुव। त्रिः। नः। अद्भः। त्रिऽधातु। रायः। आ। सुव। वसूनि। भग। नातः। धिष
 णे। सातये। धाः। सुविता। सोसवीति। आपः। वित्। अस्य। रोदसीरति। वित्।
 उर्वीरति। रत्न। मिक्षन्ता। सवितुः। सुवाय। त्रिः। उतऽतमा। दुःश्नशा। रोवुनानि। त्रयः।
 राजन्ति। असुरस्य। वीराः। कुतऽवीनः। इषिराः। दुःश्नमासः। संतु। देवाः॥३॥ प्र। ॥३७॥
 मे। विविक्कान। अविदत्। मनीषां। धेनुं। वर्तती। प्रऽयुतां। अगोपां। सुद्यः। वित्। या।

त्रिरादिवः ०=४

राजीनामित्रावरुणासुपाणी ०४ त्रिरादिवोविदथे २

दुहुहे। भूरि। धासेः। इन्द्रः। तत्। अग्निः। पुनितारः। अस्याः। इन्द्रः। सु। पूषा। वर्षणा। सु
 हस्ता। दिवः। न। प्रीताः। शशयं। दुहुदे। विश्वे। यत्। अस्यां। राण्यंत। देवाः। प्र। वः। अत्र।
 वसवः। सुम्न। अस्यां। याः। जामयः। वल्ले। इच्छंति। शक्तिं। नमस्यंतीः। जानुते। गर्भं।
 अस्मिन्। अर्ध। पुत्रं। धेनवः। वाव शानाः। महः। वरति। विभ्रतं। वर्षूषि। अर्ध। विव
 किन्। रोदसी इति। सुमेवे इति सुः मेवे। ग्राव्याः। युजानः। अध्वरे। मनीषा। इमाः। उ
 इति। ते। मनवे। भूरिऽवाराः। ऊर्ध्वाः। स्रवंति। दर्शताः। यजत्राः। या। ते। जिह्वा। मधुः
 मती। सुः मेधाः। अग्ने। देवेषु। उच्यते। उरुची। तया। इह। विश्वान्। अर्कसे। यजत्रा
 न्। आ। सादय। प्रायय। च। मधूनि। या। ते। अग्ने। पर्वतस्यऽ इवा धारा। असंश्रं
 ती। पीपयत्। देव। चित्रा। तां। अस्मभ्यं। प्रः मतिं। ज्ञातुऽ वेदः। वसो इति। रास्व। सुः

सुवृणा रथेन दत्तं विमंशुं शुभं लोकं मेदेः ॥ विमंशुं न दत्तं ॥ १०४

प. त.

॥३८॥

मतिं। विश्वः। जंन्यां॥२॥ धेनुः। प्रत्नस्य। काम्यं। दुहन्ना। अंतरिति। पुत्रः। वरति। दाक्षिणा
 याः। आ। द्योतनिं। वहति। सुम्नः। यामा। दुषसः। स्तोमः। अश्विनौ। अजीगरिति। सुः। यु
 क्। वहंति। प्रति। वां। क्रुतेन। ऊर्ध्वाः। सवति। पितराः। इव। मेधाः। जरेथां। अस्मत्। वि।
 पुणेः। मुनीषां। युवोः। अवः। वक्रमा। आ। यातं। अर्वाक। सुयुक्तः। मिः। अश्वेः। नि। आ। सु
 न्येथां। आ। गतं। कत। वित। एवैः। विश्वे। जनासः। अश्विना। हवते। इमा। हि। वां। गोः।
 ऋजीका। मधूनि। प्र। मित्रासः। न। ददुः। उस्त्रः। अये। तिरः। पुरु। वित। अश्विना। रजां
 सि। आंगूषः। वां। मघः। वाना। जनेषु। ॥३॥ पुराणं। ओकः। सख्यं। शिवं। वां। युवोः। न
 रा। इविणं। जुह्वाव्या। पुनरिति। रुण्वानाः। सख्या। शिवानि। मध्वा। मदेम। सह। नु। ॥३८॥
 समानाः। अश्विना। वायुना। युव। सुदृष्टा। नियुतः। मिः। न। सुः। जोषसा। युवाना।

रहयांतं पुत्रिभिर्दत्तं यानेदं विमंशुं नि ययोपपूतो ॥ ३

नासत्या।तिरः२अङ्ग्यं।जुषाणा।सोमं।पिवतं।अस्विधा।सुदानूइति सुदानू।
 अश्विना।परि।वां।इषः।पुरुवीः।इयुः।ग्रीः२मिः।यतमानाः।अमृध्राः।रथः।हृ।
 वां।कुतःजाः।अद्विजतः।परि।द्यावापृथिवीइति।याति।सद्यः।अश्विना।मृ
 धुसुतःतमः।युवाकुः।सोमः।तं।पातं।आ।गतं।इरोणे।७।भूरि।वर्षः।करिक्
 तः।सुतःवतः।निः२कृतं।आःगमिष्ठः।४॥मित्रः।जनान्।यातयति।ब्रुवाणः।
 मित्रः।दाधार।पृथिवी।उत।द्यां।मित्रः।कृष्टीः।अनिःमिषा।अभि।वृष्ट।मित्रा
 र्य।हव्यं।घृतःवतः।जुहोत।प्र।सः।मित्र।मर्तः।अस्तु।प्रयस्वान्।यः।ते।आदित्य।
 शिष्येति।व्रतेन।न।हन्यते।न।जीयते।त्वाःऊतः।न।एनं।अंहः।अश्वोति।अंति
 तः।न।दूरात्।अनमीवासः।इळया।मदतः।मितःश्वः।वरिमन्।आ।पृथिव्याः।

रथो ह्यसि - ५

प. त.

॥३९॥

आदित्यस्य। वृत्तं। उपऽस्यंतः। वयं। मित्रस्य। सुऽमुतो। स्याम। अयं। मित्रः। नमस्यः।
 सुऽशेवः। राजा। सुऽसुत्रः। अजनिष्ट। वेधाः। महान। आदित्यः। नमसा। उपऽसद्यः।
 यातयतऽजनः। गृणते। सुऽशेवः। तस्मै। एतत्। पन्यऽतमाया। जुष्टं। अग्ने। मित्राय।
 हविः। आ। जुहोत॥५॥ मित्रस्य। वर्षणिऽधृतः। अर्वः। देवस्य। सानुसि। द्युम्नं। वित्र
 श्रवः। तमं। अमि। यः। मुहिना। दिवा। मित्रः। वभूव। सुऽप्रथाः। अमि। श्रवः। मिः। पृ
 थिवी। मित्राय। पंच। येमिरे। जनाः। अमिष्टिऽशवसे। सः। देवानां। विश्वानां। विष्म
 न्नि। मित्रः। देवेषु। आयुषु। जनाया। वृक्तऽवहिषे। इषः। इष्टऽव्रताः। अकुरित्यकः॥६॥
 इहऽइह। वः। मनसा। बंधुता। नरः। कुशितः। जग्मुः। अमि। तानि। वेदसा। यामिः।
 मायामिः। प्रतिजुतिऽवर्षसः। सोधन्वनाः। युक्षियां। भागं। आनुश। यामिः। श

॥३९॥

वीमिः। वृमुसान्। अर्षिशत। यया। ध्रिया। गां। अरिणीत। वर्मणः। येन। हरीइति। मन
 सा। निः२ अतस्तत। तेन। देवः। त्वं। क्रुमवः। सं। आनुश। इंदस्य। सुख्यं। क्रुमवः। सं। आनुशुः।
 मनोः। नपातः। अपसः। दधुन्विरे। सोधुन्वनासः। अमृतः। त्वं। आ। इरिरे। विष्टी। शमीमिः।
 सुःकृतः। सुःकृत्यया। इंदेण। याथ। सुःरथ्य। सुते। सर्वा। अथोइति। वशानां। भवथा। स
 ह। श्रिया। न। वः। प्रतिः। मे। सुःकृतानि। वाघतः। सोधुन्वनाः। क्रुमवः। वीर्याणि। वृ। इंद।
 क्रुमुःमिः। वाजवत्ः। मिः। संः। इक्षितं। सुतं। सोमं। आ। वृषस्व। गमस्वयोः। ध्रिया। इषि
 तः। मघः। वृन। दाशुषः। गृहे। सोधुन्वनेमिः। सह। मत्स्व। नृःमिः। इंद। क्रुमुःमान्। वाजः
 वान्। मत्स्व। इह। नः। अस्मिन्। सर्वने। शय्या। पुरुःस्तुत। इमानि। तुभ्यं। स्वसराणि। ये
 मिरे। वृता। देवानां। मनुषः। वृ। धर्मः। मिः। इंद। क्रुमुःमिः। वाजिः। मिः। वाजयन्।

प. त.

॥४०॥

इह।स्तोमं।जुरितुः।उप।याहि।यज्ञियं।शतं।केतंमिः।इष्टिरेभिः।आयवे।सहस्रंनीयः।
 अधुरस्य।होमनि॥७॥उषः।वाजेन।वाजिनि।प्रवेताः।स्तोमं।जुषस्व।गृणतः।मधोनि।
 पुराणी।देवि।युवतिः।पुरंदधिः।अनु।व्रतं।वरसि।विश्वः।वारे।उषः।देवि।अमर्त्या।वि।
 नाहि।वृद्धः।रथा।सूनृताः।इर्यंती।आ।त्वा।वहंतु।सुः।यमासः।अश्वः।हिरण्यः।वर्णा।
 दृथुः।पाजसः।ये।उषः।प्रतीवी।सुर्वनानि।विश्वः।ऊर्ध्वः।तिष्ठसि।अमृतस्य।केतुः।समा
 ना।अर्थं।वरणीयमाना।वृक्रं।इवा।नव्यसि।आ।वृहत्स्व।अवा।स्यूर्मः।इवा।विन्वती।मधो
 नी।उषाः।याति।स्वर्गस्य।पत्नी।स्वः।जनंती।सुः।प्रगा।सुः।दंसाः।आ।अंतात।दिवः।पु
 प्रथे।आ।पृथिव्याः।अष्टावुः।देवी।उषसं।विभ्राती।प्रावः।पारुध्वा।नमसा।सुः।वृत्तिः।ऊ
 र्वं।मधुधा।दिवि।पाजः।अश्रेत।प्रारोचुना।रुरुवे।रणवः।संदक।कृतः।वरी।दिवः।अ

॥४०॥

केः। अ॒बोधि॑। आ॒रेवती॑। रोद॒सी॒ इति॑। वि॒त्रं। अ॒स्त्रात्। आ॒युती॑। अ॒ग्ने। इ॒षसं॑। वि॒भाती॑। वा॒मं।
 ए॒षि। द्रवि॑णं। सि॒द्धमा॑णः। क॒ृतस्य॑। वृ॒ध्ने। इ॒षसां॑। इ॒षय॑न। वृ॒षा। मु॒ही॒ इति॑। रोद॒सी॒ इति॑। आ॒।
 वि॒वेश॑। मु॒ही। मि॒त्रस्य॑। वरु॑णस्य। मा॒या। वृ॒द्रा॒ इ॒वा॒भा॒नुं। वि॒। द॒ध्ने। पु॒रु॒ऽत्रा॑॥८॥ इ॒माः। ऊं
 इति॑। वां। भृ॒मयः॑। म॒न्यमा॑नाः। यु॒वा॒ऽव॑ते। न। तु॒ज्याः। अ॒भू॒वन्। के॒। त्यत्। इ॒न्द्रा॒व॒रु॒णा॒। य॒शः॑।
 वां। ये॒न। स्म॒। सि॒नै। म॒र॒थः॑। स॒र्वि॒ऽप्यः॑। अ॒यं। ऊं॒ इति॑। वां। पु॒रु॒ऽत॒मः॑। रु॒यि॒ऽय॑न। श॒श्व॒त॒ऽत॒
 मं। अ॒व॒से। ज॒ो॒ह॒वी॒ति॑। स॒ऽजो॒षो॑। इ॒न्द्रा॒व॒रु॒णा॒। म॒रु॒त॒ऽभिः॑। दि॒वा। दृ॒ष्टि॒व्या॑। शृ॒णु॒तं। ह॒वीं॒ मे॑।
 अ॒स्मे॒ इति॑। तत्। इ॒न्द्रा॒व॒रु॒णा॒। व॒सु॒। स्या॒त्। अ॒स्मे॒ इति॑। रु॒यिः॑। म॒रु॒तः॑। स॒र्व॒ऽवा॒रः॑। अ॒स्मा॒न्।
 वरु॑न्नीः। श॒रणे॑ः। अ॒व॒न्तु॑। अ॒स्मा॒न्। हो॒त्रा॑। म॒र॒ती॑। द॒क्षि॒णा॒भिः॑। बृ॒ह॒स्प॒ते॑। जु॒ष॒स्वा॒न्। ह॒व्या॑
 नि॒। वि॒श्व॒ऽदे॒व्या॑। रा॒स्वा॒। र॒त्ना॒नि॑। द्वा॒श्रु॒षे॑। शु॒र्वि॑। अ॒र्केः॑। बृ॒ह॒स्प॒ति॑। अ॒ध्व॒रे॒षु॑। न॒म॒स्य॑त्। अ॒ना॑

प. तृ. मि। ओजः। आ। चंके। ॥ १॥ वृषसं। वर्षणीनां। विश्वः। रूपं। अदाभ्यं। बृहस्पतिं। वरेण्यं। इयं। ते।
 ॥ ४१॥ पूषन्। आघृणे। सुः। स्तुतिः। देव। न च। सी। अस्माभिः। तुभ्यं। शस्यते। तां। जुषस्व। गिरं। मम।
 वाजुः। यंतं। अव। धियं। वधूयुः। रइव। योषणां। यः। विम्बा। अग्नि। विः। पश्यति। भुवना। सं।
 नु। पश्यति। सः। नुः। पूषा। अविता। भुवत्। तत्। सवितुः। वरेण्यं। भर्गः। देवस्य। धीमुद्दि।
 धियः। यः। नुः। प्रः। वोदयात्। ॥ २॥ देवस्य। सवितुः। वयं। वाजुः। यंतः। पुरं। ध्या। भर्गस्य।
 रातिं। इमहे। देवं। नरः। सवितारं। विप्रः। युज्ञेः। सुवृक्तिः। मिः। नमस्यंति। धिया। इषिताः।
 सोमः। जिगाति। गतुः। वित्। देवानां। एति। निः। रक्तं। क्रतस्य। योनिं। आः। सदां। सोमः। अ
 स्मभ्यं। द्विः। पदे। वतुः। रपदे। वा। पशवे। अनुमीवाः। र्षः। कुरुत्। अस्माकं। आयुः। वृद्धयन्। ॥ ४१॥
 अग्निः। मोतीः। सहमानः। सोमः। सधः। स्थः। आ। असदत्। आ। नुः। मित्रावरुणा। घृतेः।

गव्यंति। उ॒सुतं। म॒ध्वो। र॒जो॑सि। सु॒क्र॒तू॒इति॑ सु॒ऋ॒तू। उ॒रु॒ऽशं॑ सो॒ नमुः॑ वृ॒धो। मु॒क्ता।
 द॒र्श॒त्य। रा॒ज॒यः॑। द्रा॒घि॒ष्ठा॒सिः। शु॒वि॒ऽवृ॒ता। गृ॒णाना॑। ज॒म॒तऽअ॒ग्निना॑। यो॒नौ। क्रु॒
 त॒स्व। सी॒दु॒त। पा॒तं। सो॒मं। क्रु॒तऽवृ॒धा॥ ११॥ श्री॥ इति॑ तृ॒तीय॑ मंड॒लं॥ ॥ अनु॒वाकः॑
 त्वां॒ हि। अ॒ग्ने। स॒दा॒ इ॒त॒। सु॒मु॒न्य॒वः॑। दे॒वा॒सः॑। दे॒वं। अ॒र॒तिं। नि॒ऽए॒रि॒रे। इ॒ति॑। क॒त्वा॥
 नि॒ऽए॒रि॒रे। अ॒म॒र्त्यं। य॒ज॒त॒। म॒र्त्येषु॑। आ॒ दे॒वं। आ॒ दे॒वं। ज॒न॒त॒। प्र॒ऽवै॒त॒सं। वि॒श्वं। आ॒ऽ
 दे॒वं। ज॒न॒त॒। प्र॒ऽवै॒त॒सं। सः॑। भ्रा॒त॒रं। व॒रु॒णं। अ॒ग्ने। आ॒। वृ॒ह॒त्स्व। दे॒वान्। अ॒रु॒। सु॒ऽमृ॒ती॑।
 य॒ज्ञऽवै॒त॒सं। ज्ये॒ष्ठं। य॒ज्ञऽवै॒त॒सं। क्रु॒तऽवै॒त॒सं। आ॒दि॒त्यं। वृ॒ष॒णि॒ऽधृ॒तं। रा॒जा॒नं। वृ॒ष॒
 णि॒ऽधृ॒तं। स॒खे। स॒खा॒यं। आ॒प्ति॑। आ॒। वृ॒ह॒त्स्व। आ॒शु॒। न॒। वृ॒क्रं। र॒थ्या॑ऽइ॒वा॒र॒त्था॑। अ॒
 स्म॒भ्यं। इ॒स्म॒। र॒त्था॑। अ॒ग्ने। मृ॒ळी॒कं। व॒रु॒णे। स॒वा॒। वि॒दुः॑। म॒रु॒तऽसु॑। वि॒श्वऽभौ॑ नु॒षु।

प. त.
॥४२॥

तोकाय। तुजे। शुशुवान्। शं। कृधि। अस्मभ्यं। इस्म। शं। कृधि। त्वं। नः। अग्ने। वरुणस्य। विद्वा
नः। देवस्य। हेळः। अव। यासि। सीष्ठाः। यजिष्ठः। वद्विः। तमः। शोशुवानः। विश्वा। द्वेषांसि। प्रा
मुमुग्धि। अस्मत्। सः। त्वं। नः। अग्ने। अवमः। सव। ऊती। नेदिष्ठः। अस्याः। उषसः। विऽ
ष्टो। अव। युक्षु। नः। वरुणं। रराणः। वीहि। मृळीकं। सुऽहवः। नः। एधि॥१२॥ अस्याः। श्रेष्ठा।
सुऽस्य। संऽदक। देवस्य। विन्नऽतमा। मर्त्येषु। शुवि। घृतं। न। तुप्तं। अघ्रायाः।
स्याही। देवस्य। मंहनः। इवाधेनोः। विः। अस्याता। परमा। संति। सत्या। स्याही। देवस्य।
जनिमानि। अग्नेः। अनुंते। अंतरिति। परिऽवीतः। आ। अगात्। शुविः। शुक्रः। अर्यः।
रोरुवानः। सः। इतः। विश्वा। इत। अग्नि। वृष्टि। सन्न। होता। हिरण्यऽरथः। रंऽसुजिह्वः॥४२॥
रोहितऽअश्वः। वंपुष्यः॥ विष्वाऽवा। सदा। शुण्वः। पितुमतीऽइवा। संऽसत्। सः। वेतयत्।

मनुषः। युजः। बंधुः। प्रातः। मृत्या। रशनया। नयन्ति। सः। सेति। अस्य। दुर्यासु। सार्धनादे
 वः। सत्तस्य। सधु निः। त्वं। आपः। सः। तु। नः। अग्निः। नयत्तु। प्रज्ञानन। अर्द्ध। रत्नं। देवः। म
 त्तं। यत्। अस्य। धिया। यत्। विश्वे। अमृताः। अकण्वन। द्योः। पिता। जुनिता। सत्यं। उस्म
 न्। १३। सः। जायत। प्रथमः। पुस्त्यासु। महः। बुध्ने। रजसः। अस्य। योनी। अपात। अशी
 षी। गुहमानः। अंत। आः। योयुधानः। वृषमस्य। नीके। प्र। शर्दे। आर्त। प्रथमं। विपुन्या।
 क्रुतस्य। योनी। वृषमस्य। नीके। स्यार्हः। युवा। वृषुष्यः। विभाः। वा। सप्त। प्रियासः। अज
 नयन्त। वृष्णे। अस्माकं। अत्र। पितरः। मनुष्याः। अग्निप्र। सेदुः। क्रुतं। आशुषाणाः।
 अश्वमः। वृक्षाः। सुः। दुग्धाः। वृत्रे। अंतः। उत। उस्त्राः। आजुन। उपसः। दुवानाः। ते। मर्मज
 त। दृष्टः। वासः। अर्द्धि। तत्। एषां। अन्ये। अमितः। वि। बोवुन। पृथ्वः। यत्रासः। अमिका

प. त.
॥४३॥

रं। अर्वन। विदंत। ज्योतिः। वरुपंती। धीमिः। ते। गव्यता। मनसा। दध्रां। इच्छं। गाः। येमा
 नां। परि। संतां। अर्दि। दृक्कं। नरः। वरुसा। देव्येन। वृजं। गोऽमंतं। इशिजः। वि। वृवुरिति
 ववुः॥१४॥ ते। मन्वता। प्रथमं। नामा। धेनोः॥ त्रिः। सप्त। मातुः। परमाणि। विंदुन। ततु
 जानुतीः। अमि। अनूपत। ब्राः। आविः। सुवत। अरुणीः। यशसा। गोः। नेशत। तमः।
 दुधितं। रोचत। द्योः। उत्। देव्याः। उपसः। भानुः। अर्त। आ। सूर्यः। बृहतः। तिष्ठत। अ
 ज्ञान। वृजु। मर्तेषु। वृजिना। वापश्यन्। आत। इत। पश्चा। ववुधानाः॥ वि। अख्य
 न। आत। इत। रत्नं। धारयंत। द्युःमत्तं। विश्वे। विश्वासु। इयीसु। देवाः। मित्र। धियो।
 वरुणः। सत्यं। अस्तु। अछे। वोवेय। शुशुवानं। अग्नि। होतारं। विश्वऽमरसं। यजिष्ठं। ॥४३॥
 शुवि। ऊर्ध्वः। अतृणत। ना। गवां। अर्धः। ना। पूतं। परि। सिक्तं। अंशोः। विश्वेषां। अदि

तिः। यज्ञियानां। विश्वेषां। अतिथिः। मानुषाणां। अग्निः। देवानां। अवः। आऽवृणा
 नः। सुऽमृच्छीकः। भवतु। ज्ञातऽवेदाः॥१५॥ यः। मर्त्येषु। अमृतः। क्रतुऽवा। देवः। देवे
 षु। अरुतिः। निऽधायि। होता। यजिष्ठः। मुद्गा। शुचध्ये। हव्येः। अग्निः। मर्त्येषः। इर
 यध्ये। इह। त्वं। सूनो इति। सहसः। नः। अद्य। ज्ञातः। ज्ञातान्। उभयान्। अंतः। अग्ने।
 इतः। इयसे। युयुजानः। क्रुष्ट्वा। क्रजुऽमुष्कान्। वृषणः। शुक्रान्। वा। अत्या। वृधस्त्रं
 इति वृधऽस्त्रं। रोहिता। घृतस्त्रं इति घृतऽस्त्रं। क्रतुस्य। मन्ये। मर्तसा। जविष्ठा। अंतः। इ
 यसे। अरुषा। युजानः। युष्मान्। वा। देवान्। विशः। आ। वा। मत्तीन्। अर्यमणं। वरुणं।
 मित्रं। एषा। इन्द्रा विष्णु इति। मरुतः। अश्विना। उत। सुऽअश्वः। अग्ने। सुऽरथः। सुऽरा
 धाः। आ। इत्। ऊं इति। वह। सुऽहविषे। जनाय। गोऽमान्। अग्ने। अविऽमान्। अश्वी। य

प. त.

॥४४॥

जः। नृवतः सरवा। सदा। इत। अग्रः मृष्यः। इकाः वान। एषः। असुर। प्रजाः वान। दीर्घः। र
 यिः। पृथुः बुध्नः। सभाः वान॥ ३६॥ यः। ते। इध्मं। जपरत। सिस्विदानः। मूर्धानं। वा। तत
 पते। त्वाः या। भुवः। तस्य। स्वः तवान। पायुः। अग्ने। विश्वस्मात्। सी। अघः यतः। उरुष्य।
 यः। ते। परात्। अग्निः यते। वित्। अन्नं। निः शिषत्। मंडं। अतिथिं। उत्। ईरत्। आ।
 देवः युः। इन्द्रधत्ते। दुरोणे। तस्मिन्। रयिः। ध्रुवः। अस्तु। दास्वान। यः। त्वा। दोषा। यः।
 उषसि। प्रः शंसात्। प्रियं। वा। त्वा। कृणवते। हविष्मान। अश्वः। न। स्वे। दमे। आ। हेम्याः
 वान। तं। अंहसः। पीपरः। दाश्वांसं। यः। तुभ्यं। अग्ने। अमृताय। दाशत्। दुर्वः। त्वेदति।
 कृणवते। यतः स्त्रुक्। न। सः। राया। शशमानः। वियोषत्। न। एनं। अंहः। परि। वरत्। ॥४४॥
 अघः योः। यस्य। त्वं। अग्ने। अध्वरं। जुजोषः। देवः। मर्तस्य। सुधितं। रराणः। प्रीतः।

इत्। असत्। होत्रा। सा। यविष्ठ। अस्म। यस्य। विधुतः। वृधासः॥ १७॥ विन्ति। अविन्ति।
 विनवत्। वि। विद्वान्। दृष्टाः। इव। वीता। वृजिना। वामर्त्तान। शये। वानुः। सुः। अपत्याया।
 देव। दिति। व। रास्व। अदिति। उरुष्य। कविं। शशासुः। कवर्यः। अदत्वाः। निःधारयतः।
 दुर्यासु। आयोः। अतः। त्वं। दृश्यान्। अग्ने। एतान्। पृथमिः। पश्येः। अङ्गुतान्। अर्यः॥ ५१
 एवं। त्वं। अग्ने। वाघते। सुः। प्रनीतिः। सुतः। सोमाय। विधुते। यविष्ठ। रत्नं। मराशश
 मानाय। घृष्टे। दृष्टु। वृद्धं। अर्वसे। वर्षणिः। प्राः। अध। ह। यत्। वर्यं। अग्ने। त्वाऽया। पृथ
 मिः। हस्तेमिः। वृहम। तनूतिः। रथं। न। क्रंतः। अर्पसा। सुरिजोः। क्रुतं। येमुः। सुः। ध्यः।
 आश्रुषाणाः। अध। मातुः। उषसः। सुप्त। विप्राः। जायेमहि। प्रथुमाः। वेधसः। नृना। दि
 वः। पुत्राः। अंगिरसः। मवेमु। अर्द्रि। रुजेम। धुनिर्न। सुवतः॥ १८॥ अध। यथा। नुः। पि

प. त.

॥४५॥

तरेः परासः प्रत्नासः अग्नेः क्रुतं आशुपाणाः शुविः इतः अयुना दीर्घितिः उक्थः
 शसः क्षामः भिदंतः अरुणीः अपः वृन् सुः कर्मणः सुः रुचः देवः यंतः अर्यः नः
 देवाः जनिमः धर्मतः शुवंतः अग्निः वृधंतः इंद्रं कुर्वं गव्यं पुरिः सदेतः अग्मनः
 आ यथा इव सुः मतिः पृथ्वः अख्यतः देवानां यतः जनिमः अंतिः उग्रः मनीनां
 वितः उर्वशीः अरुग्रनः वृधे वितः अर्यः उपरस्यः आयोः अकर्मतिः सुः अपसः
 अभूमः क्रुतं अवस्वन्ः उषसः विभातीः अनूनाः अग्निः पुरुधाः सुः वृद्धं देवस्य
 मर्मजतः वारुः वरुः अवोवामः कुवयेताः जुषस्वा उत शो वृष्वः रुणुहि वस्यसः
 नः मुहः रायः पुरुः वापुः प्रायं धि ॥१९॥ आ वः राजानं अधुरस्यः रुद्रं होतारं स ॥४५॥
 त्यः यज्ञं रोदस्योः अग्निं पुरा तनयितोः अवितातः हिरण्यरूपं अवसेः रुणु

एतानि अग्न उच्यन्ते निः ३

जायिष्वत्तुः उरुतोऽनुवासाः -

ध्वं। अयं। योनिः। वक्रमायं। वयं। ते। नि। अर्वावीनः। परिः। वीतः। नि। सीद। इमाः। उदिति।
 ते। सुः। अपाक। प्रतीवीः। आः। मृण्वते। अर्दपिताय। मन्म। नृः। वक्षसे। सुः। मृळीकाय।
 वेधः। देवाय। शस्ति। अमृताय। शंस। आवाः। इव। सोता। मधुः। सुत। यं। इके। त्वं। वित। नः।
 शम्ये। अग्ने। अस्याः। क्रुतस्य। बोधि। क्रुतः। वित। सुः। आधीः। कदा। ते। उक्था। सधुः।
 माद्यनि। कदा। म्वंति। सख्या। गृहे। ते। कथा। हातत। वरुणाय। त्वं। अग्ने। कथा। दि
 वे। गृहसे। कत। नः। आगः। कथा। मित्राय। मी। कुषे। पृथिव्ये। ब्रवः। कत। अयुम्णे।
 कत। मगाय॥२०॥ कत। धिष्ण्यासु। वृधसानः। अग्ने। कत। वाताय। प्रः। तवसे। शुभं।
 ये। परिः। ज्मने। नासेत्याय। क्षे। ब्रवः। कत। अग्ने। रुद्राय। नृः। घ्ने। कथा। मृहे। पुष्टिः।
 मुराय। पूष्टे। कत। रुद्राय। सुः। मखाय। हविः। शे। कत। विष्णवे। उरुः। गायाय। रितः।

प. त.

॥४६॥

ब्रवः॥ क. त. अग्ने. शरवे. बृहत्ये. कथा. शर्दीय. मरुता. कृताय. कथा. सुरे. बृहते. पृ
 क्यमानः॥ प्रति. ब्रवः॥ अदितये. तुराय. साध. दिवा. ज्ञातः वेदः॥ विकित्वाना. कृतेन. कृ
 तं. निःसृतं. इच्छे. आ. गोः॥ आमा. सर्वा. मधुमत्. पुक्क. अग्ने. कृष्णा. सुती. रुरता. धा
 सिना. एषा. जामर्येण. पर्यसा. पीपाय. कृतेन. हि. स्म. वृषभः॥ वित्. अक्तः॥ पुमा
 न. अग्निः॥ पर्यसा. पृष्ठेन. अस्पर्दमानः॥ अनुरत. वयः॥ रधाः॥ वृषा. शुक्रं. दुडुहे. पृ
 श्निः॥ उधः॥ ॥२९॥ कृतेन. अद्रि. वि. असुन. सिदन्तः॥ सं. अंगिरसः॥ नवंत. गोमिः॥
 शुनं. नरः॥ परि. सदना. उषसं. आविः॥ स्वः॥ अभवत्. ज्ञाते. अग्ने. कृतेन. देवीः॥ अ
 मृताः॥ अमृताः॥ अर्णः॥ रमिः॥ आपः॥ मधुमत्. मिः॥ अग्ने. वाजी. न. सर्गेषु. प्रस्तु
 भानः॥ मा. सदा. इत्. स्ववितवे. दधन्युः॥ मा. कस्य. युम्. सदा. इत्. दूरः॥ गाः॥ मा. व

॥४६॥

शस्यः। द्रुमिनतः। भ। आपेः। मा। भ्रातुः। अग्ने। अनृजोः। क्रुण्ण। वेः। मा। सरव्युः। दक्षः।
 रिपोः। भृजेम। रक्ष। नुः। अग्ने। तव। रक्षणेभिः। रुरक्षाणः। सुःमुखः। प्रीण। नः। प्रति।
 स्फुर। वि। रुजु। वीवु। अंहः। जुहि। रक्षः। महि। नित। वृधु। एभिः। लुव। सुःम
 नः। अग्ने। अर्केः। इमान। स्पृश। मन्मः। मिः। शूर। वाजान। उत। ब्रह्माणि। अंगि
 रः। जुषस्व। सं। ते। शस्तिः। देवः। वाता। जरेत। एता। विश्वा। विदुषे। तुभ्यं। वेः। नीथा
 नि। अग्ने। नृण्या। वचः। सि। निः। वचन। कुवये। काव्यानि। अशंसिषं। मृतिः। मिः।
 विप्रः। उक्थेः। ॥ २२ ॥ कृणुष्व। पाजः। प्रः। सि। ति। न। पृथ्वी। याहि। राजाः। इव। अमः।
 दान। इमेन। तृष्णी। अनु। प्रः। सि। ति। इणतनः। अस्ता। असि। विध्य। रससः। तपिष्ठेः।
 तव। भ्रमासः। आश्रुः। या। पतंति। अनु। स्पृश। धूषुता। शेः। मुचानः। तपूँषि। अग्ने।

प. त.

॥ ५७ ॥

जुहां पतंगानां असंसदितः वि. सृज. विध्वं क. उल्काः प्रति. स्पर्शः वि. सृज. तूष्णिः
 त. म. म. वा. पायुः वि. शः अस्याः अदं ब्रः यः नः इ. अघः शंसः यः अंति. अ.
 प. विः ते. व्यष्टिः अ. दधुषीत. उत. अग्ने. तिष्ठ. प्रति. अ. तनुघ्न. नि. अमित्रान्.
 ओषता. तिग्मः हेते. यः नः अरति. सं. इधान. वृके. नीचा. त. ध्वि. अतुसा. ना.
 भुक्षी. ऊर्ध्वः म. वा. प्रति. विध्य. अधि. अस्मत्. आवि. कृणुघ्न. देव्या. नि. अग्ने. अ.
 स्थिरा. तनुहि. यातुः जनां. जा. मि. अजा. मि. प्र. मृणी. हि. शत्रूना. ॥ २३ ॥ सः ते. जा.
 ना. ति. सु. भुति. य. विष्ट. यः इवते. ब्रह्मणे. गातुं. एत. विश्वानि. अस्मे. सु. दिना.
 नि. रा. यः द्यम्नानि. अयः वि. दुरः अ. मि. द्योत. सः इत. अग्ने. अस्त. सु. मगः सु. ॥ ५७ ॥
 तानुः यः त्वा. नित्येन. हृदिषां. यः उक्तेः पिप्रीषति. स्वे. आयुषि. दुरोणे. विश्वानि.

इत। अ॒ज्ञे। सु॒दि॒ना। सा॒। अ॒स॒त। इ॒ष्टिः। अ॒र्वा॒मि॒ते। सु॒म॒ति॒। घो॒षि॒। अ॒र्वा॒क॒। सं।
 ते। व॒वा॒ता। अ॒र॒त्त॒। इ॒यं। गीः। सु॒अ॒श्वः। त्वा। सु॒र॒थाः। म॒र्त्ये॒म॒। अ॒स्मे॒इति॒। सु॒त्रा
 णि॒। धा॒र॒ये॒। अ॒नु॒। द्यू॒न॒। इ॒हा॒त्वा। भू॒रि॒। आ॒। व॒रे॒त्। उ॒प॒। त्म॒ना॒। दो॒षा॒। व॒स्तः। ही॒दि॒वा॒स॒।
 अ॒नु॒। द्यू॒न॒। क्री॒क॒तः। त्वा। सु॒म॒न॒सः। सु॒पे॒म॒। अ॒भि॒। द्यू॒म्ना॒। तं॒सि॒वा॒सः। ज॒नो॒ना॒।
 यः। त्वा। सु॒अ॒श्वः। सु॒हि॒र॒ण्यः। अ॒ग्ने॒। उ॒प॒या॒ति॒। व॒सु॒म॒ता॒। र॒थे॒न॒। त॒य॒। ज्ञा॒ता॒। प्र
 व॒सि॒। त॒स्य॒। स॒खा॒। यः। ते॒। आ॒ति॒थ्य॒। आ॒नु॒ष॒क॒। जु॒जो॒ष॒त॒॥ २४॥ मु॒हः॒। रु॒जा॒मि॒। व॒ंधु
 ता॒। व॒नः॒। य॒मिः॒। त॒त॒। मा॒। पि॒तु॒। गो॒त॒मा॒त॒। अ॒नु॒। इ॒या॒य॒। त्वं॒। नः॒। अ॒स्य॒। व॒न॒सः॒। नि॒कि
 द्वि॒। हो॒त॒। यु॒वि॒ष्ट॒। सु॒क॒तो॒इति॒सु॒क॒तो॒। द॒मू॒नाः॒। अ॒श्व॒घ्न॒जः॒। त॒र॒ण॒यः॒। सु॒शे
 वा॒। अ॒त॒द्रा॒सः॒। अ॒वृ॒काः॒। अ॒श्र॒मि॒ष्टाः॒। ते॒। पा॒य॒वः॒। सु॒ध॒र्ष॒वः॒। नि॒स॒ह॒। अ॒ग्ने॒। त॒र्वा॒नः॒॥

च. ल.
॥६८॥

पां त। अमूर। त्वया। वयं। सुधुन्यः। त्वाऽर्कताः। तव। प्रसीती। अश्याम। वाजः। न। उभा।
 शंसा। सद्यः। सत्यः। ताते। अनुष्ठया। हणुहि। अङ्गयाण। अया। ते। अग्ने। सं। रधः। तिथे।
 मु। प्रति। स्तोमं। शस्यमानं। गृभाय। दह। अशसः। रक्षसः। पाहि। अस्मान्। इहः। निदः।
 मित्रः। महः। अवद्यात्। ॥६८॥ ॥ इति तृतीयाष्टके वतुर्ध्यायः ॥ ॥ हरिः ॐ ॥ ॥
 वैश्वानराय। मीकुषे। सुजोषाः। कथा। दाशेमा। अग्नये। बृहता। भा। अनूनेन। बृहता।
 वक्षथेन। उप। स्तुभायत्। उप। मित। न। रोधः। मा। निदत्त। यः। रुमां। मत्स्यं। गुति। देवः।
 दुदो। मर्त्याय। स्वधाः। वान्। पाकाय। गुत्सः। अमृतः। विर्वेताः। वैश्वानुरः। नृत्तमः। युद्धः।
 अग्निः। साम। द्विर्वर्हाः। महि। तिग्मः। भृष्टिः। सुहर्षः। रेताः। दृषमः। तु विष्मान्। पदान्। न।
 गोः। अर्पः। गृहं। विविद्वान्। अग्निः। मर्त्यं। प्रा। इत्। ऊं। इति। वोचत्। मनीषां। प्र। तान्। अ

॥६८॥

ग्निः। बुभुसुतः। तिग्मः। ज्ञेयः। तपिष्ठेन। शोविषा। यः। सुः। राधोः। प्राये। सिनंति। वरुणस्य।
 धाम। प्रिया। मित्रस्य। वेततः। ध्रुवाणि। अभ्रातरः। न। योषणः। व्यंतः। पतिः। रिषः। न। जन
 यः। दुः। रक्षाः। पुपासः। संतः। अनुताः। असत्याः। इदं। पदं। अजनत। गुप्तीरं॥१॥ इदं। मे।
 अग्ने। कियते। पावक। अमिनते। गुरुं। भारं। न। मन्म। बृहत्। दधाय। धृषता। गुप्तीरं। यद्वं।
 दृष्टं। प्रथसा। ससः। धातु। तं। इत्। नु। एव। समुना। समानं। अभि। कृत्वा। पुनती। धीतिः।
 अश्याः। ससस्य। वर्मन्। अधि। वारुं। दृष्टेः। अग्नौ। रूपः। अरुपितं। जवारु। प्रः। वाच्यं। वच
 सः। किं। मे। अस्य। गुह्यं। हितं। उप। निणिक। वदंति। यत्। उस्त्रियाणां। अर्ष। वाः२३॥
 वन्। पाति। प्रियं। रूपः। अग्नौ। पदं। नेरितिवेः। इदं। कुं। इति। त्यत्। महि। महं। अनीकां। य
 त्। उस्त्रिया। सर्वत। पूर्व्य। गोः। कृतस्य। पदे। अधि। दीघानं। गुह्यं। रघुः। स्यत्। रघुः। य

प. ल.

॥४९॥

ता विवेद। अधाद्युतानः। पित्रोः। सवा। आसा। अमनुत। गुह्यं। वारं। पश्वेः। मातुः।
 पुदे। पुरमे। अंति। सतागोः। वृष्टः। शोविषः। प्रथतस्य। जिह्वा। ॥२॥ कृत। बोच।
 नर्मसा। पृच्छमानः। तव। आशुसा। ज्ञातुः वेदः। यदि। इदं। त्वं। अस्य। क्षय
 ति। यत। ह। विष्मं। दिवि। यत। उइति। द्विण। यत। पृथिव्यां। किं। नः। अस्य। द
 विणं। कत। ह। रत्नं। वि। नः। बोचः। ज्ञातुः वेदः। चिकित्वा। गुहा। अध्वनः। पुरमं
 यत। नः। अस्य। रेकु। पुदं। न। निदानाः। अगन्मा। का। मर्यादा। वयुन। कत। ह। वा
 मं। अछ। गमेम। रघवः। नावाजं। कदानः। देवीः। अमृतस्य। पत्नीः। सूरः। वर्णेनि।
 ततनन। उषसः। अनिरेण। ववसा। फल्वेन। प्रतीत्येन। कृधुन। अतृपासः। अ
 धाते। अग्ने। किं। इह। वदंति। अनायुधासः। असता। सवता। अस्य। श्रियो। सं

॥४९॥

दक्षः। वसोः। अनीकं। दमे। आ। रुरोव। रुशत। वसानः। सुदशीकः। रूपः।
 तितिः। ताराया। पुरुः। वरः। अद्योत। श। ज। अ। धुरस्य। होतः। अग्ने। तिष्ठ। देवः। ताता।
 मजीयान। ताहि। विश्वो। मि। असि। मन्म। प्रा। वेधसः। चित्। तिरसि। मुनीषां। अम्।
 होतः। नि। असूदि। विष्क। अग्निः। मंडः। विदधेषु। प्रः। वेतः। ऊर्ध्व। भानुं। सविताः।
 इव। अश्वेता। मेताः। इव। धूमं। सुभायत। उप। द्या। यता। सुजृणिः। शतिनी। धृतावी।
 प्राः। दाक्षिणित्। देवः। ताति। उराणः। उत। उदिति। स्वरुः। नदः। जाः। ना। अक्रः। पश्यः। अ
 क्ति। सुः। धित। सुः। मेवः। स्तृणि। बर्हिषि। संः। दधाने। अग्ने। ऊर्ध्वः। अध्वर्युः। जुजु
 षाणः। अस्थात। परि। अग्निः। पशुः। पाः। ना। होतः। त्रिः। विष्टि। एति। प्रः। दिवः। उराणः।
 मारः। समनः। सितः। द्रुः। एति। होतः। अग्निः। मंडः। मधुः। ववाः। न्तः। वः। ददति। अस्य

सं०

११२५२५

दुःखिनः॥ न। शोकाः॥ भयंते॥ विश्वा॥ सुवन्ना॥ यत्॥ अभ्राट्॥ ॥ ॥ भद्रा॥ ते॥ अग्ने॥ सु॥
 अनीक॥ सं॥ हृक्॥ घोरस्य॥ सतः॥ विषुणस्य॥ वारुः॥ न॥ यत्॥ ते॥ शोचिः॥ तमसा॥ वरं
 ताज॥ ध्वस्मानं॥ तन्वि॥ रिपुः॥ आ॥ धुरिति॥ धुः॥ न॥ यस्य॥ सातु॥ जनितोः॥ अवारि॥ न॥
 मातरा॥ पितरा॥ नु॥ चित्॥ इष्टो॥ अधा॥ मित्रः॥ न॥ सु॥ धितः॥ पावकः॥ अग्निः॥ दी॥ ता॥ द्यु॥
 मातु॥ षी॥ षु॥ वि॥ क्ष॥ द्विः॥ यं॥ पंच॥ जी॥ जनन॥ सं॥ वसा॥ नाः॥ स्वसारः॥ अग्नि॥ मानु॥ षी॥
 षु॥ वि॥ क्ष॥ उ॥ षः॥ र॥ बु॥ धी॥ अ॥ ध॥ र्यः॥ न॥ दंतं॥ मु॥ क्रं॥ सु॥ आ॥ स्यं॥ प॥ र॥ शु॥ न॥ ति॥ ग॥ मं॥ त॥ व॥ ल्ये॥
 अ॥ ग्ने॥ ह॥ रि॥ तः॥ घृ॥ तः॥ स्ना॥ ॥ रो॥ हि॥ ता॥ सः॥ ऋ॥ जु॥ अ॥ न्वः॥ सु॥ अ॥ न्वः॥ अ॥ रु॥ षा॥ सः॥ वृ॥ ष॥ णः॥
 नृ॥ जु॥ मु॥ ष्कः॥ आ॥ दे॥ वः॥ ता॥ तिं॥ अ॥ दंत॥ दु॥ स्माः॥ जे॥ ह॥ ल्ये॥ ते॥ स॥ ह॥ मा॥ नाः॥ अ॥ या॥ सः॥ ले॥ ॥ ॥ ॥
 षा॥ सः॥ अ॥ ग्ने॥ अ॥ न्वः॥ यः॥ वरं॥ ति॥ श्ये॥ ना॥ सः॥ न॥ दु॥ व॥ स॥ ना॥ सः॥ अ॥ र्थं॥ तु॥ वि॥ स्त॥ न॥ सः॥ मा॥ रू॥ तं॥ ॥ ॥ ॥

नाशर्द्धः अकारिः इह। संसृधानु। तुभ्यं। शंसति। उक्थं। यजते। विः। इति। धाः। होतारं।
 अग्निः। मनुषः। नि। सेइः। नुमस्यतः। उशिजः। शंसं। आयोः॥५॥ अयं। इह। प्रथमः। धा
 यि। धातुः। पिः। होतः। यजिष्ठः। अधरेषु। ईड्यं। यं। अजवानः। भृगवः। विः। रुरुवः। वने
 पु। वित्रं। विः। पर्वः। विशेषः। विशेषः। अग्ने। कदा। ते। आनुषकः। सुवता। देवस्य। वेतनः। अधः। हित्वा।
 जम्भुभिरे। मत्तंसिः। विः। ईड्यं। कुतः। वानः। विः। वेतसं। पश्यतः। धाः। इव। स्तुः। पिः। वि
 श्वेषां। अधु। राणां। हसु। कर्तारं। दमेः। दमे। आ। शुं। इतं। विवस्वतः। विश्वाः। यः। वृषणोः। अ
 पि। आ। जम्भुः। केतुं। आयवः। भृगवाणं। विशेषः। विशेषः। तं। इह। होतारं। आनुषकः। विविच
 सं। नि। सेदिरे। श्वं। पावुकः। शोदिषं। यजिष्ठं। ससाधामः। पिः॥६॥ तं। जश्वतीषु। मातृषु।
 वने। आ। वीतं। अश्रितं। वित्रं। संतं। गुह्यं। हितं। सुवेदं। कूचितः। अर्धं। सुसस्यं। यतः।

५४

॥५३॥

विऽयुता। सस्त्रिन्नाडिधनः। क्रुतस्य। धामन। रणयंत। देवाः। महः। अग्निः। तमेसा।
 रातऽहयः। वे। अध्वराय। सदा। इत। क्रुतऽवा। वे। अध्वरस्य। इत्यानि। विद्वान्। मेडा।
 सुंरिति। रोदसीइति। संऽविकितान्। इतः। इयते। प्रऽदेवः। इराणः। विदुऽतरा।
 वः। आऽधेनानि। कृष्णं। एसा। रुशतः। पुरः। माः। वरिष्णु। आर्विः। वयः। इतः। एसा।
 यतः। अऽधीता। दधते। हा। गर्भः। सद्यः। वित्तः। ज्ञातः। भवः। इतः। इति। इतः। सद्यः।
 ज्ञातस्य। दहशानं। अं जः। यतः। अस्या। वार्तः। अनुऽदाति। शेविः। हणक्ति। निष्पः। अ
 तसेषु। जिह्वा। हिरा। निद्रा। अन्ना। दयते। वि। जंभैः। तृषु। यतः। अन्ना। तृषुणा। ववमः।
 तृषु। इतः। हणुते। यदः। अग्निः। वार्तस्य। मेळि। सवते। निऽज्वनः। आशु। न। व। जय
 ते। हिन्वे। अवा। ७॥ इतः। वः। विश्वऽवेदसं। हयऽवाहं। अमत्यं। यजिष्ठं। सुंरसे। गि

॥५३॥

॥पंचासकृत् नमः॥

॥१॥

सागुत्तमो नमः रुनिः ॐ सुवे ननादिवो सुस्म प्रसंता खिना पुवे क न मा गो सु केः । या सु स
 उरुवा कृषि क्को मं ता व य यु पतः पयु पुव ना स्म ता य रु मा रा वि ति स्व कृ मा ॥ न व र्ण स्म ता न
 उतु पु न कौ तिः । पु पु व ना स्म मि ता मि मा ना पो थ बा मा ति या यो क क्का न्ना ता दृ त्प इ ति च द न
 ध म्पु ये ध्मा थि य पु रु रुः रा स्व द र्वैः । म नो ज वे ति नि वि वैः स य थो व वि का यि द शि यो म त र्ण स्म ।
 ता न क र्णो क न मा ता रा म न्मो प नु य तो य य कान स ती । रा त प कृ मि य म्पु क्क व दं ता क
 ता य रु त न्नो म धु य्प वा ना । त व ल्लु द र्वा पु पु दार्क त मा प्र मा न क र्ण वा व र्ण वि वा से । या रा
 स ते र्पु व ते रां त वि द्वा व नु व तु म्पु ते वि त्ति सी ती ॥ ता तु क्क वि ति न्मः स मु द्वा तु व र्ण स्म
 उ म्पु य पु न कौ तिः । ज ने ग ति यो के ने ति तु कं ता प त वि ति न्म स्मो ज पु य र्ण वा त् । वि कृ य वा न य
 या त म दि स तं रु वं व ल्प ता व धि क्ताः । द रा म्पं ता रा य वे पि पा यु ग वि ति वा वा ना सु म्पु ति तु
 ना पु य दौ द र्वा पु दि वो क स्मि तु म्पु न्म के नो दे वा ना सु त म्पु ति वा । त र्वा दि ता व र्ण वो पु दि या र्णो न नो
 पु के त पु न्म वं द था ता य द्वा म्पु ना व तु धा वि द्प इ क्क र्णो मि बो व तु ग र्वा क त र् । गं ती ना य न द

[illegible]

(वैखानस्युपादिनः राक्षसकृतुदेतिनमेवस्युतिः स्योऽष्टाः। वस्यंकोअलुनस्याप्रसिं पुंसः क
 सीताभांनुभाअस्याइइस्येवृत्तवस्यकृता निवेदेताउवस्यं जानोविदविा कविंकेतुंथासिंता
 अइइइइतितांनुअंनोइस्योः पुनइनस्यभीतिनविवासेयेदुतामिपुकाभिजातिनाकुतु
 म्अलोअधवारः पुता०००ः सधाअवथाअआतु। प्रतांइस्येनुमिदिवाथुउर्व
 सननापनाअनकुतु। योअइनीतेतहास्यहाइंतीः प्रसीः स्रकानुनतैभाः रधीतिः। तभी
 रानवस्योअभिंनपरीषेनीनतइमस्यंतवतनुन। योइय्योऽइअनअयवपुस्येयोअयवनीनु
 वस्यः स्रकान। सानुतुपानकुथोअद्वोअभिर्विरीः स्रकेदलिरुतुः सदीतिः। अस्याराभुनिपुविरे
 र्देअनीस्यावैःस्यस्यः स्रअतिंनकभागाः। वैरदानोवनुआनोइस्येनासिः स्यस्याउपितो
 नुपस्था। आइवोइइइअता०००वस्युनिवैरवानुतुदिता स्युय्येस्यो। आस्युअवनातापन

लुप्तमामिदिविवायधिकाः । ~~त~~ प्रवोदेवं दिव्यरुणा नमामिभस्व न वाकिनं दिवेनभोतिः
 तदीनोतुतोतुतोमं धनस्य विदां तदीनेषु विविदेतिरुतुः । आयां अनेव ध्या ६७ ननुखा मं डो देवा
 नोत्यस्यं कं वा माः । आस्यानुगं नो नयनधिका कं तं विविदे मुरां य न नीति । आसीनो यरुः
 सुदितं दिव्यदिः पीत्नी ते अस्मिनीलितो नदीता । आद्या तं विविदे नदी नदीता यतो य विष्टा नदी
 पुरो रोवेः । स्याओ श्री धने धिनं कं न तमा नुजा सा य र्पां ।

१६३

१६३

॥ पंचमहाशक्त्या नमः ॥

[illegible]

[illegible]

श्रीगुरुतिलकनमोस्तुते वासुदेवाय नमः । उतमनःक्रेतुन यस्यानृषीं सुमील्यैरातः पञ्चके वपक्वा । रां
 होतमिनामिनः स्मादिष्टीं इरावरास्योतिषा वनप्राक् । स्यांवांरातातास्यत्तास्य रुद्रास्वान्तां प्रुपं व्यागि
 नेधात् । तनवाकायवीननुगिने च चतानक्रांस्त्रिभुवुं संस्थाप्यः । सावाः सुमेवनिमं ह्युनि सिष्याः ॥४॥
 उ३सि यउवत्तो नो वमातामन्युनपाः नो मशो नुराः तः । कृतांति विरेवा सुत गा सुगता ता तु उवस्वी इति
 मयोनी । तत्रा इह उर्विद्या विद्या विता स्युते नो विता निवो मामपहं । सा विर्वरुः कण्ठे संतमानो पादे वि
 तोरमानामयोसिः । वरुंतिरीमनुतास्यो नुरां तो मगावः स्युत गामुर्विद्या प्रयानाः । अपेकते सुने मस्ये वरा तु द्वाप ते तमा
 मकि नोन वेल्हाः स्यु गीत ते स्यु वचा पर्वते च वामे मवस्त मस्य सिस्वतानो । स्याज्जावद पशुयामन पुंन सिंदि वो उ
 क्रित पशु यथे स्यावरु यो कृति नवातो वा वनं वरु सिको यमनु । तं रि वो उक्रित यक्रि देवी पुर्व क्रुतौ संरु ना इरिता तु
 उ तेव मस्विद स्य ते नप ह न न स्वये विनु ता को वृष्टौ । ममा स्य ते वरु स्यु निवो मम यो दे वि दायुषे मत्तायि ॥५॥
 वा स्याता नो उक्रिता दिवो काः प्रिती उरुं ती मा नु जी न की गः । या ता नु ना नुरा ता ना मगा स्वस्ति सि ति न स्य मस्य स्व
 इ क्रु वृ पवित आयु ननु ता यमि न स्वै स्वि तं तां ता व स्य स्वं नयाः । का यं यस्तु स विधतो नयं ती विता द्वाप ते तम उ म्मा
 याः । रन वे वा कृ मि प मुर्नं वरुं ती नि द रि य उ म स्यो ममादि मप्यो नी वी न वरु ता मा ना न वी था त वि ध ते न न

॥ इति बोधितेन नमस्तीति वीनायाः सुखं वाच्यः ॥ इति विप्रश्नश्च न वेत्ति ॥ उक्त्वा निष्प्रमावतेव वा पुनः सिद्धिः ॥ इति नित्यं
 उक्त्वा निष्प्रमावतेव वा पुनः सिद्धिः ॥ उक्त्वा निष्प्रमावतेव वा पुनः सिद्धिः ॥ उक्त्वा निष्प्रमावतेव वा पुनः सिद्धिः ॥ उक्त्वा निष्प्रमावतेव वा पुनः सिद्धिः ॥

शीघ्रं ते कुरुते ॥ १ ॥ ततोऽयमेकस्मिन् स्वस्वभूमि कृतान्वयीः । अनवस्यो ह्यनतीरुन कस्युर्विनाशनी पयसा यतिस्थापयत् ॥
 स्यावत निनुता वस्ति मनुतो यमवशवा कृता तौ । तौ के वा गो मुत न ये यम सुख प्रकं इति ध्यायेत् अथ प्रोः । प्रविशेत्तु म
 गणतेनुनाथमानुता यस्वत वसेत नध्वं । यो स पांसि स्य द स्या स्य न नेने ज ते अये पृथिवी मसे स्य स्यः । त्विषी मां तो च
 न स्येव विद्वान्ते शुभा व स्यो कृदो ७७ नाम्नैः । अरवियो पुन यो नवीना वा क न मा नो मनुतो ज पृथ्वाः । तं व पुं तं मा न
 तः वा कृ दृष्टिः । नु उ स्य मनु न्द व र्णा वि वारणे दिव्य स प मि रु व यो म नी वा कि न यो ना प उ द्या न स्य पृथ्वा ॥ १ ॥ वि वि स्वे
 सां वं स्य तां ज्ञे प्र त मा नी ति मि त्वा वृ उ ग्गा वा व थ प्रो । स्यं ता न र मे व य म न्य मि द्वा दृ क ना ७ स्य मा वा दु तिः स्येः ॥ ३ ॥ यं म
 द्वा ७ प्र स्य तां ते म ना यो ध प्रिया क्ख न मा ना व र्दि न रु यं तं नो मि ता व न्गा व थ ह्यं रु दि स्यि ७ वृ यं स्य ता नु ज्ञा या तं
 मि ता व न्गा स्य ता स्य प प्रिया न म स्या दु य मा ना । स यं या व द्वा र स्यो ज्ञा प स्ये व रु ना ७ कृ पी य त स्वि प्र त यो मा दि त्वा ॥
 अ स्या न या वा कि ना पु त व्धु न ता स्य त्म म ति त न थै । प्र य म कि म ना ता क य मा ना यो ना म र्ता य ज थ व
 वि शी थ न वि स्वे य वा ७ मं रु ना वं ७ मा ना ७ कृ तं ७ दे वा लो क इ थुः स्य को वा ॥ १ ॥ प रि धु यो ना ७ स्त्री वृ उ व र्दि ति
 स्य थो ज्ञ इ व पा सो म्म मु ना ॥ १ ॥ त त त कि कृ त थान् यो यो न न रु ७ दे यो सा नु म्प मा दि व यो ॥ ३ ॥ नो न रु
 त्रु त वि स्वे दे वा नु म्म ता ७ ज्ञां थान् यो यो ॥ ता वि थं थै यो कृ त न ७ ग्गा य ता क्का य ह्य म स्य त्र यः ७ ग्गां ता न
 मि थं ते नु व त यो वा ता वि य त यो वि स्वे दि वा त न ७ ते ता कि कृ द्वा स्य ७ म ७ ७ म्पे थान् यो यो स्य ता न वि त्

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

2

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

[illegible]

✓
३

10

॥ २ ॥

नयेषु तैरुसैविदुयामानामधुमात्रं तं रथानाः जयेस्तौ नाश्यासौ मन्त्रावुविहृता न वेयासु
 ग्रामा ॥ ८ ॥ तदुयाः रावसाधुषु वैताकुतेयं कंतु नोहंसी सुमेकै। अथैस्मेषु नोहसी स्वरा विनामह्य
 तस्थौ न नोहैः। अनेनो वौ मनुतो यामौ अस्व न स्वस्वमम कृत्य न वीः मनु वस्यो कानती सुवेक
 सुविमोहं साधयतो याति सार्धं दानास्य वत नितं उता न्वस्ति मनु तो यमं वय वाकं सा तो। तोके वा
 गोभुतन येयम सुसुवु क इति पाये अथ योः। प्रवित मकं मणा तेनु नायमा त्रुता यस्व तं वस्वत
 नथ। ये स कीं सु स कं सा स कं तं ने कं तेन मेषु विमी मस्ते तः। विमी मं तो अ धु न स्ये वदिभुत
 पुत्रा वस्यो अकु द्रो ॥ ९ ॥ नामेः अर्ध वि यो पुन यो न वी नात्ता कं कृन्मा मनु तो अथ साः। तं वथं तं मा त्रु
 तं ता कं हृशं उइ स्ये सुतं रु वसा वि वा स्ये दिवः सार्धं अ रु व यो मनी गितं यो ना पद या मी स्ये अत्र
 ॥ १० ॥ वि र्वे पां वं स तां को मी मा गी ति मि ता वत ता वा वथ थौ। सं य्या न रमे वं य म ति र्मि मी शा वा क ना
 असा मा वा द्रु तिः स्यैः इयं मद्रां प्र स्या ती ते म नी षो प वि यान म सा बुद्धि न कं। यं तं नो मि वा वत ता
 वथं अं सु दि यि द्वा वतु यो सुतनु। अया तं मि ता वत ता सु रा स्तु प वि याम न सा दु य मा ना।

संथावन्मन्त्रोऽपश्येवक्रनाः। ह्युपायतन्त्रिभेतयोमद्वित्वा॥ सखाजयावाजिना। पुतवंधुनुतावक्रतमार्द
त्रिनिधौ। प्रयासार्द्धमेकाः ताकायमानायाः नासतयिनिवेवेज्जदीधः। विखेयदाः। मंरुनावंदमानाः
रुतदेवाः। सौम्यः। स्रुकोपाः। पत्रियुद्यो नोदेसावुवीसंतिस्तरौमार्दवभासोऽमृनाः। गति
किरुतपात्रयैयेमनुस्रुनृः। येस्मानुमृपमार्दवयोः। ह्येननृतवुतविश्वदेवेनुमिमातांघ्रांवा
भासिनायोः। ताविपुंभैधेकृत्तनंप्रथायासायल्लभ्यसततयः। तांमर्मण्यतेयुवतयोवाताविश
तयोविश्वक्रवातनंते। ताकिस्वयासादृशोऽसुमेथासायदांस्तोमंनृतिरुतेनुवातदांमद्वित्वा
तांनोवस्तुपुवदापुषेविदेस्त्रिभोऽमंरुः। प्रयदांमितावनुतासुपुनृतिरुताभासयुवयितामिनांति।
नयेदेवास्तुक्रुत्तनमतामिनेहियासोसाप्योनपुताः। विचद्विदंकीस्तास्तोतनंतेरांसंति
कैविज्जिहोमनानाः। आदां। ववामस्तुतांनुकथाननैर्द्वितयतयोमद्वित्वा। आवानिदावांरुदि
यो। सुजिहोयुवोमितावनुतावस्तुथोयु। अनुजद्वावः। सुनिनानृतिरुतांयुयुयडातेवर्षात्तुन
नृन॥ १॥ सुजीवांयुतुततः। स्रुकोपांमनुष्येहृत्तवद्विचक्रथे। सायवः। आवनुताविश्वस्रमदे

वि

वे

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

वृषे सा० ॥ ३५० ॥ वामपुःपनिषिक्मसुग्मेसास्यस्यस्मिन्नुद्धिषिमादयेथा० ॥ १७॥ एवं वां कर्मणां सवि
 षा फेनमी० डा विष्णु सपस्यस्याने सुस्य० कुपेयी० सुकं० इवितां वध तमनिषे नैव जितिः पुनये
 ता० सा विस्वासा० कनिता नामतीनामि० डा विष्णु कुलरी सोमधाना० प्रका० गिनः सुस्यमो ना जवतु
 स्तेमा सोमगीयमा ना सोमके रा० डा विष्णु मपती मदानु मा सोम० यानुं इवितां धाता० सव
 मं कं वकुति मती मा० रा० सोमो रा० रा० सोमो ना स्य डकयेः० डा वामा नका सोमि माति पादु मिं डा
 विष्णु स्यमा दी वरु० तु० कुपेयी० विस्वा र वना मती नाम पुब्रका गिरा पुतं० गनो मो० डा वि
 सुतता नया० ज० वा० सोम सपम० डा० उ० वक्रमायो० डा क० पुतं० मंत नि० व० नी० यो प्रवित० नी० वसे नो नका
 स्मि० डा० डा विष्णु रुविषा वा वधाना गी० डा नानमा सा ना तक्रवा० प्यती सुती इविता० यत मस्य मे स्य मुड
 स्थः० कुलरी सोमधान० डा० डा विष्णु सिबतं मधो० सा स्य सोमो स्य डनश कठन० पलोया० डा वा
 मा० थी० सिमदिनात्ता गानु पुब्रका गिरा पुतं० रुवे० मे० उता मी० मधुन यरी कथो येम पनी मिमे
 कत नयने नोः० डा० इत्य विष्णु रा० पस्यथे था० ते धास्यस्य० विते डे नये था० ॥ १८॥ अत वती तु

वैतानाभानिस्त्रयोविंशती मधुपुष्पे सुवे रंस्याः प्रावापयिषीवर्तुतास्थपर्मणा विष्कति ते शुक्ले तुर्नि
ने तस्याः सत्यं संती तु विधाने पयस्वती प्लुतं उदाते सुकृते च विवृते । नाकं तीक्ष्णं तु वज्रं च नोदसीति
स्मृते तैः संप्रतं चान्मने क्षिते । यो वा मूक वे कर्मणा य नोदसी मर्तौ दितरायिषातो र्वस्याः पतिप्रभु
काति कथिते पर्मणाः स्मृति सुबोः स्मृति सुबोः स्मृति सुबोः स्मृति सुबोः स्मृति सुबोः स्मृति सुबोः स्मृति सुबोः
सी प्लुतं च वाप्यता वभा । उर्वी पृथ्वी संतु वृक्षे पु नो क्षिते ते वृक्षे प्राप्ते सुमृति सत्यं मधुपुष्पे प्रावापयि
वीर्मि मिहता मधुपुष्पे मधुपुष्पे मधुपुष्पे मधुपुष्पे मधुपुष्पे मधुपुष्पे मधुपुष्पे मधुपुष्पे मधुपुष्पे मधुपुष्पे
वीर्मा । उर्मा नो नो र्व पृथ्वी विवृतां विवृतां विवृतां विवृतां विवृतां विवृतां विवृतां विवृतां विवृतां विवृतां
का सानि वाकं न विमृशे स्मृति वृता ॥ १०४ ॥ उउ प्लुतं च वाप्यता वभा । उर्वी पृथ्वी संतु वृक्षे पु नो क्षिते ते वृक्षे प्राप्ते सुमृति सत्यं मधुपुष्पे प्रावापयि
प्लुते न पाप्मा स्मृति वृता मधुपुष्पे मधुपुष्पे मधुपुष्पे मधुपुष्पे मधुपुष्पे मधुपुष्पे मधुपुष्पे मधुपुष्पे मधुपुष्पे मधुपुष्पे
मधुपुष्पे मधुपुष्पे मधुपुष्पे मधुपुष्पे मधुपुष्पे मधुपुष्पे मधुपुष्पे मधुपुष्पे मधुपुष्पे मधुपुष्पे मधुपुष्पे
प्लुति स्वस्ति नो नो र्व पृथ्वी विवृतां विवृतां विवृतां विवृतां विवृतां विवृतां विवृतां विवृतां विवृतां विवृतां

श्री कृतः उवाच देवः खलु तां मुनिनां पतिप्रतिपद्यमानस्तत्तु श्रयोद नुस्मृते मंडकिं खसाद्युर्व सुवति
पुत्रि कामः उवाच या उपवृक्षे वका युक्तिं व्यापयति सवता सुप्रतीका दिवो नो द्यौः स्य उरु तत्पुत्रिका अत्र नमस्ततस्तु
कविर्देवः कामः अस्मिन् वितर्कममुं देवः पुदे देवैः कामः अस्मिन् स्यावीः कामः अस्मिन् स्यावीः कामः अस्मिन् स्यावीः
वामतां स्याम ॥ १०५ ॥ इति श्रीमामादित्योऽष्टादशोऽध्यायः ॥ अथ वामतां स्याम ॥ १०५ ॥ इति श्रीमामादित्योऽष्टादशोऽध्यायः ॥
वामतां स्याम ॥ १०५ ॥ इति श्रीमामादित्योऽष्टादशोऽध्यायः ॥ अथ वामतां स्याम ॥ १०५ ॥ इति श्रीमामादित्योऽष्टादशोऽध्यायः ॥
वामतां स्याम ॥ १०५ ॥ इति श्रीमामादित्योऽष्टादशोऽध्यायः ॥ अथ वामतां स्याम ॥ १०५ ॥ इति श्रीमामादित्योऽष्टादशोऽध्यायः ॥
वामतां स्याम ॥ १०५ ॥ इति श्रीमामादित्योऽष्टादशोऽध्यायः ॥ अथ वामतां स्याम ॥ १०५ ॥ इति श्रीमामादित्योऽष्टादशोऽध्यायः ॥
वामतां स्याम ॥ १०५ ॥ इति श्रीमामादित्योऽष्टादशोऽध्यायः ॥ अथ वामतां स्याम ॥ १०५ ॥ इति श्रीमामादित्योऽष्टादशोऽध्यायः ॥
वामतां स्याम ॥ १०५ ॥ इति श्रीमामादित्योऽष्टादशोऽध्यायः ॥ अथ वामतां स्याम ॥ १०५ ॥ इति श्रीमामादित्योऽष्टादशोऽध्यायः ॥
वामतां स्याम ॥ १०५ ॥ इति श्रीमामादित्योऽष्टादशोऽध्यायः ॥ अथ वामतां स्याम ॥ १०५ ॥ इति श्रीमामादित्योऽष्टादशोऽध्यायः ॥
वामतां स्याम ॥ १०५ ॥ इति श्रीमामादित्योऽष्टादशोऽध्यायः ॥ अथ वामतां स्याम ॥ १०५ ॥ इति श्रीमामादित्योऽष्टादशोऽध्यायः ॥
वामतां स्याम ॥ १०५ ॥ इति श्रीमामादित्योऽष्टादशोऽध्यायः ॥ अथ वामतां स्याम ॥ १०५ ॥ इति श्रीमामादित्योऽष्टादशोऽध्यायः ॥

[illegible]

खाकं गोति समना व गत्वा । इषु पिः सः काः पतना नरु सर्वाः पुमे विन धो क य नि व सु
 तः ॥ १॥ ॥ न ये नि मं न य ति वा कि नः पु नो य त य त क म य ते सु पा न यिः । क ति रु नां म दि मा न
 प ना य त म नः पु र्वा इ न य छं ति न र म यः । ती व न्न यो वा क्त व ते व र्ष पा ण यो र्वा न ये तिः सु
 द वा क यं तः । सु व क्त मं तः प्र प दै न म त्ता व क्षि णं ति र क्तु र न प क यं तः । न यु वा द नं रु वि न स्य ना म य त
 लुं पु नि क्षि त म स्य व र्म त त्वा न यु म प र्वा म स र्दे म वि र्वा द्वा व य म् म न स्य म नाः । सु पु षं स र्दः पु
 त र्मे व यो धाः कृ ष्टे क्षि तः रा क्ती र्वां तो ग ती नाः । इ त स्ये ना इ षु व ल्ना क्त म धाः स त्ता वी न क्तु न वो वा त स्य
 काः । द्वा क्त म्मा स्यः पि ते नः स्यो म्मा स्यः स वे नो म्मा वी प धि वी क्त ने रु स्य । पु षा नः पा तु उ क्षि ता ई त
 ई व धो न म्मा कि ने क्षि प र्वां स री रा ता ॥ १० ॥ सु पु षं वि स्ये म्मा गो र्मा स्य ता ई तो गो तिः स नं धा प त
 ति व सु ता । य तु न नः स नं वि व इ र्वां ति त त्वा स्य म्मा मि र्वाः स र्म यं स न । न क्ते प र्वा ई द्यु नो र्मा त
 व र्त न स्य नः । स्यो म्मा क र्म वी तु नो र्दि तिः स र्म यं स न । म्मा क प ति स्य नै षा क्त प न्ना उ प क्षि म्मा
 ते स्य र्वा क्त म्मा वी तु नो र्दि तिः स र्म यं स न । म्मा क प ति स्य नै षा क्त प न्ना उ प क्षि म्मा

मानः। दुस्तु प्रोविस्वाव्युना निविहानुमानुमांस्वपविपातुविस्वतः। आलोकायाउत्तसीष्मिष्टो
यस्याः। अयोमसं॥३५॥ चर्मनानेतस्य३५॥ वैदेको बुद्धमः॥७॥ अर्कश्यापनोपतनान्वेबुद्धमस्यिते
गच्छामितान्नपश्यामासीष्टांकवुनोर्द्धिषः। यत्तन्नागाःस्वपतंतिकुम्भावाविहिस्याईवाततानेवुद्धा
गस्यातिनदितिः। राक्षस्युविस्वाकुराक्षमिहनु। मर्मति तेवर्मतागहाइयामिस्तोर्मस्तु। नानामते
नानुवस्तां। उनेवनीयोवतुगस्तैरुणोतुक्तयंतत्तातुदेवामंतु। योनस्वोअनातोयस्वनिष्टोकिपा
स्यति। देवास्तंस्वैर्दुर्वुद्धावर्मममांतन॥७॥ योनस्वःपायवर्मनश्चुप। पायवर्मिःवर्मादेवताअ
तुष्टुष्टः॥ अग्निनोवस्मिष्टोअग्निविनाह। वस्मिष्टनभिःअग्निदेवताविनाहृष्टः॥३॥ इतिषममंउल॥ श्री
अग्निनोदीपितितिननातोर्द्धितैयुतीकनयंतप्ररास॥ पुनेहरींमृदपत्तिमय्यु॥ तमग्निमस्येव
स्वोन्मंवाव॥ ह्युप्रतिवक्तुअवस्तेकुतस्विना॥ इकांयोयोइमज्जास्यनित्यः। इतंयेवप्रेधोअग्नेदीहि
पुनेनेर्द्धस्वयास्तुमार्गिविष्म। त्वा॥ रास्वतुपयंतिवाक्काः। प्रतेस्तमयोमिष्टोवनुनिःस्ववीनासःरतो
उव॥ तममंतः। यत्ताननेःस्यमास्यतेस्तुक्ताताः। दानो॥ यमग्नेपुष्टाच्युंस्ववीरंस्वपत्त्यैस्वदस्याप्ररा

स्तः। नयः यावत्तत्र ति या तु मा वा नु ॥ ७५ ॥ उपयमेति युवतिः सुत्रं गोपावस्थौ कृविष्णुतीप्तादी ॥ उपस्थेन
 मन्मतिर्विष्णुः विस्वाग्ने पशुनातीत्येति स्तर्षोति न इहो कुरु यः। प्रनिष्पन्नः वातयः स्वाधीवांश्चा
 यस्ते अग्नयुते अनीकः वस्त्रं मृगं कुहिर्द्वयः पार्वकः ॥ दोनं एति स्तुवयेति रुद्रः स्याः। विद्येते अग्रे ते हि ने अ
 नीकुं मर्ताननः पत्नी स्याः पुत्रता ॥ उतो न एतिः सुमना इह स्याः। इमे न रो वतु रु तौ सुखं न विस्वाग्ने
 देवी नृति स्तुमायाः। ये मे पियं पुनयंत प्रयुक्ताः ॥ ७६ ॥ मा उने अग्रे निर्वणमनूपाः। मा रो पस्थो वी नृता
 पर्वताः। सुमावती पुत्र्यः सुत्रं च मस्वा विष्णुं पुत्र्याति च सुत्रं प्रकाशं तं स्वपुत्रं रुद्रं नृः। स्वर्गमनारोष
 स्थावावधानः। पादौ नो अग्ने नृस्यो अग्रे शान्तादिधुते अनेत्र पो अप्पायोः। त्वयुका पतना सुत्रं नृति
 ष्याः। स्त्री नृमी नृत्वा सुमा नृत्वं वा क्रीत नृयो वी लुपातिः। स्वर्गस्य पाया अग्रे नो स्य मेति स्त्री नृमि
 । यो वै नृयुतो नृति पति स्य मे धान् मं रु स्य उ नृयुता नृस्युता स्यः पर्विव नृति वी नृः ॥ ७७ ॥ अयं स्यो अ
 मि ना उतः पुत्रता यमी रानः स्यामि धे रु विष्णु नृ। पत्रिध मे त्वं धु ने सुकोता। त्वे अग्रे अग्रे नृवता नृति
 नी स्याता सुमा रुद्रं यामि नृत्वा। उता रुद्रं वतौ वरु नृमि येथे। इमो अग्रे वी तत मा निरु वार्क स्यो व

क्रिदेवतातिमह। प्रत्तिनदीः सुतीति कां। मानोऽज्ञमेवीरतेपनीताउकस्तेमेतयेमानोऽज्ञस्यैमा
 नः क्रुधेमानुः क्रुधेतावोमानोऽज्ञमेमावन्त्याकुपुः क्रुधेनुमेवक्रोधात् मूठकं सापित्वं देवमप्यवज्ञः
 सुपुः ६। नातोऽज्ञामोतयाः स्मृताते सुयं पातस्वस्तिः सदानः ॥ ७५ ॥ तममे सुदको नृपवर्षं दृक्पु
 तीत्युतोऽज्ञस्योद्विष्टा मा त्वेयसातनये नित्याभापुः कावीनोऽज्ञमनये विदीप्तीव। मानोऽज्ञमे
 उरुते सवे पुदेवे धे सुप्रिपुष्वोवः। मातेऽज्ञस्मा रुमिपुते मातिरु वर्ये सुनोऽज्ञस्यो नर्यं त
 समतोऽज्ञमे स्वती कनेवान सरेयसा रुकोतिरुवः। लदेवता वर्युवर्तिरुपातिराः सुनिनयी पृथगा
 नृपति। मुकोनोऽज्ञमे सुवितर्य विहाः रुमि सुनित्ता सावकावतः। कोन वयः स्य रुसावन्मदे मावद्वितासु
 आशपा सुवीरः। नुमे वक्रोधात् मूठकं सापित्वं देवमप्यवज्ञः सुपुः ६। नातोऽज्ञामोतयाः स्मृताते
 सुयं पातस्वस्तिः सदानः ॥ ७५ ॥ क्रुधेवनः सतिधममेऽज्ञा तममे सुदको नृपवर्षं दृक्पुः ६। मा सुकोऽज्ञ
 नाहुतः पुत्रा। मा सुनेऽज्ञमे निर्पामु नृपाः ७५ ॥ अमे ति सुवतिः सुद र्धम मिन्नो दीपितति नृपाः ॥ नव
 स्याप रापत। सुपुः ६। वसे मणोऽज्ञातः ॥ ७५ ॥ तिष्ठं न सति वाकिर्गः पुनः। क्रुधुते स्ये पत वति प्रतीक।

[illegible]

[illegible]

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

तौ वा वराणां निरः सवः देधु नै यो प्यु ता रीः । पतिः क ह्नी नां न यथै त स्त्री तां वै रवान न भुष र्णां के तु म द्नी ।
 ॥ ८ ॥ दे म सु य ० व र्ण वां न य म् नु नु न्ति ते मित म यो कृ पं त । तं इ र्पु ० नो क र्णो अ भ ज्ञा कृ त उ ज्ञो ति
 कृ न यं ना य थि । स ज्ञा य म नः प न्मे यो म न्वा यु न पा यः प र्व पा सि स्य अः । तं नु वं ना कृ न यो न ति कृ न
 प त्ता य क्ता त वे दो इ र्पु ० न । ता म्मे म्मे इ प्मे नं य स्य वै र्वा न न भु म ती क्ता त वे दः प्ता ना यः प र्व
 स्थि वि र्व वा न पृ थु स वो द्वा रु षे म त्ता मि । त नो क्ता मे म् प र्व द्वाः पु त्रु ० न्ति नि वा कृ न्ति नु तं यु व स्वा वै र्वा
 न नु म कि नुः र्म य कृ त इ ति न मे व स्य तिः स क्को षाः ॥ १ ॥ वि स्य ना क्ता स्य न स्य प्र र्ण स्थि पुं सः कृ णि ना
 म् नु मा र्ग र्ण ॥ ३ ॥ इ र्पु ० व र्ण त व र्ण र्कृ ता नि व दै र्ता नु वं इ मा नो वि व कि । कृ वि कृ तु थ स्थि ता नु म र्द
 दि न्ति र्तां रा क्ता नो द स्योः । पु न् ० न स्य म् ति ना वि वा स्ये मे व ता नि पु वा मि ना नि । न्मे कृ तु ० इ यि
 नो म् पु थ वा वः प ता ० नः स्य ० स्य द्वा ० न्ति य क्ता कृ त व र्ता न्ति ० न्ति वि वा य पु र्व र्व कृ न प न्ता अ
 य कृ त न । यो म् पा री ने त म् ति म र्द तीः प्रा री र्कृ ता नु त म् र्ता री तिः । त म् र्ता नु व र्दो म् ति र्ता न्ति प न
 न त ० म् म त ० प त्ता नु न्ति । यो इ र्पु ० ० कृ त न म य इ थ स्ये यो म् ति य प न्ति नु य स्य र्कृ ता न्ति । स्थि ति उ थ्ता न

॥१०॥

उषोयश्चोऽभिर्विशंरुक्तेवलिरुतःसंकोतिः। यस्मिन्मनुष्यविश्वेकनास्यरवेष्टस्यः। सुमतिः। तिर्जमाणाः।
 वैरवान्नोवनमानोवनंमानोपस्थोपाश्रिः। रंसापिलोपुपस्थः। आदेवेदेदुध्या७२वसुतिदेरवानुनउ
 रितारुर्धस्योपाश्रिः। मुडादंवादापनंरुपाश्रिः। इदि३वभापुष्टिवाः॥१॥ प्रवोदेवविह्यरुपाश्रिः।
 शिंमखुंनकाकिनंकिपुनमौतिः। तवीनोपुतोकाधनस्यविह्यरुपाश्रिः। देवेविदेष्टितुः। आवाप्योपुष्टि
 ३३। अस्मन्नुस्वाभंइदेवानां। सस्यंरुपाश्रिः। आस्यानुपुष्टिः। नदिपुनस्यविह्यरुपाश्रिः। कर्त्तुविश्वमुपुष्टिः।
 नि। प्रादीनोपुष्टिः। सुपितुकिबुद्धिः। जीप्तालेपुष्टिः। नीप्तेनकोता। आमातराविश्ववीनेदुवानोयतो
 यविह्यरुपाश्रिः। पेस्योपुष्टिः। सुयोमधुनेनेपुनंरुपाश्रिः। तमानुपाश्रिः। विवेतस्योपुष्टिः। विह्यरुपाश्रिः।
 तंउतोतो३३। अस्मन्नुस्वाभंइदेवानां। सस्यंरुपाश्रिः। आस्यानुपुष्टिः। नदिपुनस्यविह्यरुपाश्रिः। कर्त्तुविश्वमुपुष्टिः।
 मोखुयन्मिपुष्टिः। विह्यरुपाश्रिः। आमातराविश्ववीनेदुवानोयतो। सुपितुकिबुद्धिः। जीप्तालेपुष्टिः। नीप्तेनकोता।
 नयुक्तिर्तुन। प्रयेदिरुप्तिः। नतरोपुष्टिः। आमातराविश्ववीनेदुवानोयतो। सुपितुकिबुद्धिः। जीप्तालेपुष्टिः। नीप्तेनकोता।
 शादीसाउपुष्टिः। नतरोपुष्टिः। आमातराविश्ववीनेदुवानोयतो। सुपितुकिबुद्धिः। जीप्तालेपुष्टिः। नीप्तेनकोता।

15

[illegible]

गो⁺

शिविर्वर्यरुविषःकुतस्मात्कुतुंयस्मात्वर्यवोक्तुपंतायादेवाइधनेयवावादीःस्मात्तेवदकेवि
 नस्माभदेवानि-इहोहास्वइहमाइयंतांइमंयुक्तुविदेवेषुदेहिपुत्रंपातस्वस्थितिःसदा
 तः॥१०४॥स्मार्गंममदामनस्यायविष्णुंयोदीरायुजमिहःस्वर्गुणोःशिवेत्तनुंनोदसीञ्जितनृकी
 स्वादुतंविखतःपुत्रेवं।समंक्राविरवाउत्तानिष्पाद्यानमिस्वदेइमंक्रातवेदाःसमोःनक्षिपुक्रिता
 ईवशाइस्माञ्जगत्तुतनोमप्येनः।व०व०उ०ग०त०म०लो०न०मे०वा०व०ध०त०म०त०ति०व०क्षा०ग०वे०व०सु०
 य०ग०ना०नि०स०नु०यु०य०पा०त०स्व०स्थि०तिः०सदा०न०॥१०५॥प्रा०म०ये०वि०स्व०रु०पि०ध०र्य०रु०नु०प्रे०म०म०धा०ति०त०न०
 ध०त०ने०रु०वि०र्त्त०व०र्त्त०वि०षी०गानो०वै०स्वा०न०रा०य०य०त०ये०म०ती०ना०।त०म०मे०रो०वि०षा०रो०रु०न०क्षा०नो०द०सी०
 क्रा०ने०द०स्मि०क्षा०रु०ग०य०मा०नः०।व०दे०वा०श्रु०ति०र०स्ते०न०श्रुं०रो०वै०स्वा०न०न०का०त०वे०दो०म०हि०त्वा०क्रा०तो०
 य०इ०मे०नु०व०न्ता०म०र्यः०पु०रु०नु०पा०द०र्यः०प०वि०क्षा०।वै०स्वा०न०ब०र्त्ता०गे०वि०द०मा०नु०यु०य०पा०त०स्व०स्थि०
 तिः०सदा०न०॥१०६॥स्मि०धा०क्रु०त०वे०द०र्य०दे०वा०य०दे०व०दु०ति०तिः०रु०वि०र्त्तः०नु०क्रु०रो०वि०षे०न०म०स्वि०नो०वु०य०
 हो०मा०म०यो०वु०य०ते०न०मे०रु०मि०था०वि०धे०म०वु०य०दी०रो०म०रु०श्रु०ती०रु०क्रु०त०।वु०य०पु०ते०ना०ध०न०स्वा०

॥१५॥

मोतवृथं देवदुर्विषा न इ सो रे । आनो देवेति उपदेवदुतिममैया दिवषं कृतिः कृपातः । तुत्तं देवाय दारीत
 स्था मय्युयं च तस्य स्तितिः सदा नः ॥ १५ ॥ उपस्यो यमी नृपमा स्यै कृतादुविः यो नो नो ईशमा
 यः । यः पवनं पृथिवी नृतिनिष्ठस्यादमोदमे । कविर्नृपं तिस्रु वीर्यो नो वेदो अमाती ममीनं हनु विस्वतः ।
 उता नृमा न्नातः रसः । न वुं नृसो मी मी यै दिवः रणे नार्थ की कनः । वस्वः कुविद्वन तीनः । स्यादा य स्य
 स्तियो रसो नृति वीन वेतो यथा । अथै स कृत्वा सरो वतः ॥ १५ ॥ स्ये मां वेतु वषं कृतिममिर्कृषत नो
 गिनः । लोके मो कृत्वा वरुनः । निबान क्का विरत ते मम नृदेवधीमदि । सुवीनं मम अया कृता कृषे उ स्वस्वदीदि
 दिस्व मय्युयं वृथा । सुवीनं स्वमम यः । उप त्वा स्या त ये न नो विधा स्यो यं तिधा तितिः । उपात्त ना स्य कृत्वा
 ती । ममीनं मी स्ये पतिरु कृता विने मत्तः । सुविः पाव कृती मः ॥ १५ ॥ स्ये मां नाथा स्यात्त ने रानः सद्यो
 यको । त ग र दानु वार्थ । त्वमं ग्रे वीन वृत्तौ देवस्य स विता तमीः । इति स्व दिति वार्थ । अ ह्ये न क्रापो मं दस्यः
 प्रतिष्ठा देव नीषतः । तपि ह्ये नृकर्मो दद । अथा मदीन क्का कृत्वा नृपतीतये । पुर्वत वारा तर्तु क्रिः ।
 वनः पादा रसो दोषा वस्व न प्या यतः । इवा न कृम दान् ॥ १७ ॥ ॥ ए ना वो अग्निं न मस्यो मी पात

110811

अनेतव लुपमिपा लमिअउ तदुर्दिउ विद्याविस्वामी ता० उतदावउरा तीविस्वयंता मुतदे वा० उ० अतमावदेरु। अ
 नेवीदि नुविषा यद्विदेवा० ह्वधुना कर्णुदि क्कातवेदः। स्वधुना कर्नति क्कातवेडा यमदेवा० अमता निप्रयश्रवंस्व
 विस्वकार्यणि प्रवेतः सत्पात व० त्वा सियेने अम। त्वामृतेदधिते कक्का वा र्द० देवा र्णो अमृदुर्दिमानपीतांते
 देदेवा यदा संतस्याम मृदो नो नना विदधइया नः॥१२॥ त्वेदु यत्ति तने ह्वन इ० उ० विस्वा वामा क्का त्वा नो अ
 सवन्ना त्वेगा वः सुउ प्पा त्वे क्का र्वा र्द० वसुदेव यते वद्विष्टः। ना क्के वद्वि क्क नितिः। के वे। वा वद्वि तिनति विउ क्क
 विः स्मज्ज। विराणि यो मप्य वद्वो तिन र्वै र्वा यतः। सिदिदि नये अस्मा न्ना इमा उ० त्वा पस्स धाना र्णो
 अत मां ज्ञानो देव य० तीनु वन्त्युः। अकवी ते प० ध्याना यव नृत्तमा मते सु मता वि० इरा मन्ना ये न० न त्वा
 सु यव स्ये उ० उ० न प० व्रश्मा गि सस्य क्के वस्सि द्वा० त्वामि न्मो गो पति० विस्व क्का क्क न० उ० उ० सु मृति मं त्व ह्ये।
 मां गि० सिदि त्प प्रव्यु ना सुदा स० उ० उ० पा न्ना क्को ग्गु ना ना० रा थ० तं रि म्म मुय य० र्वा न काः रा पंस्वि
 धुना म क्को ग्गु प० र्वा स्तीः॥१३॥ पु० तो न्ना इ० उ० वर्यो य० क्क ना र्वा इ० यो म ह्वा र्णो नि० रि वा र्वा पी वा० सुप्ति वेकु
 त्तां वो उ० उ० वस्व स्या र्वा र्वा यम तन० वि० धुयोः। आ प० क्का र्णो तलान र्णो तन० तालि ना र्णो वि० गि

[illegible]

॥१॥

मास ते के पयो वत नि पतमानः। आधे गवत देकं न कान सिंहां विती देना कप्या न। आवे स्य की वे रमा
 वस्य वि० ३० वा र्य छ वि र्व। तो क न स्य दा र्यो। रा र्वे तो क रा र्वे तो नान थ र्शे ते द र्शो विरुध तो वि द न र्थि म तर्
 र्त्तः सु व तो यः क। तो ति ति ग्मं त स्मि न के दि व क्ति मि० ३। मा व दि० ३० स म ना त ह्य व ह्य प्रा त्ते र० स्य र्व ती
 ता म्प्रा य त्। मा क र्ण स्य वि र्गो को य र्म व र्व व र्णी र्ण ति। क त्तु न र्व र्ण नि। न तं ३० इत्यु म त यो न न र्गोः स्य व द्ने पु
 व डि म स्यो न नु न्नाः। दे व कं वि म्मा म्म मा जं क प्प धा व म्मा ना व रु त धा० व न० ते त्। ७५५ य ये म्मा र्म म्मा उ र्व्वा य
 य नो रा नः रा त यो तु र्व र्ण म्मा ३० न ते तो क र्ण रा र्ण म्मा य ता पो र्णु नि न्नाः सु दि ना क्ति छ म्मा दे न म्मा दे व र्व तः रा
 ते गो द्वा न यो व पु म्मा त स्य दा र्शोः। म्मा र्म न म्मा ये क व न स्य दा न० को ते व र्ण म्मा य र्मो मि ने ते न। व र्ण म्मा यो मा ये क
 व न स्य दा न्ना र्म वि र्ण यः क रा नि नो ति ने के। न्ना र्मो मा प्र धि वि र्णः सु दा र्शो क० तो का य र्ण व र्ण व र्णं ति
 य र्ण र्व को नो र्ण म्मा न नु वी र्ण र्ण र्ण र्ण वि र्ण ता क्ति वि र्ण क्ति। स्य र्ण ३० न स्य व र्णो ग्मा० त ति य्थ मा म्मा य म
 ति रा द्ती क्ति। इ म्मा न नो म्मा न स्य र्व ता नु दि वो दा र्शो न पि त र्णं सु दा र्शोः। म्मा वि र्ण ना ये क व न स्य के तं ३० मा र्ग
 क्ति म्मा क्ति ३० वे यो। ७५५ य र्म म्मा र्म गो र्णु तो न ती म्मा र्कः क्ति म्मा व र्ण ति व र्ण वि र्णः। य र्ण र्व

[illegible]

स्त्रीगुणोत्तमः कविः ३०३ गोकुलके वा यो यस्वपायां ब्रह्मिणे नयेति यत्क निष्पन्नं कश्चिन्मुनिवत्पदं
नमवोति स्थातान्द्रुपनरयो मरुत्तवक्रकतावतमिन्द्रः सुकुवानः प्रावीरवीरो क्वितानं सुती कर्तुं
रास्ये मरुकाटं लोकं कृतावस्यु मरुतामरुत्तवक्रकतावतमिन्द्रः सुकुवानः प्रावीरवीरो क्वितानं सुती कर्तुं
पुमपील्यः कर्ता ३३३ एतन्नास्वो कृतावस्यु मरुतामरुत्तवक्रकतावतमिन्द्रः सुकुवानः प्रावीरवीरो क्वितानं सुती कर्तुं
युतविषीतिस्तु विष्णुः निवक्रमिन्द्रो क्वितानं सुती कर्तुं मरुतामरुत्तवक्रकतावतमिन्द्रः सुकुवानः प्रावीरवीरो क्वितानं सुती कर्तुं
नानावृत्तिः नानीनर्यस्तुवा प्रयत्ने नानीनर्यस्तुवा प्रयत्ने नानीनर्यस्तुवा प्रयत्ने नानीनर्यस्तुवा प्रयत्ने
विष्णुत्वे पदे कनो नरेषु कनो यो मरुत्तवक्रकतावतमिन्द्रः सुकुवानः प्रावीरवीरो क्वितानं सुती कर्तुं
नायनृतपावतेकाः यद्विद्रुवो क्वितानं सुती कर्तुं मरुतामरुत्तवक्रकतावतमिन्द्रः सुकुवानः प्रावीरवीरो क्वितानं सुती कर्तुं
स्त्रीतु नमवोति स्थातान्द्रुपनरयो मरुत्तवक्रकतावतमिन्द्रः सुकुवानः प्रावीरवीरो क्वितानं सुती कर्तुं
यद्विद्रुवो क्वितानं सुती कर्तुं मरुतामरुत्तवक्रकतावतमिन्द्रः सुकुवानः प्रावीरवीरो क्वितानं सुती कर्तुं
मरुत्तवक्रकतावतमिन्द्रः सुकुवानः प्रावीरवीरो क्वितानं सुती कर्तुं

॥१७५॥

ताया इयेथास्मानो वयोमप्यवानो कुर्वन्ति। पश्चात्पुनैकत्रिते स्मृता क्लियं पातस्वस्थितिः सदानः ॥१॥
 अस्माविदेवंगेभ्यः कृमिंशो नस्मिन्निःशो कृन्तुं मुमोवा। दोर्धामस्यैस्वर्यस्वाग्नेर्दोर्धामस्योममं पस्यो
 मर्देण। पयंतिय रुं विरयेषु वृद्धिः सौममादौ विरयेषु प्रवावः। नृत्तिविद्यंते यरासौ गजादा पुनउपवप
 वदोवपणो नृपावः। त्वमिंश्च स्मर्वितवा मपस्कः पवित्रिता मदिनायुन पुदीः। तद्वावके मुय्यो ॥२॥ नथेना
 नेकं ते विस्वा क्लिमातितीषा। तीमो विष्वा वेष्वायं येति नेष्वा मपां स्विस्वा नयंति विद्वान् ॥३॥
 उनेकं कृष्णाणो विदुषो विवृद्ध स्तोमदिना कृष्णा न तया न वे ॥३॥ उकु कु बुनो निवं नरा विष्वा वेद्वान् ॥
 सरोधदयो विष्वाण्य कृतो मादिरन वै वा कर्षणं नृत्तिनः ॥४॥ अस्ति कुर्वे ॥३॥ नथं नते विष्वा
 मिमानं न क्रांति। स्येनादि वृत्तं रावस्था कृप्यं नरा तु न तं विवि ॥५॥ अथाते। देवास्ते अश्रुयं यं पुर्व
 तं कृत्वा रमामिने स्यदा स्वि ॥६॥ शो मप्या निदय ते विषम्ये ॥७॥ वाक्कस्य कोटु वंत स्यातौ। की निस्वि
 धिवा मवस्ये कुदा वे रानमिंश्च सौ तं गस्या तु नैः। अवा वतु स्यात मुते अस्थे अति कृत्वा वितो स्वा
 वनुता। सस्या यस्त ॥३॥ विस्वदस्याम न मो वृथा सौ मदिना तं तु वा वं नृत्तिमाते वस्या स्यामी के ॥८॥

तीतिमयेविशेषांरावांस्ति। एतत्तु त्वयत्तयायात्रुषेभारमनादयेमुपवा नोक्तुनंस्ति। वरुकीतुवैकविदेक
 सुखाक्रिययांपीतस्वस्तिस्तिस्तिनः॥४॥पितीसोममिंद्रमर्तुव्यायतैसुषावेदयखादिः। सोतुर्वाड
 त्ताः। सुयतोनावी। यस्तेमदोयुक्तास्वातुनस्तिमेनवृत्तात्तिस्यस्तिवदंस्ति। इत्येतामिंद्रवतुवसोममर्तुवोभा
 सुमेधवृत्तममेमांयांतेवसिंमोस्यतिप्रराक्ष्म। इमावृत्तोस्यधुमादेकमरवा। सुधादवीवपिचानस्या
 डेवोधाविपुण्यादेतोमनीपा। कृष्णउवांस्यतैमास्यवेमा। नतेमिनाकावेमर्ष्येतुनस्यानस्युत्ति
 मस्युयस्यवृद्धावृत्तादेनामस्ययरोविवक्ता॥५॥नुविद्धतेसर्वेनामानुषेषेषुतुविमनीषाद
 वतेतामिद्र। मानेस्यस्यममपुवृक्तोक्तः। तुत्तोइमासर्वेनास्युविस्वातुत्तावृक्ता। विविधना
 कृत्तामेति। त्वंनृत्तदकोविस्वधास्ति। नुविद्धतेमान्मानस्याइरमोइरनुवर्तिमद्विमानेमुशान
 वीर्यमिंद्रतेननाथः। योवृचुवृषमोयेवृत्ताइवृक्ता। विद्धयंतुविधाः। इत्येतेस्यतुस्यस्या
 सिवांस्युयपातस्वस्तिस्तिस्तिनः॥६॥उडुवृक्तायेनतसवृत्तेइंस्युयेमिंद्रयावस्तिमिमा
 योविस्वाजिसर्वस्यातुतानोपस्येतामुशवतोवरी। सि। अयामिप्पोषइइवकीमिद्रनृत्तातइडु

11056P

द्विविधावर्धनसोमर्तथाः। एवान्तरं दुर्वायस्मिपुष्टिप्रतैमदीं सुमतिं वैदिकमप्रवृत्तिमप्यवज्ञाः सुवी
 नां युयं पातस्यस्मितिः सदा नः॥ १॥ अतैमदं रं दोर्त्युत्पन्नमनवायह्यमनंतस्येनोः। पतीतिदि
 श्चुन्नस्यदादो मतिमनो विवृडाध्वंकाचीत्तानिउर्गं रं स्यामितीति न नित्येनोमतीसोममति
 क्तावेतंरांसीकणुदितिनिहो नानोतनसंतनं वस्तुना। अतं तैसिचिनुतयः सुगत्स्यस्यसंसात
 तनातिरेसु। कृदिवर्धनुषोमर्तस्य स्ये सुस्यमप्यनं वपेदि। तावतोदीं उक्तवैसास्ति तावतोवितुः
 सुननातो। विस्वे रं नितविषीवउभा उक्तैः कणुध्वंकाचिबो नमोः। कृष्णा एते कर्तव्ये वा यरुपमिं दुस
 दौरेवर्धुतमिद्यानाः। स ता कृपिस्तु नना सुनवत्तावयंतुताः सनुयाम्वाकं। एवान्तरं दुर्वायस्मिपुष्टिप्र
 तैमदीं सुमतिं वैदिकम। र्यं विवृमप्यवज्ञाः सुवीनां युयं पातस्यस्मितिः सदा नः॥ १॥ नलोमं रं
 मर्त्यतोममादुना द्रुता। गोमप्यवानं सुतासः। तस्मादुं कथं नयेय कुरु कौपं नुवन्नवीयराणा
 वमर्था नः। उक्तयुक्तयो सोमं रं ममादनीयेनीयेमप्यवानं सुतासः। यदीं सुवाधः पितनुं नपु
 ताः स्यान्तर्मा अर्वस्येवते। वक्रान्ता क्ताव नुतमन्तायानिबुवतिवैयस्यः सुतेषां कनी निव

पवित्रैः समानो निर्मा महेषु ३३ः सुखी । एवातमा सुतये ॥ ३३ ॥ ३३ को वित्तकृत रति मृप्यानी ॥
 मिथ्य स्तुते तु तयो यस्मै पुकी रस्मै लडा गिरा खत प्रिया गिरा एवाव स्येष्टा ३३ मुत्तये नृक शीना द्युतं सु
 ते ग्यागता स्य रुस्मिना उपनो माप्ति वा को न्युव पात सुस्मितिः सरीनः ॥ १०० ॥ ३३ नो ते मयिताम
 वं ते सत्तायां युनक्तै थियस्ताः । नुनो नृपाता राव सख का नमा गोमति पुके संकाव नः ॥ ३३ ॥
 ॥ १०० ॥
 ष्मो मप्यव ते मस्ति शिवाये स्मि प्रउ कुत नृपः । त्व दि हृदया मे प्यव द्वि तैता अपा वपि प विवत ननाथ ॥
 ३३ नो वाका नृ गत र व ति ना मधि नृ मि विषु नृप ॥ यद स्ति । ततो ३३ (तदा र) ये वरु निरो ३३ य उप स्तु तस्व
 ३३ वरु नि वि ३३ नो मप्य वा स कुती दानो वाय नृ मते दुती । न नृना यस्मि ३३ गिरा पी पाय वाम न
 नो मति वीता रा सि नः ॥ ३३ ॥ ३३ ये व वरु धान मा ते म नो वरु मा म मप्याय । गो मरु खा व ३३ य
 वरु तै थु य पा त सु स्मितिः सरीनः ॥ १०० ॥ ३३ नो प या दि विद्वान व वि ते द व यः संत यु क्तान
 विखे वि वि व वि व व त मती नृ मा कु मि हृ ॥ ३३ ॥ ३३ वि वि ख मि द्वा च वं त ३३ म फि मा वी नृ नृ मा तपा
 सि रा व रि नृ वी ता ॥ ३३ ॥ ३३ य व ३३ ३ थि ये रु स्ते ३३ य ३३ नः सं कृ ता क नि हा अपा नृ ॥ त वृ प्र ती ती ३३

॥ १०० ॥

उवाचा ह्येयान्न नो रंशानिनेयमदेन ता यराव सोदि कुरुते तु उक्तिं वृत्तु कि न रिखेत् । एति न इडां ति
 रंशान्न उर्मिवा सोदि कुरुते यः प वंते । अतस्त्र शोभने तमनेनाश्व वृत्ताव न । गोमायी मसादा वोरे मेदि
 ३० मप्यवानमेन मद्रो नायो नाथ सोय ददं नः । यो ज्ञाव तो ब्रह्मा कृतिमावैशोयुयं पा तस्व स्थितिः सदा
 नः ॥ १०१ ॥ अयं सोम इदं इत तं सुखमातु प्रयादि निवस्त दोकाः । पिवा वृष्टं स्रुयु तस्व वा नो रंशो
 मप्या निमप्य व नियानः । ब्रह्मा नीनु ब्रह्मा कृतिं कृपा गो वशिनी नोद न तिया कुरुते । अस्मिं सुषु
 सवने माद यस्वो पृथ्वी गिराणा वश्मानः । कार्ते मय्य नं कृतिः स्रु क्तेः कदा नुन ते मय्य व रंशो
 मा पवस्वो मती नात तने त्वाया था मद्र इराणा वोद वेमा । ३ तो प्याते पुनृ प्या ४ इराणा योथा ५ व
 पामर एत दृष्टी गा । अथा दं तामप्य व अक्रो द की मि त्वं न इडां स्रुयु म तिः पिते व । वोरे मेदि ३
 मप्यवानमेन मद्रो नायो नाथ सोय ददं नः । यो ज्ञाव तो ब्रह्मा कृतिमावैशोयुयं पा तस्व स्थितिः
 सदा नः ॥ १०३ ॥ अतो रंशो वराव सायादि सुषु त्त वा वृथ इना यो मसा मद्रे न स्मा य न प ते सुव
 कुरुमदि कृता य पौ रंशा य युवा द वं त उ त्वा द वा व व वित नु पु रु नाः स्रुयु स्थि सा तो त्वं व

[illegible]

1091

द्वाभ्यं कं बोधवितानं चानामस्माकं सुननात्ता ॥ उदिदेस्व विस्तरे शोचनं न क्रियते ॥ य इन्द्रोदनिवां न
 देत तितं विद्यो न कं ददाति सोमिनी मंतमसर्वं सुषितं सुषेरासुं र्थातय क्रियेष्वा ॥ पुत्री स्व न प्रक्षितय स्रवंति
 तं य इन्द्रो कर्माणा तुवंत ॥ कस्तुर् इत्वा वं सुभाम तौ इध र्षति स्रधा इतै मप्प वृन्ना ये दिवि वा क्री वा कं क्षिपा स
 लि ॥ मये न र्मा वल रुतौ सुवी र्य ये र्दे ति प्रिया वरु ॥ तव प्रतीती रुय स्व सु नि ति दि र्वा त ने मा उ नि ता ॥ १० ॥
 तवे दि इव भवं सुखं पुष्पा सि मे धम ॥ स्व ता वि र्वे स्य च नु म स्ये ना क स्यि न किं स्या गो र्वा व ते त्वं वि र्वे स्य थ
 न रा क स्यि सु तो य इ ॥ तवं त्मा रुयः ॥ त वा य ॥ वि र्वे स्यः पुत्रु दु त पा र्थि वो व स्यु न मि ति रु ते ॥ य दि इया वं त स्व
 मे ता वं रु मा र्तीय ॥ स्तो ता न मि दि धि ये य न रा व स्यो न पा प्ता ये ना सी य ॥ रि कं य इ म रु य ते दि वे दि
 वे ना य शा कु रु वि दि दौ ॥ न दि त रु म म्प व न्ना प्प व स्यो न स्ते पि ता व न ॥ त न ति नि र्वि षा स ति वा कं
 पु र्वा य का ॥ मा व इ इ पुत्रु दु तं न मे नि को ने मि ते र्से व स्यु र्दे ॥ ११ ॥ न उ शु ती म न्ते वि र्वे स्ये व स्यु न से
 र्थ तं न सि र्वा रा सु रा क्ति नि म्प वं तु त्मा मा व ते दे स्त य ता र्थ दि वि मि ति त्वा रु न नो नु मो र्वा इ व धे न वः ॥
 इ रा न म्प रु गे तः स्व र्दे रा मा र्ता न मि इ त र्म्यु र्थः ॥ न त्वा वा म्प नो दि को न पा र्थि वो न क्रा तो न रु नि

व्यते। अस्वायंतो मय्यवन्ति उवाचि नो गृकंते स्वादु वामदे। अतीषु तस्मात्तवे उवाच यः कनीय
 सः। पुत्रवृद्धिर्मय्यवन्ति नारस्तित नैतवे वदकाः। पनीतु दस्वमय्यवन्ति मित्राः। ह्युवेदो नो वस्तु कथि
 अस्माकं बोधवित्तमं दायनेत वा वृथः ससीना। ३३ उवाच न आतेन पिता भूते ततो यथा। सिद्धातो
 अस्मिन्ने उवाच यामे निहृवा ज्योतिर्न सीमदि। मानो असीता वृद्धिर्नो उवाचो ३४ मासि वारो
 आवेदं मुः। तस्या वयं प्रवतः सखंती न पोतिरुं न तनामसि। ३५। स्वित्तं रोमादिति तस्के प
 दधिदा। क्रियासो अतिदि प्रमं उः। उतिर्मं बोधे पर्व वृद्धिर्नो नृमै उवाच वितवे वस्तिहाः। उवाचिं मन
 यं नृमै तेन तिनो वै सतं मतिपातं मुमं। पारो अस्मत्तवाय तस्मात्तमा ह्युता निंदो वपिता वस्तिहा
 न्। एवेन कं सिं प्रमेति सता ने वेनु कं लेदमेति कृप्याना एवेन कं दाराना स्ते सुदास्यं प्रावदिंदो वृद्धा
 ता वो वस्तिहाः। ३६। सीन नो वृद्धा तावः। पृथगा मम मकायं न किल विषाय। यद्ये वनीषु वृद्धान
 वेतो उवाच मम दयाता वस्तिहाः। उवाचि मे तं कृत्वा नाह्यता सो दीपयु दाराना स्ते वृत्ता सः। वस्ति
 ह्यस्मात्तु वतः ३७। सीनो उवाच ३८। उवाच ३९। उवाच ४०। उवाच ४१। उवाच ४२। उवाच ४३। उवाच ४४। उवाच ४५। उवाच ४६। उवाच ४७। उवाच ४८। उवाच ४९। उवाच ५०।

ज्ञातवृत्ताश्च तृकार्थः । अतएव प्रपञ्चतावस्थिष्टु आदित्तु नृणां विरोधप्रपञ्चतावस्थाः कृत्वा तत्तु वने पुन
 तस्तिर्यः प्रकाशाशक्तिगोतिनयाः । तयोप्युपस्थित्यस्य त्वेव वृत्तिताः कानविदुर्वसिष्टाः । सु
 स्थेव वृत्तयोः अतोतिनयाः । स्थमुद्रस्थौवमक्रिमागन्तीनः । वातस्थेव प्रकृवो नान्योनस्तोमोवस्थ
 ज्ञातवृत्तवैवः । तद्विज्ञानं रुद्रयस्थप्रकेतैः स्वरुस्थवन्दामुतिराचनं । ति । अमेनततं पत्र
 धिं वर्यतो प्रपञ्चतावस्थिष्टु वसिष्टाः । विदुतोमोतिः पत्रिस्तुं क्लृप्तानां मितावर्जिताय प्रपञ्चता
 त्वा । तत्तु क्लृप्तोत्तै कं वसिष्टागस्तो यत्ता विदुता क्लृप्तानां । ७३ । उतास्तिमेवावपुमो वसिष्टो
 वसिष्टा वसिष्टान् सोऽर्थिक्तातः । इत्युक्तं वसिष्टागस्तै कौन विसेदेवाः प्रकृतेवा ३६० ता प्रकृतु
 तयस्थप्रविद्धाः स्वरुस्थप्रपञ्चतावस्थिष्टु वसिष्टाः । यमेनततं पत्रिधिवसिष्टान् स्वरुस्थः पत्रिष्टु
 वसिष्टः । स्वरुस्थप्रपञ्चतावस्थिष्टु वसिष्टः । उक्तुत्तं स्वरुस्थप्रपञ्चतावस्थिष्टु वसिष्टः । उक्तुत्तं
 ततोऽज्ञातमप्युक्तुत्तं स्वरुस्थप्रपञ्चतावस्थिष्टु वसिष्टः । उक्तुत्तं स्वरुस्थप्रपञ्चतावस्थिष्टु वसिष्टः । उक्तुत्तं
 स्वरुस्थप्रपञ्चतावस्थिष्टु वसिष्टः । ७४ । प्रपञ्चतावस्थिष्टु वसिष्टः । ७४ । प्रपञ्चतावस्थिष्टु वसिष्टः ।

11274

तैशो न यो न वृक्षी वि३ः पृथुवादि वौकृतिवैरुपावत्ता पोजधुनैतीः। आपसि रस्मै निर्वैतपु
 वी वृक्षे पुयु नाम र्म तदु प्राः। आपु र्मै र्था ता अरु नि डोन वृक्षी नि गम कारुः। अति प्रस्था
 ता र्मै म युक्त यानै वृ चम्। ताना दि नो त। ताना स्म म ह्य दि नो ते युक्त र्था त कृ तु कृ ना य वी न उर
 ल्प र्था ह्यनु नी ह्य वितर्तिता न पृथु वी न रु म। द्वा सा मि दे वा अया तु न मे र्था र्थ न ते न धियं र्था
 मि अति वै र्दी धियं र्था ध्व प्र वी दे व वा वा र् कृ तु ध्व। आ र्थ सञ्जा स्ता पा र्थो न दी ना वृत्ता उग्रः स
 द्वा र्थ वृत्ताः। ७५॥ ना को ना स्ता ना पे र्थो न दी ना म नै व म र्मै र्थ त वि र्वा यो अ वि शो अ र्मा वि
 र्वा र्थ वि र्थ कृ तु गो तु र्थ र्थ नि नि ह्यो र्थै तदु अ द्वा म र्थ वा यु यो त वि र्थ र्थ र्थ तु ना अ वी द्वा
 अ मि र्थ वा अ मो ति रे द्वा अ र्मा अ था लि र्थो म र्थ र्थ र्थ वे ति न पा न पा त र्थ र्थ र्थ र्थ र्थ र्थ
 नो अ र्थ अ द्वा म र्थ
 र्थ
 र्थ

॥१॥

प्रतिनस्त्रो मं वशा कृपे तस्या रस्त्रो मं न मति वस्त्रुयः । स तां नो नास्त्रा तिष्ठा वो वस्त्रु न्ता नो र्दस्त्री वनुता
 नीर एणो तु । वनु तीतिः सुरा न्ता नो आस्त्रु शा सु ३ को विरं धा तु नायः । तं नो नायः पर्वता स्त न आ पस्त्रु ३
 तिष्ठा व ३ ष धा तु त नोः । व नस्त्रा ति तिः पृथ्वी रस्त्रो पा ३ ते नो र्दस्त्री पर्वता स्त नो नः । मनु त ३ वी नो र्दस्त्री क्रि
 दा ता मनु अ नो वनुता ३ इत्यस्या । मनु वस्त्रे मनु तो यो सु दा स्त्री नायः र्णा म पु न्ता । धिये ध्ये । त न ३ इ
 वनुता । मनु अ नो वनुता प ३ ष धा व नि नो कृ पं ता रा म ह्येता म मनु ता म्प र्स्त्रे सु यं पा तस्त्रु ति तिः स दा नः ।
 ॥१॥ रा नो र्दस्त्री तं वता म वी तिः रा न ३ इव वनुता ना त द्वा । रा मं दा स्त्री मा सु वी ता य रा योः रा न ३ इ
 पु म ता वा क्स्त्रा तो । रा नो त नः रा म नः रा स्त्री अ सु रा नः पु नः । धिः रा म्पु तां तु नायः । रा नः स तस्त्रु
 सु य म स्त्रु रा सः रा नो अ र्थ मा पु न्ता तो अ सु । रा नो धा ता रा म्पु ता नो अ सु रा नो उ वी तं व तु स्त्रु
 धा तिः । रा नो र्दस्त्री द्वा ता रा नो अ ३ रा नो र्दस्त्री नो सु द्वा ति स्त्रु तां । रा नो अ न्ति क्रो ति न नी को अ सु
 रा नो मि ता वनुता वस्त्रि ता रा । रा नः सु कृ तां सु कृ ता नि स्त्रु तां न ३ षि रो अ ति वा तु वा तः । रा नो आ
 वी पृथ्वी पु वं तु तो रा मं त नि क्रं ह रा यो नो अ सु । रा न ३ ष धा व नि नो त वं तु रा नो न क्स्त्रा स्त्रा ति न

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

॥१५॥

[illegible]

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

॥ॐ॥

[illegible]

उषे विष्णोः विवेक्योऽथ स्वधातिः । ववमानुतोऽथ आतिनुती कृता न इन्द्राय चार्द्ररास्योः । वा । वा । वा ।
 यस्याववेधस्य स्वानः कृता न इन्द्राय चार्द्ररास्योः । अस्तं तात्ता पिप्या न चिं सुवीनं पुत्रो नो भावन्ति । की त
 वा की । अति यं देवी विवेक्योऽथ स्वधातिः । ववमानुतोऽथ आतिनुती कृता न इन्द्राय चार्द्ररास्योः । वा । वा । वा ।
 वंतमर्त्तः । आने नाथां सि सवितस्त्ववधा आना योऽथं तु पर्वतस्त्वना तो । सदा नो दिवाः पायुः ।
 षकुयुयं पातस्त्वस्तिः सदा नः । ॥ ४ ॥ उउषा देवः सवितो यथा मदि न तपयी मम ति । यामं सस्वेत् ।
 नूनं स गोम को मानुषेति विवेक्यो न न्ना पुनु यः । इति । उउति सवितस्त्ववधा आना योऽथं तु पर्वतस्त्वना तो ।
 तावतस्त्व । ववमानुतोऽथ आतिनुती कृता न इन्द्राय चार्द्ररास्योः । वा । वा । वा ।
 यमा वा इत्येव सवो गता । तैः सनस्त्वो मां न मरुत्तस्त्ववधा आना योऽथं तु पर्वतस्त्वना तो ।
 यं देव इति गता । तैः सनस्त्वो मां न मरुत्तस्त्ववधा आना योऽथं तु पर्वतस्त्वना तो ।
 यमा वा इत्येव सवो गता । तैः सनस्त्वो मां न मरुत्तस्त्ववधा आना योऽथं तु पर्वतस्त्वना तो ।
 यं देव इति गता । तैः सनस्त्वो मां न मरुत्तस्त्ववधा आना योऽथं तु पर्वतस्त्वना तो ।

[illegible]

समीनः ॥ १॥ अमुनिविद्वत्प्राज्ञः समेतुं प्रतिज्ञां कृतुं नात्मा यदुच्यते वः स विता सुवति
 स्थामास्यनुत्तिनी वित्तो मे। मितस्तनो वनेना नो रसी वृक्षे तं कृमिं डो अर्थमादत्ता तु। दिदै सुदेवदिती
 ने क्लो वा सुखं यः निशुषे ते तमेख। से उग्रो ज्ञस्तमनुतः स्मरुष्मीयं मर्त्यं पृथक् स्वाध्यायः ॥ ३॥ ते म
 निः सन्तस्वती कुनक्षि नतस्यो नृपयः पर्य्यतास्ति। अयं द्विनेता वतै तानृतस्य मितो ना कानो यमा
 पोयुः। सुखवीडे कादिति न न वर्तते नो अं को मर्त्यं पृथक् न निश्चानु। अस्थडे वर्य्यमा म्भुषौ वुयावि
 लोने पश्ये वतु येरु विनिः। अयं द्विनेता वतै तानृतस्य मितो ना कानो यमा पोयुः। खडे द्विनु डो
 दिष्टं मद्रितं यास्ति शं वृत्तिं विद्वि ना विना वरु। ना तं पुषं ना पृष्ठा इ नस्थो वतु तिष्ठति यो र्व
 नास्य न। मयो नृपौ नो अर्थं तो निपांतु वृष्टिं पर्व्विता वा तो रता तु। नृपो रसी कृत्ति सुते वर्य्यहो र
 तावो नो वनेना मितो अग्निः। अहं तु वः डाडं पृथनो अकं युयं पातः स्वस्ति तिः समीनः ॥ १॥ प्रात
 नृपि प्रातमिः ३० रुवा मदे प्रातमि ताव उता प्रात नृपवो प्रातर्त्तमे पुषां वृक्षो तास्ति प्रा

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

[illegible]

सुरुक्षं ते स्वविवातते पुत्रा माने स्त्रोके श्रुतने मे श्रुतिनिषः। मानौ वधी उद्रमा पनी रामा तैतुमुवस्ति
 लौकी भितस्थः। मानौ ततः बुद्धिर्विक्रीवरां स्त्रोचं पातस्त्रुस्तिः सदानः॥११॥ आयेयं चर्वः पु
 यमां देवयंतं दुपाने मुमि मरुत्तयेनः। तौ वौ यं राविमनिप्रमद्रा प्येत पुषं मपुमं तं वनेम।
 तमुमि मापो मपु मत्रमः कोपा नयी इव वारुमेमी। तस्मिनिंद्रो वस्ति निमीदयेते तमरपा मदेवयं
 तौ वौ कृद्रा रातपविताः स्वययामः। तौ देवौ देवनामविशं तिपायः। ता इंद्रो नृमि वतिवृता निस्ति
 थं तोरुका प्यतवैरुद्रोत। याः सुयो नृमि तिनातान् यात्त इंद्रो कर्तुं कृतुमुमि। ते स्त्रिय
 वौ वरिवेधा तना नो सुयं पातस्त्रु स्तिः सदानः॥१२॥ नृनृकृणो वा कामा इयेषु मस्मिने नो
 मप्यवानः श्रुतस्थः। आ वौ वविः कृतवोनया तां विक्षे नयु नयं वतयंतु। नृनृति नृतिवः स्त्र्या
 मृविक्षे वितुतिः रावे सारावी स्त्रिया कौ अस्मा अवे वतुवा कस्या ता वि ईगा कृतं उषे मवृत्त।
 ते द्विष्टि दुवी नृति संति रास्या विरवी मयति पुनर्ता ति ववव इंद्रो वित्ती नृनृका वा कौ मयै रावो मि
 पुत्ता कं ता वव्वि नृमं। नृदै वा सो ववि वः कृतना नो नृतनो विरवे वस्ते लोको योः। स्त्राम् स्त्रो इषं वस्ते

॥२॥

वास्तोष्पतेषु तर्वाणामनरपि गच्छन्मनो गोतिरस्यैति निंदा । अकृतां सस्ये सस्योऽस्यो मवितेर्वपुः कान्त्यदि
 नोऽकृषस्य । वास्तोष्पतेषु गम्यन्त्यादाते स श्रीमर्द्धिनामया गातुमत्ता । वाकिर्द्धे मकुतयो गोवर्द्धो
 युयः पातस्य स्थितिः सहीनः । ७॥ नाम्नी वृक्षा वास्तोष्पते किंवा नुपापाता वृक्षान्ता सस्यो सुशोभयधिनः । य
 ईकृन्ता नमेयदुतः विराग्यलक्ष्मो वीवता कलेनुहाय उपस्य क्वेषु वृक्षतो निषुस्ये प । स्तेनं नयित्वा न
 मेयुत रक्कनं वा पुनः सनास्तोतु निःइत्या नायसि किमस्मा गुकुना यस्ये निषुस्ये प । त्वं रकु कनु स्याद
 दृष्टत वरुई त्रु सुकनः । स्तोतु निःइत्या नायसि किमस्मा गुकुना यस्ये निषुस्ये प । सस्ये माता सस्ये प
 ता सस्ये वा सस्ये वृक्षतः । सस्ये तस्य वैज्ञातयः सस्ये यमति तो कनेः । सस्ये सस्ये वृक्ष नयस्य पस्य
 तिनो कनेः । तेष्वा सस्ये नमो अमा तियो योय दृष्टत यो । सस्ये सस्ये गो वृक्षतोयः सस्ये मुडाउ
 नावे नत । तेना सस्ये सस्ये नावयं नि कनेः । ह्या पयामसि । प्रोक्षे सस्ये वावे सस्ये सस्ये नायसि सस्ये
 वेनीः । स्थियो याः ७॥ ७॥ गंथा सस्ये र्वः स्वापयामसि । ७॥ ७॥ सस्ये सस्ये अधिकनीतो सस्ये निष्ठा
 पयाम कनेः । सस्ये सस्ये मन्तां ह्या पयामसि । ७॥ ७॥ सस्ये सस्ये मन्तां ह्या पयामसि । ७॥ ७॥ सस्ये सस्ये मन्तां ह्या पयामसि । ७॥ ७॥

CSU-Springer Campus Rare Book and Manuscript Collection, Springer

तपस्विन्युधुर्ध्वमक्षीकृतात्। स्याद्विद्वद्भुवीनामनुज्ञिनरुत्थनाह्यर्हंती७७०। यामंयेमाः सुतारो
 त्रिंशः स्यात्सामंमिस्त्राः कौत्तिनुयाः। ७७१। वधुर्ध्वमक्षीकृतात्स्युत्थनाह्यर्हंती७७२। यामंयेमाः सुतारो
 रुष्मः कुक्षीमनाः स्युत्थुर्ध्वमक्षीकृतात्स्युत्थनाह्यर्हंती७७३। यामंयेमाः सुतारो
 प्रियावोनामकुवेतुनात्तामायतपक्ष्मनुतोवावरानाः। ७७४। स्याद्युधास्यद्विष्मिताः सुनिष्काउतस्य
 यंतवधुः सुतमानाः। सुदीवोदकाभुतः सुवीनाः सुर्विद्विनोमधुनरुर्विष्मिताः। ७७५। सुतेनस्यस्यमृत्तस्याप
 माधुर्ध्वमक्षीकृतात्स्युत्थुर्ध्वमक्षीकृतात्स्युत्थनाह्यर्हंती७७६। यामंयेमाः सुतारो
 विविष्मितावृत्तिनीनुवानामनुत्थुत्थनाह्यर्हंती७७७। यामंयेमाः सुतारो
 नधुः स्युत्थुर्ध्वमक्षीकृतात्स्युत्थनाह्यर्हंती७७८। यामंयेमाः सुतारो
 किनोदवीमन्। मरुत्ताः सुवीर्यस्यरातनुविष्मितामनाः। ७७९। सुतारो
 स्युत्थुर्ध्वमक्षीकृतात्स्युत्थनाह्यर्हंती७८०। यामंयेमाः सुतारो
 स्युत्थुर्ध्वमक्षीकृतात्स्युत्थनाह्यर्हंती७८१। यामंयेमाः सुतारो
 स्युत्थुर्ध्वमक्षीकृतात्स्युत्थनाह्यर्हंती७८२। यामंयेमाः सुतारो

वस्य कोन म० ॥ आ वो सो तो को द वी ति सु तः सु ता दी० वा नू ति० मनु तो गणा नः॥ च दी व तो वृ णा णो अ स्ति
 गो पाः सो अ द्या वी द व ते व उ क धेः॥ ३ मे नु न० मनु तो नाम यं ती मे स दः स र्ज स आ न मं ति॥ ३ मे रां स०
 व नु ष्टा तो नि पा० ति गु उ वेषो अ ने नु षे ३ य० ति॥ ३ मे नु थं वि नु नु तो क न० ति॥ मि वि द्या व स्य वो कृ षं ती॥ अ प
 वा थ द० वृ णा स मां सि य त वि स० त ने यं तो क म स मे॥ ७ म॥ मा वो द० वा न्क उ तो नि न ना म मा प र वा ई
 प्प न यो वि ता गे॥ आ न स मा दे ते क त ना म स यो ३ ७ य दी० सु क्रा त० वृ णा णो वो अ स्ति॥ स य ध नं
 त म नु ति क र्ता सः॥ सु ना य द्या वी द व ते व उ क धे॥ अ थ स मा तो म नु तो उ दि या स र्वा ता ने तु त प त न
 स र्जः॥ तु वि वे क म नु तः॥ चि ता॥ त म क था नु या वः॥ स र्ज तं वृ ना वि त्क॥ म नु ति नु यः॥ प त न स र्वा द्या
 म नु ति नि ह्य न ता वा क म की म स मे वी ने म नु तः॥ सु क्रा त० क र्ता न्ता० यो अ स्य रो वि द्य त म्नि यो ये
 नं सु द्रि त ये त ने मा प र व मो को अ ति व र्णा म॥ तं वृ र० शो व त्ता गो म्नि त्वा म्नि ना प र व थो व म्नि नो
 कृ ष त॥ रा म्नि ह्य म म नु त र्ता म नु र्थे य यं पा त र्वा स्ति तिः स र्ज नः॥ १२५॥ म धो वा ना म मा उ तं
 व क ताः॥ प्र यु क्ते पुरा व र्णा म न्ति॥ ये नु क य० ति नो र्वा वि उ वी वि द्य० त्वा ह्यं वा र्वा स्यु त्ताः॥ नि वे ता

[illegible]

1

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CSU, Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

ਨ

॥ १ ॥ सुभाद्रवादिदशैर्वाचमानः कृत्वा कृतः सकृतः सकृत्तुतिरुद। अस्त्युपतिपुनोनुज्जाएतिस्थोमैति
 नेतयेतिनेवैः। प्रपणमिवायवउगायवैवोनागस्योमयुद्धोअग्नयेव। विनेःस्यदस्यंशुपुधौनदं
 कृतावानोषउगायोमिवाअग्निः। यत्तं नवउडाउपुमंनोअकमानः कर्मांउपुनंतुस्सवानाः। आवा
 नुमीअइतेवालीयांनोयेवांइकृरःशुक्रनिमाननष्टे। मारुनेनुमवउगाअवायोममिद
 अर्धवित्तमस्यनगा। प्रबुद्धवांसिस्तः क्रीवसेनमानो गवुतिमुक्तंयुतेन। आनोऊने
 सवयतःशुवानासुतंमैमिवावउगाऊवेमा। नुमिवावउगाअयमानस्सनेतोकायवविवाध
 न। अग्नानोविश्वस्यपद्यानिस्तुयुयंपातस्वस्तिःसदानः॥४॥३इतिशुतर्गोविश्वरक्षाःस्वा
 धांवाःशुयोमानुषागा। वशुमिदस्ववउगास्सदेवस्वमेवयःसुमविवाकृमांस्तिउदैति
 प्रसवीताऊनीनामशुक्रैर्ननगाविःशुयस्स। सुमानःसुयंपय्याविर्वह्युयैतरोवर्दतिधुपुय
 षः। विवाऊमानउषसाभुपय्याइतैत्रैतानुमशमानः। एवमैदेवःस्वितावहउयःस्वजा
 नंनवमिनातिधाम। देवउवमउवमउदैतिउनेमयस्तिनगात्ताऊमानः। नुनंकनाःशुयगाप्रसु

ता अयं नयति कृता वृत्तं पीसाय त्वं कुर्वता गतुं मे रक्षेत्ते नो नदी यं नर्वेत्तु पाथः प्रति वांस्तु न
उत्तिने विथे मुन मत्ति मिता वनुतो तद्वैः नु मिता वनुतो मय्यमानस्त्वनैतो काय वनिवोदपंतु
शुभानो विस्वास्तु पथा निश्चंतु शुभं पातस्वस्तिः स्वर्ग नः ॥ १॥ दिवि कथं ता न के सः पृथ्वी
प्रवां पृथ्वी निर्ति कौदरी नवा दूवां नो मिता मय्यमान कौतो ना कौस्तु त्वो वनुतो कुपंत
ज्ञाना काना मरु न तस्थ गो पास्ति भु पती कृत्वि याया तम्वकि दन्ता नो मिता वनुतो तद्वि म
वद्वि वद्वं न तं की न दानु मिता स्त नो वनुतो दे वो मय्यः प्रस्थापि मतिः पृथिवि नयंतु ब्रव्यया न मा
विः स्तु दानु पा मदे म स्य रुदे व गो पाः स्तो वां गतं मनस्ता न के दे त भु पथा ति कृता वद्वान य द्वा
दृष्टे यो मिता वनुता पृथ्वी ता ना ज्ञाना स्तु कृती स्त पथे या ॥ २॥ पृथ्वी मय्य वनुता मिता त्वां सोमः
सुक्षे न वा य वै या मि मि वि शं थि यो कि गुल पु नं धा र्थु र्थं पात स्वस्तिः स्वर्ग नः ॥ ३॥ प्रति वांस्तु न उ
दिते स्तु कै मिता उवे वनुतां पुत रं रु यो न स्य रु मतिं वं रु मं वि स्वस्था यामि ता विती गुनु तादि
दे वा ना मय्य ना ता वर्य ता मः स्मृतीः के न त भु र्थं ताः मय्य मय्य मिता वनुता वयं वां या वा य य तं

वीषयं न मीव । तानुविधारणं वन्त रश्मये तु उच्यते तु विषये मत्तमिथ । न तस्यै मित्रा वनुता पृथा वा मृपे ।
 न त्वा वा उ वि ता त नै मा आ नी मित्रा वनुता कृवा कृ क्षि पुत्रै र्ग वृ ति मु क्त म न्नै क्षिः । प्रति वा म त्व व नु मा क
 नी य व नी त मु क्षे दि का र्थ वा नीः । एष स्यो म्मे वनुता मित्र तु त्थ स्यो म्ः शु क्रो न ना य वे या मि अ वि क्षि
 धि यो क्षि त् पु त्रं पी क्षु य पा त र्थ स्ति तिः स्या दी नः ॥ १ ॥ प्र मि त्व यो वनुता यो स्तो मो न प त्र मु योः ।
 न म्स्वां तु वि आ न योः । या धा नै तं दे वा रु द्रा द स प त ना । अ सु र्थि सु प्र मी क र्था । ताने स्ति पा तं दे वा
 वनुता कृ वि त्ता । मि त्व स्य प यं तं धि योः । य द्वा य सु न उ द्रु ते ना गा मि त्वो अ र्थ मि । सु वा र्ति स्य वि ता
 तर्गः । सु प्रा वी र्त्तु स्य द्र यः प्रा गु म् यो म् ह्यु दान वः । ये नो अ म्मो ति पि प्र ति । प त्रु त स्य ना को अ र्थ
 न ई द प र्थ वृ त र्थ यो म्मो ना को न शी र्ता ते । प्रति वा सु न उ र्थ ते मि त्वं ग ता वे वनुता । अ य म्मो मि त्व ई
 स्य । ना य कि न ता यो म्मो ति यो म् वृ का य र्थ व स्ये । इ यं व र्थो म् थ स्या त यो ते र्थो म्मो दे व वनुता ते मि त्व
 रु नि तिः सु न । इ यं र्थ व र्थो म्मो ति यो म् वृ का य र्थ व स्ये । इ यं व र्थो म् थ स्या त यो ते र्थो म्मो दे व वनुता ते मि त्व
 ति ति वि र्थो म्मो ति यो म् वृ का य र्थ व स्ये । इ यं व र्थो म् थ स्या त यो ते र्थो म्मो दे व वनुता ते मि त्व

[illegible]

वावदंतुस्थविनास्तोअस्वाविवायोअस्मैसुवतामभुनि।प्ररीष्टुदेवाअस्वनादेवोहोमंथांस्ततयेक
 तंवस्तुष्टं।विस्वाअविशंवाकृष्णापुर्वंथीस्थानेःराकंसदीपतीररीतिः॥७॥अविशंथीष्विनाअस्व
 प्रकावडेतोअस्मैनोअस्तुआवातेकेतनयेतुत्तकानाःसुनजोदेववीतिंगमेमाएषस्ववीपुर्वग
 देवस्वस्मैनिधिद्विमीधीनातोअस्मै।अदेनतामनस्यायातमकीगरुतंताकृवांमनूषीषुविदु।एक
 स्मिंलोगेननगास्यमानेनविवांस्यतस्त्वतो नयोगान्नवायतिशुद्धोदेवयुक्तायेवीधुर्तनताये
 वदंति।अस्वतोमप्यवज्ञोदितुतंयेनायामेप्यदेयंकुनंति।प्रयेवभुंस्तुनतातिस्तिनतेगवापुंयं
 तोअस्वाअप्यानी।नुमेदवमारुतंयवायास्यशंवतिस्विनाविवावन्नाथतंननीतिकनतंवस्तुनी
 नृयुयंयातस्वस्तिःस्वदीनः॥७॥आरुत्तायातमस्विनास्वस्वाजिनोइस्वाकृष्णापातासुवाकोः।
 रुक्वा निवप्रतिनतादीतनः।प्रवाभंथांस्तिमधोअस्मैपुनंनं तंरुविषोवीतयेमे।विनोअप्येदेव
 नानिस्तुतनः।प्रवांनये।अनीरुवाइयतितिनो रकांस्वस्विनादातेतिः।अस्मैस्तंस्तुयावस्तुइया
 नः।अयोइमदीदेवयाउअईतुर्थोविदेहिस्वोअस्तुइवन्तां।अवस्तुविप्रोववतीतदुकोः।चितं

119211

[illegible]

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

अंतो अस्मिन् पक्षः स बलस्तु नयः । तदयं सतो मध्यवर्द्धो भुवः यदा स्फुटि न स्मृत तांता सत्ता । प्रयेय
 शुनं वक्रा स्तो न यो व व न्वा ता नो ज न्ना ना । उत्तये न ता व स्ता सु शु व नं नै उत्त क्रियं तिस्रु क्रिति ॥ ७ ॥ कुः
 पा स्तो वो दि वि का न्ते ना वि क्क पु ना म्म दि मा न भा गा वा । ज प पु दु स्त म्म जा व न कु श म्म नि न स्त मा प य्मा
 म्म जी गः । म्म के न्मो म्म अ स्तु वि ता यं बो थु यो म्म के स्तो त गा य प्र य म्म पा व्त्तं न यि म्म रा स्तं पे म्म स्म मे दे वि म्म
 तै षु मा नु वि स्त व स्तु ॥ ए ते त्ते ता न वो द र ता यो वि ता उ य स्तो म्म म्म ता स मा गुः । क न यं तो दे वा
 नि वृ ता मा प्ता तो जं त वि मा मा स्तु ॥ ए वा स्ता यं क्क ना प ना का ता वं दि तीः प रि स्त म्मो दि गा ति ।
 अ लि प र्मां ती व लु ना नां दि वो उ दि ता तु व न स्त प त्ती । वा क्रि नी व ती सु र्म स्त यो पा वि ता म्म पा ना य दी
 मे व स्तु ना ॥ न वि षु ता क न यं ती म्म यो म्म यो उ क्ति वि दि नि र्म ता ना । प्र ति म्म ता ना म्म उ पा स्तो म्म र्वा
 वि ता म्म इ स्त नु प स्त व द्दं तः । या ति म्म ता वि दे वि रा न यं न यं ति न न्म वि दे क ना या स्त मा स्त तो ति
 म्म दि ती म्म क्क दि दे वो दे वे ति र्म क्क ता य क्क तेः । उ क्क इ ल्का नि र्म उ स्ति यो ता ॥ प्र ति गा वं उ य स्तं वा व रां ता
 नु तो गो म्म इ न वं मे क्क न न्म यो म्म र्वा व त्ता उ तो को म्म स्तो । मा नो व दि पे उ य ता नि दे क्क यं पा त स्तु

क्षितिः स्थानः ॥ ७७ ॥ उ३ ज्योतिः नमते विश्वकर्म विश्वाननः सविता देवो ज्योतिः कृत्वा देवानां मरु
 निश्चयं नृणां विनं कर्तुं वनं विश्वं मुपाः प्रमेपं यो देवानां मरु नमर्धतो वरुं निश्चयं नृणां मरु
 उक्ते नृवत्तः पुनस्ता तत्रती वागा इति कर्मोत्तः तज्जीद्वीजि वं दुलान्ता स्यात्वा प्राचीन उदितं सूर्यस्य
 यतः पनिजा रई वा व नं तु यौ इदं न पुनर्नृती व। तद्वत्ते वानीं स प माई आन नृता वानः क वयः पु वर
 सः पुनर्नृ ज्योतिः पितनो जव विद्वत्ता मं ता म क न यं नृवा स्य स मा न दु वे म्मि लु स ग ता सः स
 ज्ञानेन येन ते मियत्ते ते देवानां नमि वं तवृतां म मर्धतो वरुं निश्चयं नृणां मरु प्रतित्वा स्तोमै
 नी न ते वस्ति मा उ पु वृथः स त गे तु शु वा सः म वा ने ती वा क व डी न उ षो वः सृ ज्ञा ते वृ य मा
 क न स्वा ए वा ने ती ना र्ध सः सृ नृता ना मु वा कु षे ती वि न्ता ते वस्ति म्मैः दी प्यं नृते नृयि म्म र्म र्था
 ना य्य यं पा त नृ वस्ति निश्चयं नृणां मरु ॥ ७८ ॥ उ३ पुनर्नृ वृ वृ वि नृ यो वा वि नृ वं नृ वं नृ वं ती वृ ना म्मै ज
 त्रु म्मिः स मि थे मा नृ पा ता म क कर्ते ति र्ध म्मा मा त म्मां स्या वि नृ वं नृ ती री स वृ वं नृ उ र्ध्वा दुरा वा स्यो
 वि नृ ती री कर्म स्ये नृ दि नृ ता म्म वार्म सृ र्ती क स्यं दृ ग वा म्मा ता ने त्वां म्म नो वि दे वा नां वरुं सृ त गा व

॥४॥

दंतीस्वेतं नमंतीसुहृदीकमस्व०। उषा मंदति नृत्तिमिति का का विनामप्या विरमनु प्रसुता। अंति
 वाता पुने मजितं मुच्छे कीं गवकुति मतं कपीनः। आवयये षडा तना वसु निर्वोद यना पौ गपुते म
 पो निमस्मै सै मै तिती न निर्वता अयौ दे विप्रति नंती न जायुः। इयं वनो इयं ती विरववा ने गो मु रवा
 वउयवव नायः। आं ता दिवो उद्धि त र्वयं तुषः सुजाते मति निर्वस्य माः। ता र्था सुधान शिम्वं
 वुद्धं तं युयं पा तस्व स्थितिः सदा नः। ७४॥ प्रति के तवः प्रथ मा मंद हनं नु र्धा म र्था अं कयो विरमं
 ते उषो म वशि वरु तान ये न क्रो तिष्म ता वा म म र्म म तं वद्वि। प्रति वी म नि र्ध न ते स मिधः इति वि
 प्राप्ता म त ति ग्ल तः। उषा या ति क्रो तिष्म ता वा म म र्म म तं वद्वि। प्रति वी म नि र्ध न ते स मिधः इति वि
 दूर नि मु न स्ता क्रो ति र्ध नं ती उष स्तो वि ता ती। अमी क न ह्युयं म क म मि म पा वी नं त मो ज ग्ना ड कु
 श। म ये ति दिवो उद्धि ता म पो नी विरवै प र्णं तुष सां वि ता ती। आ र्था इयं स्व यो य म मा न मा
 म म र्वा सः सु म क्रो व द्दं ति। प्रति ता म सु म न र्गो ७५। ता र्था का र्ता म प वानो वयं वी। ति वि ता
 म यं मु व र्णो वि ता ती युयं पा तस्व स्थितिः सदा नः। ७५॥ वृषा म्मा वः पृष्ठा ७६ क नी नां प र्व द्धि ता

मीनु पीवोपि यं ता। सुसंरक्षितं तत्तु मय्ये विमुक्तो नो देहा वक्तव्यः। कां कते देवो जते वृक्षु वि
 रो न युक्ता उ पमौ न तं ले। स। ले गा वृक्ष मया व तं यं ति ज्यो ति यं कं ति स वि ते व द्वा द्वा ज तु उ पा रं इ तं मा म
 यो त्म जी ज न ह्य वि ता य स वां नि। वि वि वो दे वी उ दि ता इ ता त्मं मि व स मा सु कृ ते व कृ नि। ता र्व उ पो ना पो न
 स्य त्म। ना स्य चा व ह्यो न तु गो म न रो ग ता ना। आ। ता कृ ण्य र्पु न स्या न वे ता वि द्मुक्त स्या उ नो ज डै वो लोः।
 दे वं दे वं ना र्थ स्यो दे वं यं त्म म ज्ञे के लु न ता मी न गं ती। कृ ण्य ती नः स्य न रो य यो धा थु यं पी त स्य स्ति तिः स
 नो नः। ७५॥ प्रति स्तो मे ति उ व स्यं व स्य हा मा ति वि प्रा नः प्र य मा मं बु ध न। वि वृ त्तं गं ती। न जं स्यी स्य मं
 तं मा वि द्मुक्त व ती। नु वं ना नि वि र्व। ७६॥ पा र्था न क मा यु र्थि ना गु ह्री त मे ज्यो ति वं पा नी वो पि। ज
 प्र र ति यु व ति न द्वा ता ता वा वि कि त ह्यु र्थं न कृ म् मि। अ र्वा व ती गे मं ती र्जु पा र्थो वी न व तीः ल रं। ७
 कं तु न द्वाः। ७७॥ तं उ म्ना वि र्व तः प्र वी ता यु यं पी त स्य स्ति तिः स्या नः। ७८॥ प्र न्य ज र्थ मी ती। प्रति स्तो
 ति नु व स्यं व स्य हाः। ७९॥ पा र्था वः न य मा र्थ मी ना। ८०॥ प्रति के ल वः प्र य म स्य र्थ व। उ पो उ उ रे य व ति न र्थो
 वा। उ उ कृ तो ति न मृ तं वि र्व के म न। वि उ य मा र्थो दे वि कृ ता न ले न। इ मा उ वा। दे वि श यः। अ ता नि अ त म लः
 पा न म स्या। अ म्मे मं ता ना स त्ता न र्थे न। ज न र्थ म् उ न यो नि जि की ले। आ र्थि र्व वा ना वि नो ग तं नः। ज

॥४॥

वा० न० यो नो रं स्त्री ब० ध० ध० नः । उ० तत्त० ध० कु० न० ले० म० खि० ना० तु० न० । का० रं० ला० या० त० म० खि० ना० रं० रं० । अ० वि० शं० ध० ध० खि० ना०
 ता० म० आ० रं० । प्र० ति० व० ध० न० न० पु० ती० कु० न० यो० । त० व० कु० ध० वि० कि० त० । वि० यो० ध० रं० न० दं० मा० रं० मा० दं० । उ० त० रं० ध० ना० को० अ० दि० तिः ।
 प्र० मि० त० यो० रं० वि० ता० योः । प्र० ति० वां० सु० न० उ० दि० ते० सु० ध० । इ० वि० ध० यं० ता० न० क० रं० । पृ० धि० कां० । उ० रं० ति० सु० त० यो० वि० रं० व० काः । उ० ह०
 यो० दि० कु० रं० । ध० रं० ये० त० । उ० ह० न० व० कु० व० तु० ता० सु० व० ती० क० । इ० मे० दि० वो० अ० मि० मि० यो० पृ० धि० काः । य० ह० अ० सु० य० व० वो० ना० गाः
 अ० ह० अ० त० व० कु० नि० मा० उ० वा० रं० न० ॥ क० निः ॥ ॥ इति स्त्री ना० क० ल० क० क० ता० रं० पं० रं० मा० श० के० वं० रं० मो० ध्या० यः ॥ ॥
 क० निः ॥ पु० त० य० अ० द० रं० यो० अ० त० उ० हं० ती० उ० दि० ता० दि० वः । अ० यो० म० दि० म० य० ति० रं० रं० ये० त० मो० को० ति० क० लो० ति० सु० न०
 नी० । उ० उ० ति० यो० रं० क० ते० सु० यः । अ० वा० उ० अ० न० क० त० म० रं० वि० व० त० । त० वे० उ० यो० कृ० पि० सु० यः । अ० व० रं० त० क्वे० न० ग० मे० म० दि० प्र
 ति० ता० उ० दि० त० दि० व० उ० वो० की० ना० म० न० ह० म० दि० । या० व० क० लि० पु० उ० रं० मा० रं० व० न० न० ति० न० न० न० ह० यो० मे० यः । उ० हं० ती० या
 क० यो० रं० मं० क० ना० म० दि० प्र० यो० रं० वि० रं० रं० । त० रं० यो० रं० न० न० ता० क० रं० म० दे० व० रं० यो० म० मा० न० न० रं० न० वः । त० श्रि
 तं० ना० पु० मा० त० नो० यो० य० की० ध० रं० त० म० । य० त० दि० वो० उ० दि० रु० म० त० लो० क० न० त० श० रं० व० न० क० म० दे० । रं० वः । सु० नि० तो
 अ० म० तं० व० रं० त० न० वा० की० । अ० रं० म० तं० यो० म० तः । यो० रं० यो० म० यो० न० न० न० ता० व० रं० य० उ० ह० रं० य० रं० यः ॥ ॥ ॥ इति

वउगावमधुनायनोविरोक्तोयमदितामयेवता। दीर्घवचममतिमोवनुषाद्विचयंमयेमपुत
 नासुदुक्तः। ल. मालनाःसुनालनाउं कंयतेवा. मकांताविज्ञावउगा मकावस्तुविद्वेदेवाः पत्रमेवो
 मनिस्वामोकोवपुगासंबलं३३। मनुपांसातीतंमोक्रसासुयमैवयतंविद्वत्॥ इडावउगा
 मदेमस्वामाजिनोविनतमुषितःपितृतंयिः। युवामिभुह्युपतंमासुवद्वयोयुवांमेमस्ववस्तु
 वेमितकवः। इतानावस्वउतयस्वकानवइडावउगासुक्रवाकवामदे। इडावउगायदिमानिचक्रयुवि
 स्वाकातातिलुवनस्वमकनना। मेमोपामितोवउगाउवस्वतिमुत्रिद्वयःसुतंमन्तरीयते॥७॥ मदे
 सुकायवउगास्वमुषिषमकोमिमातेधुवमस्वयस्व॥ यकामिमन्तस्वययं० तमातिनइत्वेति
 ननाःववपुतेतिलुयसः। नतमंकोनउतितानिमन्तमिंइडावउगा नतपःकृतस्वनायस्वदेवागकयो
 वीयोकोधुनंतमर्तस्वनरातेवविद्वतिः। सुवद्विनादेवोनावसागतं० तंरुवंचविसेमुकोपयः।
 पुवोद्विस्वस्वमृतवायतापां० माइडिफमिंइडावउगाजिनेकतं० मस्वामकमिंइडावउगा नतनेपुनो
 योथातवतंकइतोक्रसा। यडांरुवंतउतये मयस्वपिननंस्वोकरयतनयस्वसातिपु। मस्वमेइडे

1111

॥४३॥

मतिप्रविकृतावलापननोकाप्रतीर्तुंति। ससुक्रतुर्नृजविदुषोताममादित्यरावस्थावांनमस्वावा
 आववतदिवेवांरुविष्णानसदिहसुवितामप्रयस्वावा। सुममि०३० वतुतामसमेगीः प्रावतोकेतन
 येतुर्तुजना। सुनत्रासोदेववीति० गमेमसुय० प० तसुस्तिः सदानः ॥४॥ धीनार्त्तस्यामदिनाक्रनु
 विविमस्यस्यं तनोदसीवउवीप्रनाकसुषु० नृदेवदंतं० वितानद्वलं० प्रयवतुमीउतस्ययातन्वा०
 वदेतकगव० तवतुतोनुवाजाकि० मेरुममदतामो कृपेतकदाम्लीकं सुमानाअसिद्व० ॥५॥
 तदेनोवततादि० कुर्ये० पमविकृतुषो० वि० ॥६॥ सभाजनमिन्मेकवयस्विदाकुरुचंद्रतुनांवतुतो
 तीते। किमार्गसासवततामो हं० महेतानं० कृप्या० ससुसस्यय० ॥७॥ तन्मेवोदुमनस्वधावोमत्ताने
 नानमसातु नईया० ॥८॥ अवतु० धाजिवित्ता० स्रुजानोव्यावय० बकुमतनुतिः० अवनाकनं० सुत्पंनताथं
 स्रुजावहं० नदासो० वस्ति० ॥९॥ नस्यदे० ॥१०॥ वतुता० धाजिः० ससुनामसुवितीर्दकोमविहिः० कस्तिजाजाक
 नीयसउपावेस्वप्रस्वने० तस्यप्रयोता० ॥११॥ ननं० सलो० नमी० सुवैकना० पद० देवायनु० तथैनामाः०
 नवैतयइहलो० देवो० कये० गहं० नाये० कविते० नो० कृताति० सुय० सुतनी० वतता० स्वधावो० कृदिस्तो० सुतपं०
 तद्विदुषु। राजः० मे० मोरा० मुयो० गे० नो० नसुयुय० ॥१२॥ तस्यस्ति० तिः० सदानः० ॥१३॥ विदत्त० योवतताः० सुय० मुपा

॥४४॥

मंरुवत्तापोनाकायाहृषिचकानस्थपामकोत्तिः। स्तोता नुंविषः सुदिनवेष्टा न्नांयांनुशावस्वतनंयाउपासः।
 द्धः त्तातिनोस्वस्वावत्तुवुः सवावदेयदवकु पुनारिन्नावकु तंमानं वनुतास्वधावः स्वरस्वदानं कगमाग
 दंते। यजाविर्जितो वनुताप्रियः सत्ता मागां सिक्तावहस्पाते। मातएनस्वतोयक्रिन्तुकेभयं यिष्मा
 विष्मस्तुवतेवनु यः पुवांस्तुता सुक्रितिपुक्रियतोकाहस्मत्ता रा वनुतापो सुभोवत्ता नवोव वानाक
 तितेनुपास्या सुयः पातस्वस्तिनिः सगनः ॥१०॥ मापुर्वनुतामल्लयः गुरुं नकिं नरुगमः मल्लासु
 नतमल्लयः। यदेतिप्रस्तुनद्विवदतिर्नभातोकादिवः। मल्लासुनतमल्लयः। इतः समरुदीनताप्रतीपः
 कगमारुवे। मल्लासुनतमल्लयः। कापांमथेतस्तिवांस्तं वप्ताविदं नरुनितानं। मल्लासुनतमल्लयः। य
 किंवेदः वनुतादैकोकनेतिडोरुं मनुष्याः ४४ स्वनामस्ति। अवित्रीयतवधमयिथो विममानस्वस्मा
 देनस्वोदेवनीनिवः ॥१०॥ प्रवीनयारुवयोऽदिनेवामधुयुतिः मथमः तः सुतासः। वरुवायो निसु
 तोयाद्वस्त्राविवास्तुतस्याः पस्मोमदीयः। शीरानायावयुतिः यस्तस्मान् हस्तुविस्मोमं सुविपास्तु
 मः वायो। कृतावितः मतोपुत्रास्तः कातोकासोकायतेवाक्यस्यानायेनयं कुरु सुनोदस्मीमे

नाथो देवी धिया ताथा ति देव० अथ वाच० निरुतः सखत स्वाउ तखेत वस्य पिति निने के। उरांनुवाः स्य
 दिनाम नि प्राउउ क्तो ति वि वि उ दी धानाः। गका० वि उर्व म्मि को वि व वुस्ते वा मनु प्र दि वः सस्यु नाचः। ते
 स्य स्यो न मन स्या दी धानाः स्वेन युक्ता सः कृत नावदं ति। इ० इ वा यु वी न वाद० न यं वा मी रान यो स
 ति यजः सव० ते। इ० इ वा यु वी न वाद० न यं वा मी रान यो स ति यजः सव० ते। इ० इ वा यु वी न वाद० न यं वा मी रान यो स
 म्मायु नर्वे हि वी नैः च उता स्य स्य अः। अर्व० तो न स वस्थो ति न म्माणा इ० इ वा यु स्य शु ति वि वि स्याः।
 वा म्म य० तः सव० स्ये दु वे म्म यु य० वा त स्य स्थितिः सदा नः॥ ७॥ कु वि इ० ग न म्मा यो वथा सः पु ना दे
 वा स न व म्मा स्य म्मा स्य न्। ते वा य वे म्म न वे वा धिता या वा स्य न्नु य स्य अ० यो ति। उरां ता उता न द्वा य
 गो वा म्मा स्य पा यः स्य न र्वे दु वीः इ० इ वा यु स्य शु ति र्वे म्मा ना म्मा इ० क मी हे स्य वितं न व कां पी
 वो म्मा न्नि वे थः स्य मे थाः स्ये तं स्ये हि नि यु ता म ति र्वे म्मा। ते वा य वे स्य म्म न स्यो नितं स्य वि र्वे म्म न स्य
 य० ता नि व कुः। या वृ त्त न स्ये ७७ या वे नो म्मा या व० न न स्य म्म स्या दी धानाः। इ० वि स्यो म्मं इ० वि पा या
 स्य म्मो इ० इ वा यु स्य इ० व दि नै इ०। निरु वाना निरुतः स्य म्म र्वी ना इ० इ वा यु स्य न यं या त म्म र्वी क्।

॥४३॥

३३. दिवा. प्रतु. मधो मधुमप्रीता न विमुमुक्षु मस्ये। या वीरातं निमु तो याः स्य दस्य मिदं वा युवि
 ख वा नाः सव. ले। आसि यति. स्य विदत्ते तिन क कपायनं नावति. तत स्य मधुः। अर्व. तो न स
 वस्यो जि. म मा। ता ३. इवा मुस्यु मुति निर्वलि मः। वाज्य. तः स्व वे स्ये रु म यु य. पात स्य स्थितिः स
 दानः। ॥१२॥ सा वा यो नुष रु वि पा उ व न न्त दस्य ते निमु तो विव वा ना उ पो ते मं पो म ध म ज मि
 ज स्य देव ३ पि वे पु व वे यं। प्रयो ता जी नो म ध ने स्य स्या हो म मिं डाय वा य वे वि व थो। प्र य वा म धो
 ज गु यं त नं त ध य वी रे व यं तः रा वी तिः। प्र या ति य स्नि दा र वां स म क नि मु दि व य वि स ये उ
 ने। तो। नि नो न शिं मु तो क स्य यु व स्व नि वी न. ग वा म र वं व ना थः। ये वा य वं ३. इ मा न स्य जा दे वा
 स्यो नि तो रा न स्यो ह यः। प्रं ती व ज्ञा ति सु नि मि पा म स्या न्य द्वां सो रु पा न ति न मि वी न्। ज्ञा नो
 नि मु दिः ग ति ना ति न ध नं स रु स्ति ता ति नु व या दि य रु. (वा यो ज्ञा स्म ह्य व ने मा इ य स्य यु यं पात स्य
 स्थितिः स दानः। ॥१४॥ रु वि. नु स्तो मं न व क्त त म म्। इ मी व लु द ता रु पे धी. उ ता दि वां सु द वा को म् वी
 मि ता वा कं स म् उ ता ते थ म्। ता स्या न स्या र वं य ना दि तु नं ता कं र थ रा व स्या रु रु वां स्या। रु यं तो ना यो

यवस्य स्य तुनेः ॥ ८६ ॥ वाक्यस्य स्थविनस्य पृथ्वेः ॥ ३७ ॥ अथ द्विद्वयं वाक्चिने गृहीति विधाः प्रमतिमिह मानाः ॥ ३८ ॥
 वः तोनकाक्षाः नममागा ॥ ३९ ॥ शशीकोरुवतो न न स्ते ॥ गतिविधः प्रमतिमिह माना ॥ ४० ॥ नयि यरास्यं पुर्वतो कं ॥
 ३९ ॥ शशीवत्तुकागा ॥ ४१ ॥ वक्षः प्रनोनवोति स्थितं तं देहैः ॥ ४२ ॥ अथ मदीमि वृत्तीत्यर्थमाने तनु उवाच ॥ ४३ ॥
 तैतोः अदेवस्य विदये देवयुतिः सत्वा कृतं तं सोमसुता कर्तन ॥ ४४ ॥ ॥ ३८ ॥ ॥ ३९ ॥ ॥ ४० ॥ ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥
 सोमनसा ययातः ॥ ४५ ॥ नुविधिपनिमाम्नाये अस्मान्नावाः ॥ ४६ ॥ रसवद्विर्वृत्तीयवाकैः ॥ ४७ ॥ नमः नानमस्यास्य
 मिधो छा मितं वज्रगामिदं वोवेः ॥ ४८ ॥ अह्नी माणस्वकुमात ह्युमन तदयं मिमादितिः सितयः ॥ ४९ ॥ एता न
 नमः अथ पागा स इष्टी युवोः सत्वात्तत्तमाम वाकान् ॥ ५० ॥ मे इने विष्णुर्मपुकां पतिस्त्वनयः ॥ ५१ ॥ पातस्य स्त्रि
 तिः सत्तनः ॥ ५२ ॥ ॥ ३८ ॥ ॥ ३९ ॥ ॥ ४० ॥ ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥ ॥ ४७ ॥ ॥ ४८ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ५० ॥ ॥ ५१ ॥ ॥ ५२ ॥
 ३९ ॥ शशीवत्तुकागा ॥ ४० ॥ वक्षः प्रनोनवोति स्थितं तं देहैः ॥ ४१ ॥ अथ मदीमि वृत्तीत्यर्थमाने तनु उवाच ॥ ४२ ॥
 तैतोः अदेवस्य विदये देवयुतिः सत्वा कृतं तं सोमसुता कर्तन ॥ ४३ ॥ ॥ ३८ ॥ ॥ ३९ ॥ ॥ ४० ॥ ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥
 सोमनसा ययातः ॥ ४५ ॥ नुविधिपनिमाम्नाये अस्मान्नावाः ॥ ४६ ॥ रसवद्विर्वृत्तीयवाकैः ॥ ४७ ॥ नमः नानमस्यास्य
 मिधो छा मितं वज्रगामिदं वोवेः ॥ ४८ ॥ अह्नी माणस्वकुमात ह्युमन तदयं मिमादितिः सितयः ॥ ४९ ॥ एता न
 नमः अथ पागा स इष्टी युवोः सत्वात्तत्तमाम वाकान् ॥ ५० ॥ मे इने विष्णुर्मपुकां पतिस्त्वनयः ॥ ५१ ॥ पातस्य स्त्रि
 तिः सत्तनः ॥ ५२ ॥ ॥ ३८ ॥ ॥ ३९ ॥ ॥ ४० ॥ ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥ ॥ ४७ ॥ ॥ ४८ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ५० ॥ ॥ ५१ ॥ ॥ ५२ ॥
 ३९ ॥ शशीवत्तुकागा ॥ ४० ॥ वक्षः प्रनोनवोति स्थितं तं देहैः ॥ ४१ ॥ अथ मदीमि वृत्तीत्यर्थमाने तनु उवाच ॥ ४२ ॥
 तैतोः अदेवस्य विदये देवयुतिः सत्वा कृतं तं सोमसुता कर्तन ॥ ४३ ॥ ॥ ३८ ॥ ॥ ३९ ॥ ॥ ४० ॥ ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥
 सोमनसा ययातः ॥ ४५ ॥ नुविधिपनिमाम्नाये अस्मान्नावाः ॥ ४६ ॥ रसवद्विर्वृत्तीयवाकैः ॥ ४७ ॥ नमः नानमस्यास्य
 मिधो छा मितं वज्रगामिदं वोवेः ॥ ४८ ॥ अह्नी माणस्वकुमात ह्युमन तदयं मिमादितिः सितयः ॥ ४९ ॥ एता न
 नमः अथ पागा स इष्टी युवोः सत्वात्तत्तमाम वाकान् ॥ ५० ॥ मे इने विष्णुर्मपुकां पतिस्त्वनयः ॥ ५१ ॥ पातस्य स्त्रि
 तिः सत्तनः ॥ ५२ ॥ ॥ ३८ ॥ ॥ ३९ ॥ ॥ ४० ॥ ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥ ॥ ४७ ॥ ॥ ४८ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ५० ॥ ॥ ५१ ॥ ॥ ५२ ॥

॥४८॥

श्रीगोविन्दाय नमः । गीतमस्मत्तमं वर्षातीरुद्धा । मानैः रांस्त्रीरात । माकस्ये तोजर्नं उपोधुतिः । नृणां धूर्तस्य ।
 इन्द्रो ग्रीवामयस्य । गोमयिर्नामवदस्य । दामस्योऽग्नीमदे । इन्द्रो ग्रीवामयस्य । यस्यामृचासुतेन नरे
 इन्द्रो ग्रीवामयस्य । इन्द्रो ग्रीवामयस्य । इन्द्रो ग्रीवामयस्य । इन्द्रो ग्रीवामयस्य । इन्द्रो ग्रीवामयस्य ।
 तावितुः रांस्त्रीरात । मानैः रांस्त्रीरात । मानैः रांस्त्रीरात । मानैः रांस्त्रीरात । मानैः रांस्त्रीरात ।
 स्वास्त्यस्य रवास्त्यस्य रवास्त्यस्य रवास्त्यस्य रवास्त्यस्य । स्वास्त्यस्य रवास्त्यस्य रवास्त्यस्य रवास्त्यस्य रवास्त्यस्य ।
 वेतह्यनस्वती नदीनां । सुविस्तीर्णानि तन्मासमुद्राव । नृणां स्वर्गतीर्णवन्स्वर्गतीर्णवन्स्वर्गतीर्णवन्स्वर्गतीर्णवन्स्वर्गतीर्णवन् ।
 सकोवपुनयोऽपि नास्ति । सुविस्तीर्णानि तन्मासमुद्राव । नृणां स्वर्गतीर्णवन्स्वर्गतीर्णवन्स्वर्गतीर्णवन्स्वर्गतीर्णवन्स्वर्गतीर्णवन् ।
 श्रीतुतस्मान्नः । स्वर्गतीर्णानि तन्मासमुद्राव । नृणां स्वर्गतीर्णवन्स्वर्गतीर्णवन्स्वर्गतीर्णवन्स्वर्गतीर्णवन्स्वर्गतीर्णवन् ।
 द्वाविउतनास्त्यस्य । इन्द्रो ग्रीवामयस्य । इन्द्रो ग्रीवामयस्य । इन्द्रो ग्रीवामयस्य । इन्द्रो ग्रीवामयस्य ।
 मेधनां तावितुः रांस्त्रीरात । मानैः रांस्त्रीरात । मानैः रांस्त्रीरात । मानैः रांस्त्रीरात । मानैः रांस्त्रीरात ।
 सुवतेनां सिद्धां नृणां । सुविस्तीर्णानि तन्मासमुद्राव । नृणां स्वर्गतीर्णवन्स्वर्गतीर्णवन्स्वर्गतीर्णवन्स्वर्गतीर्णवन्स्वर्गतीर्णवन् ।

दयासुवृद्धिः नो मे वसिष्ठोऽस्मीति ॥ इति यत्रैव मन्त्रिनाम् ॥ ते जंथस्य मन्त्रिणां त्रिभुवनः ॥ स्थानो बोधवि
 नीमनुहस्योऽथार्थो मन्त्रो नाथ ॥ त इति डाकणावस्थानस्वतः कवा नीवेतति का किनीवती ॥ गणानां क्रमदशिव
 हुवा नाववसिष्ठवका रुनीयं नो न्यवः ॥ पुत्रियंतः सुदानवः ॥ स्तनस्पदं तदवा मन्त्रेयेतं स्वनस्पदुर्मयो
 मधुमन्तोऽप्यलसुतः ॥ तेति नो वितातवापी चिकः सलनस्वतस्तनयो विस्वदेवतः ॥ तस्मी मन्त्रिणां मि
 नः ॥ १७ ॥ यदेति नो नृपदेनेष्टिका ननोयतदे वयवो मन्त्रेति ॥ इति यत्रैव सवना निमुने गमन्तया
 प्रथमं वयस्य ॥ आदेका वपि मन्त्रे वां सिद्धदुस्तति मोर्मदुस्ततायः ॥ यथा तवे मन्त्रीन्नुषे मन्त्रागा
 यो नो ज्ञातापवावतः ॥ पितृवः ॥ तमुन्ने मन्त्रमन्त्रावितिः सुतो वः ॥ इति यत्रैव सति गणेषु ॥ इति यत्रैव को मन्त्रि
 देवाः स्थिषु यो बुद्ध्या गोदेव कलस्य नाका ॥ सन्ना नो योर्ति सः ॥ तु प्रेम्ना वदुस्तति विस्ववानी यो नस्ति
 कामो नायः ॥ सुवीर्यस्य तः ॥ यत्पन्ना मन्त्रिणां सति सवतो नाविशान् ॥ तस्मानो मन्त्रे मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा
 सुवमन्त्राः ॥ १८ ॥ यत्रैव इति मन्त्रं तं पस्तानां वदुस्तति मन्त्राणां ॥ १९ ॥ तं राग्मा र्णो मन्त्रा
 सो मन्त्रा वदुस्तति सः ॥ वदुस्तति सः ॥ वदुस्तति सः ॥ वदुस्तति सः ॥ वदुस्तति सः ॥ वदुस्तति सः ॥

118251

तिनेकरं इति मन्त्रिते प्रयत्नस्तथा वस्वः। हृदयतले युवजिह्वया। गानः। ॥ ७४ ॥ पुनोभावे जातवावधानं न ते म
द्वित्वमवस्ववन्ति। उते ते विष्णुर्नक्षत्री पृथिव्या विष्णोर्देवत्वपनुमन्त विष्णोर्न ते विष्णोर्कार्यमानो न जातो
देवमद्विन्मः पनुमन्तमापाउरस्तत्त्वानां कर्मसु ब्रह्मर्तं प्राप्य प्राचीं कर्तुं पृथिव्याः। इति वतीथे नुम
ताद्विदुतं लुप्य वसिनी मर्त्ये दरास्ता। कस्तस्मान्नादसी विल्लवे ते नार्थ पृथिवी मन्त्रितो मर्त्यस्यैः। ॥ ७५ ॥
यज्ञार्थं वक्रयुत्तलोकं कुरु नयं तां लुप्य मृषासं मन्त्रि। दत्तं सन्निविष्टं प्रसन्नं माया कृष्णं च न नीप
तनामोषा इति विष्णुर्हृदिताः सां देवस्य नवपुनो नवर्तिवन्वचिष्टा। सातं वर्तिनः स्रुतस्य वस्वा कंदयो
मर्त्यस्य न स्यात् नाना। इयं मर्त्यां ब्रह्मर्तं ब्रह्मर्तं उक्ता तव सा वधर्त्यं ती। नने वृत्तोर्मां विदयेषु विष्णो वि
द्वतमिषो वक्रनेष्विष्टा। वर्षादे विष्णोर्वा सजा कर्ता ते तन्मै कुरु वस्वदत्ता विविष्टा दृक्। वर्थं वृत्तासुष्टु तयो
मि
नो मर्त्यस्य पातस्य स्थितिः सती नः। ॥ ७६ ॥ उमर्तो इयते सन्निष्ठां नो विष्णो वउ उगाया युगात्ता प्रयः
सत्तामर्माने स्यात्ता कर्ता तावत्तन्मै मादिक सात्ता तं विष्णो उमर्ति विस्वकं नता मर्त्यता मेव या वो
मर्तिर्गर्ता पर्वो यथा नः स्रुवितस्य लुप्ये न स्वा वतः उम्वदस्य नयः। तिदेवः पृथिवी मे पृतां विस्व



१०६॥

॥५०॥

न्याः तना व तिस्रः पृथ्वी नृपो जंस्तु विश्वाः । प्रतिशुष्म तु यरो । अस्या देवा यो दिवा दिशति चरन् नक्ष । सुविज्ञा
 नं किं नृपे कनायस्य ज्ञासं व वंत्ती पत्न्यथा ते । तयो यं ह्यत्तं जेतु न डि क्रीयात्स हि मो मो वति नं ता सत्तु ज
 वा उतो मो वक्रि नं दिनो तिन नृत्ता मि युया धान यं तं । दंति न जो दत्ता स्य दं । तमुत्ता वि रं स्थ प्रसी तो रा या
 ते । चर्चि वाम नृत्त देव द्या स मो व्यं वामे वाः नृत्त देव मो । कि म्म स्म तं का त वे रो यणी वे जो प्य वा रं स्ते ज नृत्त
 स्य रं ता । अत्राम् नीयु यं द्या तु धानो स्मि यं दिवा यं स्त र प पु नृत्त पत्न्या । अथा स्य वी ने इ रा ति वि रं यो यो मा
 मो व्यं या तु धाने ता दं । ॥ ५॥ यो मा या तु या तु धाने ता द्यो वा नृत्त वि रं स्मी ता दं । इदं स्यं दं तु म नृत्ता वं ज
 वि रं स्त नृत्तं तो नृत्त म स्ती रं । अत्रा क्रि गा ति स्य नृत्तं व नृत्त म्म नृत्ता तं वं । नृत्त म्मा ना । वं वं ज नं तां अ व स्या
 प नी स्या वा पो स्यं तु नृत्त स्य त प वे देः । वि रं स्य म्म तु तो वि रं स्ती रं तु म्मा य त नृत्त स्यः स्यं वि रं स्य ना व यो
 ये तु स्वी प त रं तिन कृ ति ये वि रं स्ती रं यि ने दे वे स्ती रं ने । प्र वं तं य दि वो अ र मा न मि इ स्तो मा रा तं म प्य वं लं ति
 रा यि वा क्ता द पा क्ता दं य ना उ दं क्ता द ति रं ति नृत्त स्यः प वं ते न । इ तं तु यं प त रं ति स्य रं ता वं इं दं दं स्यं ति रं
 रा वो दं स्त । रा रं ती वे रा कः प वं ने तो व थं नृत्तं स्यं द्य रं ति या तु म्मा ना । ॥ ५॥ दं जो या तु ना मी त व त न रा
 तो रं वि रं स्ती ना ज्ञा ता । ॥ ५॥ वि रं स्ती ता । अ ती उ रं कः प नृत्त रं यि वा व नं पा त्वं व ति रं ह्यत्त प ति नृत्त स्यः उ नृत्त क या तु

एतत्कृतं यातुं कृत्स्नस्वयातुं मुतको कयातुं। सुपुण्योत्तमगच्छयास्तुं दृष्टकैव प्रमणनं इति। मानो न
 नौ कृत्स्नैः जातुमावतामवौ कृतमिष्टुनाया किंमिदं। पृथिवीनः पार्थिवतावत्संस्तुतिं किं दिका
 त्मातृस्थानात्। इति कृत्स्नमां संजातुथानां मुतस्त्वयं माययारा राशना। विमो वा सो मुनं देवानां तु मा
 तेष्टां सुखं मुनं तं। प्रतिवक्षु विवक्षे इत्यस्यो मका गतं। न को लो वथमस्य तस्य रानि यातुमर्हः॥
 प्रतिवक्षु वक्ष्ये। इत्यो मावनुष्टुप॥ माधितय गायये इति वक्ष्यती॥ विस्वस्व न विनुपातु॥ इत्यस्य प्रमणं डलभा
 माविदनादिसंस्तुतस्यो मा विष्णुपत। इति महता ता दधीतुं सखी सुते मुक्तं कया रारां स्त। सुवक्षु
 तं दृष्टं यथा कृतं मां न रं वक्ष्यीत्यर्थः। विद्वेषणां स्वं न नो जयं कनं मर्द्धममृतया विनं। यद्विधित्वा क
 नी इमे नाना रुवंतु तयै। इत्युक्त्वा कं वक्ष्ये इति इत्युक्तेन विद्वेषवर्थेन। विनं तु यं ते मप्यवनि पश्यता
 यो विद्वो कनानां। उपक्रमस्व तु पुत्रपुमात्तं वा कं नेदिममुतयै। मुदे वन तामिदिवः पनीयुक्ता का
 न्देया। इत्युक्त्वा यनायुताय वक्षि वानरा ता यरातामप्य॥ १०॥ वक्ष्यामि इति मे पितु पुतत्रा तु
 नं कृतः। माता रमै क इत्ययः समावस्यो वक्ष्यता यनाय सौ। क्वययवे इति पुत्रा विधिते मनः। अल
 विष्टु अस्मि क कृतं न इति प्रगायता का गालि १३। प्राप्ते गायतमं रत वा वातुयः पुनं इति। आतिः

॥२१॥

[illegible]

गंनस्यवनेषु बुद्धुः कशीरा नुंनया विषयः ॥ १२ ॥ मदेनेष्टितं मदे मुयमु येतावस्था ॥ विरवासां
 तनुता रं मइयुतं मदे क्रिप्ता रं तिनः ॥ रो वा ने वाय प्रिउदे वो मलयि दारु ये ॥ २२ ॥ बुने वस्तु वदे व
 नास्यते विस्व गुते अविद्युतः ॥ २० ॥ इया क्रि महर्य विनेता देवना पत्ता ॥ सनो न प्राप्नु इतं स्या पीति ति
 गालो मे ति पुत्रि न ॥ आता सारु स्या मात तं मुक्ता न ये क्रि नं ता यो वुक्ता य क्रो दनं य इ इ के रि नो
 वदं तु स्यो म पीतये ॥ आता न ये क्रि नं ता यो दनी म यु न रो यता ॥ दि ति पु मा वद नं म भो मं पस्यो
 वि वक्त ता स्य पीतये ॥ १४ ॥ वि वा त ६ स्या जि वतिः सु त स्य पु र्वा इ व ॥ प रि ष्क तु स्य न सि ने इ य
 मा स्य ति स्वा पु र्मा य प त्तये ॥ य २ को अ स्ति इ स्या ना म य ॥ उ यो अ ति व तैः ॥ ग म हा दि प्री न स्य यो
 पु र्मा म य वं न प रि व र्ति त ॥ तं पु रं व ति ष्ठं व थें तु ल स्य सं पि ता क ॥ त ता अ न व नो अ थ वि ता म दि इ रु को
 तु वः ॥ म म वा सु न उ दि ते म म म थं दि ने दि वः ॥ म म प्र वि दे अ पि रा व ने व स्य वा र्तो मा स्यो का व ह्यत ॥ सु क्रि
 सु क्रि दे ते र्पा ते म दि मा स्यो म यो ना ॥ ति दि ता र वः ३ पु र्वा वे न म अ ता म य स्यो मे य ता स्य ये ॥ १५ ॥
 स्या न र व्वा न व नं व तः २५ य ता कं न यो पु र्मा ॥ उ त वा म स्य व स्य न स्य के त ति यो अ स्ति या वः ३ पु र्मा ॥ य न क्ता
 म यो मा म दे र्मा क त वा क्रि नं ता यो ॥ २० ॥ वि र वान् म तं सु र्यो तं गा र्थं ग स्यो स्यु न इ वः ॥ न पु र्मा यो नि

[illegible]

स्तमा नम गो न नि वा वि के त । न गा य त मी य मा न । मानं ३३ पी य न्न वे मा रा र्थ ते प ना दाः । सि
 का रा वी वः रा वी तिः ॥ १०९ ॥ वृ य मु त्त वा नि दि दं यी ३ इ त्वा यं तः स स्ता यः । का वा पु क थे ति क त्र ने । न ये म न्न
 म तं डाः ॥ ३४ पु त्र या द्वा नै ति मा र्हा णी या अ त्त म् । स्त मा न् । मु द्वा ० इ व यु वं का निः । मो ३२ अ त्त उ र्हा णी
 वा ह्ना यं क न दा ने न्ना स्त म् । स स्ती न इ व का मा ता ॥ १० ॥ वि श्वा को स्य वी न स्ये तु ति दा व नी । स म् । ति । त्
 पु क्त त स्य म नो णि । मा तु वि । रु का वे वं तं म य्ये वि श्वा रा व स्ता ना न् । य रा स्ते न रा न् पु तेः । को र्हे न
 स्तो त् वि दं य स्तो मं वी ना य रा का ये । स न्ना वि वृ न र्था यि । यो वे र्द मा अ क्खि व्वा वं तं क नि त्त म् ।
 वा र्कं स्तो त्त म् । गो मं तं । पं नं पं न्ना मि ह्मो ता न्ना था व त्त म् । मा य । स्तो मं वी ना य रा न् । ॥ १० ॥
 वा र्कं वृ त्त म् । तु त्त म् । मा य्ये ग म् । न्ना ने न्ना स्त म् । नि ये म ते रा त्त म् । तिः । १३ रु द नी वृ त्त म् । को रा ग्मा वं क्त त्तः
 स स्ता यः । गी ति स्तु तं । नि र्वा त्त म् । १४ वः स्ये । मा ना र्वा दि र्वा ताः स्ये । मा ना र्वा दि । ति वि न्नी
 वः रा वी वो न ना य म् । का स्य म् । ॥ ३५ तं स्ये । वा स्ता व र्थ नि म् । ने न्ना यं । ३६ का नि मा वृ त्तः ।

॥३३॥

निरस्वशास्त्रेति वाचः इक्यादुत्तान्तानि। स्यात्तादयिनेरावांस्त्रि। ७७॥ एवं च त्रिविधमिवास्त्रि। ७८॥
 वक्ष्येत्तस्यः। स्यात्तादयिनेरावांस्त्रि। ७९॥ वक्ष्येत्तस्यः। स्यात्तादयिनेरावांस्त्रि। ८०॥
 यस्मिन्निर्वास्त्रि। स्यात्तादयिनेरावांस्त्रि। ८१॥ यस्मिन्निर्वास्त्रि। स्यात्तादयिनेरावांस्त्रि। ८२॥
 तिरास्त्रि। स्यात्तादयिनेरावांस्त्रि। ८३॥ तिरास्त्रि। स्यात्तादयिनेरावांस्त्रि। ८४॥
 स्यात्तादयिनेरावांस्त्रि। ८५॥ स्यात्तादयिनेरावांस्त्रि। ८६॥ स्यात्तादयिनेरावांस्त्रि। ८७॥
 स्यात्तादयिनेरावांस्त्रि। ८८॥ स्यात्तादयिनेरावांस्त्रि। ८९॥ स्यात्तादयिनेरावांस्त्रि। ९०॥
 स्यात्तादयिनेरावांस्त्रि। ९१॥ स्यात्तादयिनेरावांस्त्रि। ९२॥ स्यात्तादयिनेरावांस्त्रि। ९३॥
 स्यात्तादयिनेरावांस्त्रि। ९४॥ स्यात्तादयिनेरावांस्त्रि। ९५॥ स्यात्तादयिनेरावांस्त्रि। ९६॥
 स्यात्तादयिनेरावांस्त्रि। ९७॥ स्यात्तादयिनेरावांस्त्रि। ९८॥ स्यात्तादयिनेरावांस्त्रि। ९९॥
 स्यात्तादयिनेरावांस्त्रि। १००॥

॥५४॥

गमः ॥ ७३ ॥ तमे मथुमते मागिरुस्त्वोमासदीनते। अवाकितो यनस्यानक्रितो तयोवाक्यं तो न वा इव ॥ ७४ ॥ कं
 तव इव प्रगवः सुय्या इव विस्वमिमातमानु ॥ ७५ ॥ इत्येतो मैतिमिदं यत आशुतेः चिमेभासो अखनक। युज्वादि
 इत्येतममनी इत्यनवतः। अवाकितो मैप्यवः ह्यो मैपीतयो इत्यनवेति नागदि। इत्येतो का नवो वा वसुधिवि
 वासो मैथस्यातये। स्यात् नो मप्यवजिद्विगि विमो वेनो नराणु धादवः। निर्विद्वदुतीत्तो वृत् ॥ ७६ ॥ ततो न
 स्यात्तः। निर्विद्वदस्य मयस्य मायिनो निः पर्वतस्य गा नो कः। निर्विद्वदो नुतु निर्विद्वदो निः सोम
 इत्येतो न सः। निर्विद्वदस्य मयस्य मायिनो निः पर्वतस्य गा नो कः। निर्विद्वदो नुतु निर्विद्वदो निः सोम
 मा को न याताः। विस्वमा अनासो तिष्ठमथैव दिवि भावमानः। नोदितं मे पाकं स्थामा सुपुनं क ह्यत्रा
 अनाश्रयो निवोधनः। यस्या अनाश्रयो तिष्ठमथैव दिवि भावमानः। नोदितं मे पाकं स्थामा सुपुनं क ह्यत्रा
 नुवसिद्विद्वदो न सः। निर्विद्वदस्य मयस्य मायिनो निः पर्वतस्य गा नो कः। निर्विद्वदो नुतु निर्विद्वदो निः सोम
 यद्विद्वदस्य मयस्य मायिनो निः पर्वतस्य गा नो कः। निर्विद्वदो नुतु निर्विद्वदो निः सोम
 वके कपुडः इत्येतो न सः। निर्विद्वदस्य मयस्य मायिनो निः पर्वतस्य गा नो कः। निर्विद्वदो नुतु निर्विद्वदो निः सोम
 तस्य नो न सः। निर्विद्वदस्य मयस्य मायिनो निः पर्वतस्य गा नो कः। निर्विद्वदो नुतु निर्विद्वदो निः सोम

देयायस्युक्ते। आमुष्मात्तोममपिवरुमुत्तुत-
 म्ममे। असा। विरैतइइवत्तायवौयदेनिवृद्धावृयेमिने॥१॥
 स्रुजानुवस्तुतिः। पुत्रावर्गकत्तातेसुवीर्यज्ञोतिनमृत्तुद्धितिः। मातैममासमि
 तवीमरुतेवृद्धोमतिवस्तोकृतुं पत्यैमनुवरायुः। त्वात्तामनुस्तिगर्गवावसेवष्टान
 नानेअस्य
 योषति। मधात्तं वृद्धाः स्तान्तेताथेनवस्तुयमेद्धिदवापिब। अस्वीनवीरुपुत्र
 सा। स्वात्तातावावसेवेतेसदावृद्धोयातिसत्तामुप। नृपेनतनव्येनवपानमा
 गेद्धिपिब। सो
 मंवरा। मनु। निमे। यमानोमप्यवदिवेदिवृद्धावृयेमिने॥२॥
 ममिइः। विपस्यतिउपनुनंयुक्तेवस्तुतादनीमावकगामवत्तमा। स्वयं
 विहमंन्यतेगंरुनि
 र्दतोयत्तातोमस्तत्तवस्तोइइतेजानंयुद्धा। समुद्रितंतस्ये
 द्विर्दवापिब। नयेमायाधर्यवृ
 त्तोममिइयस्योतनामप्येवृद्धस्तोइयो। विरैतनेसुवतौ
 दृष्टवृद्धावातावप्यता

॥२५॥

मनीरंमपसुवस्तः। अविंदासप्तयोधनसिधोवदंतुसवनेउवा। प्रपुषतां वृणीमदेयमोयपुत्रव
 स्यां। सप्तकलिकुपुत्रुतनोपिआतुमं नायेविमोवन॥३॥ सःनः। सिद्धिदितुत्रुकोविदुनंनास्येन
 योविमोवन। वेतनः। सुवेरंमचिदं वसुधं तंदिनोषिमर्तः। वेमिद्वपुषंनं कस्येवेमिद्वोतवजा
 प्पणो। नतस्यवेमनांदिदं देस्योसुवेपुत्रुयथासौ। पनागावोयवसंकविंदापणोनिद्वंनेकौ
 कामतः। अस्माकं पुषंनवितासिवातवुमंदिद्वोवाकसगतये। सुधुनंनार्थः। सत्ताखं कुतंगस्यदि
 विंदिपु। नासुत्वेपस्यसुतगंस्थनातिपुत्रुवसेधुमंनदि। धातिः। तातार्त्तिका। अवस्यवादिनः। प्रि
 मेयेननिधुतिः। पक्षिः। सप्तकस्यानुनिर्मकासकंनिधुवाजिगवाकृषिः। वृद्धाखिमेमतिप्रित्वेन
 नानागुः। गां। तं कं। तमेकनाखं। तं कं। तमेकना॥३॥। पुनादिदेवयहाती। सःनः। सिद्धिदितुत्रुको
 विदुनं। अथयेडावयात्वे। सप्तकस्योवस्यवतेयविद्युता। यदि। उवागपागुदं। यं। मेउनिधोम
 पुतः। कावा। वृत्तगेवः। सुयैववासायानंदः। उचरत्वा। ३॥। मृद्वानो। स्त्रीपत्रयुधवः। विवो। सुतस्य

नमः। सज्जितविश्वोत्तमवर्षः। १५ वे देवतुविश्वमिति पाता वल्लभा सुतः। विश्वाम्नास्यदीनत्तमा। वयमं वा
 तद्विद्विषः। तां ज्ञातिपुंजुलोत्तमां। गोतिर्जिहीममो अस्मत्। इति वस्तु सुतमं पः। आयाद स्वात्तमं
 वतः। विना त्वत्समर्पितः। मदेने पतं मर्दं। आत्तं अस्तु पस्तुति। जनु ३ ह्यु २ एतं रा। वस्तुमां इडाति
 मेपितुः। माविष्मत्तद्विषं सता इडाया तु नाम तव तननात्तन। यो माया तु या तु पाने तमादे। १२ः स्तो
 त्तं सुतं वा १७ तनं। इडाया मा पविवा तु नु विस्वतः। इडाया मा तपतं न प्रकृतं। गोमा सुने को
 ज्ञा मा सुने कः। स वद्वं नं रा स्यात्तमा। पृथग्मा यत्र गायत। तिस्रो वावः प्रवद्वं मा तिस्रः। तिस्रो
 वावो वस्तुमां ३३ विद्वाम्नास्यदीनत्तमा वस्तुमां। कविः ३३ इति स्त्रीरा कलसंदितायां पंचमा
 क्षमे सत्तमो ध्यायत ॥ कविः ३३ पुनाति देवयत्तुत्तं ज्ञातुं न सति स्वित्तु। वित्तुं नु विस्वपातनन।
 नुवत्तं स्याम नो अज्ञानयेन पृथुपा कस्त्या। स रवे अस्वि नो पत्नं। युवात्तमां वा किनी वस्तु प्रसिद्धो मा
 अहत्तमा वस्तुतो ज्योतिषे। पुनृविद्यात्तुतयो पुनृमं डा पुनृवस्तु पस्तु पस्तु मा वा स्यो अस्विना। म-

॥३५॥

किंवा वाक्येन मेव यथाशुतस्मत्ता। गंतानां शुरुषो गुरुः ॥१॥ ताद्ये देवाय शुरुषे शुभे धाम विता
 निगी०। पृथ्वेर्गर्भे निमग्नतः। आनृत्तो मुमुक्षुर्वतुः रमेनेति शुरुतिः। यातमखेति नखिना। येति
 स्थित्यः पनावतो। पुनो विस्मयति वेषना। ती० नकु ननेति शीय यः। पुनो गोमती निषेउतस्यातीनरु
 विनो विषयः स्यातरो सिते। आनो गोमंत मखिनास्तुवीनं शुनयं नखि०। कोळमखावती निषः।
 ॥७॥ वाक्येन शुरुतस्मत्ता। इत्यादिनेन वतनी। विदंतं रोमं मथे। सुस्मत्तं वाहिनी वरुम पवसुस्व
 प्रयः। छदियं तमहात्मा। निषु बुद्धा कनानां या विष्मंतु यमागत०। मोक्षु न्मां उपायत०। इत्यादि वत
 मखिनायुवं मरुत्तया। गताः। मथो रतस्मयिना। सुस्मो आवरुतं नयि रतवंतं लरु स्मिता०। पुत्र
 रु० विस्वभारता०। ॥३॥ पुत्रो विधिवा नन विस्वयं ते मनीषिताः। वाप्यनिस्विना गत०। कनो र्पो वृष्ट
 बर्हिषोरु विष्मंतो कनं कृतः। युवां रुवंते कखिना। सुस्माकं मद्रावा मुमं र्पो गोवादिष्टो मंत
 युवात्मा०। पुत्रस्विना। मोक्षु० मथुनो हतनादि तेन यवर्षितो ततः। विवत मखिना। ते ननो वाहि
 नी वरुपखेतो कायरा० गवे। वरुत० पीवती निषः॥४॥ उनो निवा इषउत सिंधु नरु विता। कपुषा

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

॥५७॥

मामेव। उत प्रवर्धयामासि॥ उत बुद्ध्यामावृणुते च वृद्धवर्द्धिवः। विप्रो जत दमनी वस्यै। स्मृति कर्ता
 अनुपतापो न प्रवर्तनीयुती। इन्द्रवर्धनी मृतिः। इन्द्रमु कषा निवा वधुः। समुद्रमि वृत्ति पवः। स नैत
 मन्मम कर्त॥ १०५॥ जानो याद्विपना वतो दनि त्तां द्युति त्तां पश्ममि उरुतं विव। त्वामिह
 तदंतमु क्कनो यो वृद्धवर्द्धिवः। उत प्रवर्धयामासि॥ उत बुद्ध्यामावृणुते च वृद्धवर्द्धिवः। स नैत
 नवर्तेत रा॥ अनंशु काना स्यादं देवः। मंदंश्वा स्य स्यात्ति उते इन्द्रा यो ता वति। मह्यु विवस्थ तो मती। वाव
 भुनउ प्रवि वषा वृद्धा नो न वीत्। वृत्त कार्त्त मया तमः॥ १०६॥ न विद्विर्बुद्धा स्यो क क्षी न न क क्षता॥
 इन्द्रो यो वृद्धा स्ये वस्य। मर्या कं तां सुतां उ व की त पृमा जति प्रयेः। रातं वृद्धं त द न यः। इमां सुपु
 वार्त्ति यं म जो पृतर म विप्रुषी॥ कर्ता उ कथे न वा वधुः। इन्द्रमिह मे क्षी नां मे भ वृत्ती त मर्त्तः। इन्द्र
 सानि प्रुत तयै। म वरिं द्वा प्रुत सुत विप्र मे प सुतां द नी। स्यो मये यो य व दतः। रात म कं विनि विवे
 ल द स प र्त्त वा इन्द्रा यो तां स्या द्वा ना॥ त्वीति रातान्म वं तां स्य द स्या इन्द्रा यो तां। इन्द्रा यो तां
 मी उत न द्वा कौ दिव म स्यां व तुष्ट को इन्द्रा यो तां द्वा कर्त्त॥ १०७॥ प्रय दं स्त्रि सुत मि पं म उ ते

विप्रो अहं न तः। विप्रो वरुणः। विप्रो वायुः। विप्रो गते विप्रो यवो यामेऽनुताम विप्रः॥ निप्रवताम कास्य मउ
 दीनयते वाचुर्निवसिासुः॥ पृथ्वी मातनः॥ पुनर्त पृथ्वी मिथं। वपंति सुतु तो मिदं प्रवै पयं त्रिपर्वता
 न। यजामां यांति वाचुर्निः। निप्रवताम कास्य मउ विप्रो यवो यामेऽनुताम विप्रः॥ निप्रवताम कास्य मउ
 पुष्पाः॥ पुनर्त मुनये पुष्पाः॥ विप्रो यवो यामेऽनुताम विप्रः॥ निप्रवताम कास्य मउ पुष्पाः॥ पुनर्त मुनये पुष्पाः॥
 तिनीन ते। वायुमपि पुनर्त विप्रः॥ निप्रवताम कास्य मउ पुष्पाः॥ पुनर्त मुनये पुष्पाः॥ तिनीन ते। वायुमपि पुनर्त विप्रः॥
 रमां मे मउतो निप्रवताम कास्य मउ पुष्पाः॥ पुनर्त मुनये पुष्पाः॥ तिनीन ते। वायुमपि पुनर्त विप्रः॥ निप्रवताम कास्य मउ
 मउ। उहं कवं यजुर्निः॥ निप्रवताम कास्य मउ पुष्पाः॥ पुनर्त मुनये पुष्पाः॥ तिनीन ते। वायुमपि पुनर्त विप्रः॥ निप्रवताम कास्य मउ
 यं विप्रो यवो यामेऽनुताम विप्रः॥ निप्रवताम कास्य मउ पुष्पाः॥ पुनर्त मुनये पुष्पाः॥ तिनीन ते। वायुमपि पुनर्त विप्रः॥ निप्रवताम कास्य मउ
 इत्येतमि तु तो विप्रः॥ अथो वयं विप्रो यवो यामेऽनुताम विप्रः॥ निप्रवताम कास्य मउ पुष्पाः॥ पुनर्त मुनये पुष्पाः॥ तिनीन ते। वायुमपि पुनर्त विप्रः॥
 निप्रवताम कास्य मउ पुष्पाः॥ पुनर्त मुनये पुष्पाः॥ तिनीन ते। वायुमपि पुनर्त विप्रः॥ निप्रवताम कास्य मउ पुष्पाः॥ पुनर्त मुनये पुष्पाः॥
 तो अहं न तः॥ उहं कवं यजुर्निः॥ निप्रवताम कास्य मउ पुष्पाः॥ पुनर्त मुनये पुष्पाः॥ तिनीन ते। वायुमपि पुनर्त विप्रः॥ निप्रवताम कास्य मउ पुष्पाः॥ पुनर्त मुनये पुष्पाः॥

[illegible]

वानोवदं त्वां तर्निने ॥ पततः ॥ धाता न स्तुते मयं यथ सुमिदि कानि पुंवरुहं दोन सुनौ सुविषो ॥ वेत्ता
 तानुसि विदं स्थने ॥ ७४ ॥ आनो विस्वाति नुर्जितिन खिना गच्छतं युवः ॥ दद्याद्विनां पवर्तनी विवतं सो
 मं मयुः ॥ आनुनं मावमस्विना नयेन सुयति रा ॥ तुक्ती किं पपयतासा कवी गंती न वेतत्ता ॥ आया
 तं न तु पुरस्म यो तर्निना ह्य वृद्ध तिथि विदो यो खिना मयु कपाका नां सवने सुतः ॥ आनो यातं ॥
 वस्म यो तर्निना ॥ ३५ ॥ प्रिया ॥ पुनः क ताव स्म वा मिषे द ह्यं वा वस्तो मम मयुः ॥ आनो यातं मुपे सुत
 खिना सो मं पीतये ॥ द्वां नु स्तो मं स्पव धना प्रक वीथ वतिर्निना ॥ ७५ ॥ यत्रि द्वि वां पुन न्वयो कुतु
 ने वं स्ते न ना ॥ आयात मरुदना गे त मुपे मां सु सुति मम ॥ दिव स्वि द्रो वना ॥ यानो गंतं स्व विना ॥ ७६
 ति वं ह्य प्रवेत ला स्तो मे ति र्द वेन सुता ॥ कि म नो वयं स्थि ते स्म ह्यो मे ति न खिना ॥ पुनः क ताव स्म वा
 मयि मां विवृणो न वी वथत् ॥ आवा विप्र दृ का वस्ते स्म ह्यो मे ति न खिना ॥ न वि प्रा वृद्धं त मा ता
 नौ तु तं म यो तु वा ॥ आय वृं यो यमौ न वृ मति म द्वा किनी वस्तु ॥ वि र्वां न्ना खिना यु वं प्र पी द्या व
 गच्छतः ॥ ७७ ॥ अतः स्रुद स्थे ति ति कि न ये ना यात मस्विना ॥ वृहो वां मयु मुद यो रीं स्ती क्ता वाः कविः ॥ ७८

॥६॥

त्रुमंशुवस्तुमनोतनोनयुगाः। स्तोमं मे सुखिना विममतिव द्वां अनुषाताः। स्नानो विस्वा न्नास्विना
 पुतेनाभाः स्य द्रव्याः। कृतं ननु विर्यो वतोमानो नीनथतं निदे। यं नीलत्ता पना वति यद्वास्थो म्भ
 वेने। शतः स्य द्रव्यं निमिहानवेनायातमस्विना योवाः नासत्ता वृषिगीर्तिर्विस्वा न्नावी वृथत्।
 तस्यै सुदस्यं निमिहानुमिषं पत्रं व्यतसुते॥७॥ प्राश्नातुर्कं व्यतसुतमस्विना यच्छतं युव
 योवाः सुभायं तु शर्वदसुया द्वां न स्याती। स्नानो गंतं निरास्ये मं स्तोमं पुतुका। कृतं नः सु
 स्विनो नने मानेति मतिशये। स्नावां विस्वा तितुतिः। प्रयेमै धाम्नुषत। नार्कं तावधुनागा
 मस्विना यामिदुति॥ स्नानो गंतं मयो तु वास्विना स्य तुवा युव॥ योवां विपन्नुधा तिसिगीर्ति
 विप्रो न्नेवी वृथत्। यातिः कावुं मे र्धाति विंया तिवशं र्धा वृकं। याति गो र्ध्या मावतं ताति
 वतं नना॥७॥ जयाति नितु र्गदे स्य मावतं कृत्वा धने। ताति वृत्तमां न्नास्विना प्रावतं वाकं
 स्नातये। ववाः स्तोमः सुवृक्षयो गि नोवध्वि र्वन्ता॥७॥ त्वावत्तं दतमातानो तुतं पुतुका
 तीति पुनान्नास्विनो ना विः र्णां तिगुर्धा पुनः कवी नृत्य पत्तं निवृत्ती वेत्ता स्याति॥७॥

मानुनमस्विनायुव. वृहस्पतिग. तमकये। प्रारभ्यैयत्तमवृत्त. पूरुषुद्विद्युत्तंयान्ननोतयः।
 यदु. तद्विद्वेयद्विद्यत्त. वृमानुवा. कर्तुं। नृत्त. तथैतमस्विना। येवा. ३. स्तंस्वस्विनाविप्रीसः।
 पविमामृत्तः। एवेक्कावस्ववोथत. नृत्त. वी. पृ. मोमिस्विनास्वोमेनपर्विषिष्ये। नृत्त. सोमो
 मथुमान्वाजिनीवस्वुयेनवृत्त. विरैतयः। यदु. सुयवन्स्वतोयर्तोपथीष्टुत्त. सस्वाकृत.
 तेनमाविशमस्विना। १२. यान्वास्वत्तातुनंत्त. योयद्वादेवतिष्ठाव्यः। नृत्त. वी. वृत्तोमुतिति
 नर्व. थत्तेद्विष्णुतुंदि यत्त. य. मानुनमस्विनोर्द्विस्वोमंवि केवामयो। नृत्त. सोमंमथुमतमंप्पुमं
 स्थंवादेवति। मानुनंनृत्त. वृत्त. नृत्त. तिमामोस्वस्विना। नृत्त. वा. स्तोमादुमेममूनतो नृत्त. वी
 नतायदु. प्रवा. नास्वत्तो कवेनोत्रस्ववीमर्द. यद्वावात्तीतिनस्वनेवेक्कावस्ववोथत. यद्वा.
 कर्त्तुवी. उत्तयद्वास्व. वृत्त. वृत्त. द्वा. दी. यत्त. माकुदावा. ए. यी. यद्वा. वै. नृत्त. स्ता. दनेष्वेवेद्यौनस्वि
 नावेद्यौवा. १३. यत्त. वृत्त. द्वा. उत्त. नृत्त. वृत्त. नृत्त. पनुस्वा. उत्त. वृत्त. गृत्ता. उत्त. नृत्त. नृत्त. पा. वृत्त.
 स्तो. कायत्तनयायत्तात. यद्वि. ३. त. नृत्त. वी. यो. नृत्त. वृत्त. नृत्त. वृत्त. नृत्त. वृत्त. नृत्त. वृत्त. नृत्त. वृत्त.

[illegible]

॥६७॥

[illegible]

॥६३॥

॥॥पंचमहाशकः समाप्तः॥॥

नयितामः (श्रीमः) श्रीमद्विना विममसि वद्वी अनुपाताः । ज्ञानो विस्वां न विना पुत्रं पाथां स्पृष्टव्यम् । कर्तुं नृत्तिया वतो मानो
 नीनरतं जेदेयः नीलत्वा पनु वतिराका खोन्नथं वने । जतः सुदस्य निरिच्छिन्नवे नाया तमस्विना । यो वां न सत्मा व
 विममसि वद्वी नवी वथत्वा तस्मै स्पृष्टव्यं निरिच्छिन्नमिषं थत्तं तत्तुतः ॥ ५५ ॥ अस्मादुक्तं ॥ सुतमस्विना यत्तं तत्तुव
 यो वां ॥ सुमायेतु वद्वी सुयावा । न सती । आनो गतं पुनिरादये मं स्तोमः पुत्रुत्तुना । कुतं नः सुस्विना नने मात
 सुतिष्ठेयो । आवा विस्वाति नृत्ति । प्रियमै धाम्नुष्यता । नार्कं तावधु नाणा मस्विना याम्नु तिष्ठामाने गतं मये पुत्र
 स्विना पुं तुवा युवः । यो वां विधनु पातिति नृत्ति । विद्वेहो नदी वधुत्वा यत्तिः का वं धाति ध्याति विरां इरा वं न
 ति नो रं नृमा वतं ताति नो निवतः नरा ॥ ५६ ॥ यत्ति न न तत्तुव दं स्पृष्टव्यं तत्तुव धने । तातिः ॥ ५७ ॥ अस्मा ॥ अस्विना
 प्रावेतं वा नृत्ति तयो । प्रवां स्तोमा स्पृष्टव्यं नो निवो वधुत्वा विना । पुत्रं तावत्तं तत्तुव तानो पुतं पुत्रुत्तुना । वीतिपु
 तः ॥ अस्विना नृत्ति विद्वेहो नदी वधुत्वा यत्तिः का वं धाति ध्याति विरां इरा वं न
 स्पृष्टव्यं तत्तुव धने । तातिः ॥ ५७ ॥ अस्मा ॥ अस्विना
 तमस्विना । यो वां ॥ ५८ ॥ अस्विना विद्वेहो नदी वधुत्वा यत्तिः का वं धाति ध्याति विरां इरा वं न
 मास्ते । मायं स्तोमा पुमा । वाकिनी वधुत्वा यत्तिः का वं धाति ध्याति विरां इरा वं न

॥पंचमाक्षकः समाप्तः॥

॥ वसुधैव कुटुम्बकम् ॥

दनिः३० यई० इत्यो मपातमो मः३० रा विमवेतति। येना दंस्त्रिं मा३० वितां तमी मको येना दरा यमपि० गु० वे
 पयं तं स्त्रिं न०। येना लमु३० मा विद्या तमी मको येन स्त्रिं पु० मकी न० यो न० ला० ३० व प्रको दयः। पं० यामु३० त
 स्त्रिं या तं वेतमी मको३० म० स्त्रो म० म० ति३० ये व्यु३० तं न० पु३० त म० द्वि० यः। येना नु३० ल० म० ३० म० स्त्रा० व० व० द्वि० य०। ३० म० क०
 व० स्त्रा० गि० व० तिः३० स्त्रा० मु३० इ० व० पि० न० वे०। ३० इ० वि० र० वा० नि० नु३० ति० ति० र्व० व० द्वि० य०। ॥ ॥ यो नो३० दे० वः३० पं० ना० व० तः३० स्त्रा० सि० त० न० यो
 मा० म० को३०। ३० वि० न० व० सि० प्र० य० र्व० व० म० य०। ३० व० व० म० न० स्त्रा० ल० न० वे० पु३० त० व० को० ग० त० स्त्रोः३०। ३० स्त्रा० यो० नि० नो३० दे० स्त्रा० म० व० थ० यि
 व०। ३० य० इ० व० व० य० ल० त० वे० स्त्रा० द० स्त्रा० म० द्वि० वा० म० य०। ३० स्त्रा० दि० त० इ०। ३० य० म० द्वि० व० वा० व० पु३०। ३० इ० ३० स्त्रा० य० स्त्रि० न० स्त्रि० ति० र्व०
 र० स्त्रा० न० मो३० य० ति०। ३० म० वि० न० वे० व० स्त्रा० ल० द्वि० व० वा० व० पु३०। ३० य० तं न० स्त्रि० यो० व० ता० थ०। ३० ति० न० वी० य० स्त्रा०। ३० य० य० र्व० ती० ३०
 पु३० वि० या० मि० मी० त० इ० त्वा० ॥ ग० त० यि० र० स्त्रा० म० के० व० य० ३० क० त० ३० नी० त० मा० न० पु० क०। ३० स्त्रो० मो० नि० ३० स्त्रा० वा० व० पु३० मि
 मी० त० इ० त्वा० ल० मि० मि० ति० र्व० य० प० व० व० इ० ३० स्त्रो० म० स्त्रा० पी० त० यो०। ३० री० वा० री० व० ल० व० ते० मि० मी० त० इ० त्वा० य० वि० प्री
 उ० क० य० वा० क० स्त्रो० ति० व० म० उ० ना० य० वः३०। ३० पु३० तं न० वि० वा० मा० स्त्रा० म० त० स्त्रा० य० व०। ३० त० स्त्रा० ना० के० का० दि० ति० र्व० मो० मि
 इ० य० की० क० न० न०। ३० पु३० पु३० र० स्त्रा० मु३० न० य० न० त० स्त्रा० य० त०। ३० ति० वि० म० य० इ० त० यो० नु३० व० त० प्री० स० यो०। ३० दे० व० वि० इ०

१ यथास्यैत्युक्तोऽप्ययं मानस्यसक्तते। एकमे
 सुयस्यनं तस्यैत्युक्तं
 उक्तिः ॥५॥

॥१॥

तुलनीनुरूपयत् ॥१॥ यत्तु मेमिं उविस्त्विष्यदोपतितज्ञात्वे। यदा मुजहुमं रस्येस्यमिं उतिः। य
 दासक्यनावतिल्यमुदेमथम-रस्ये। सुस्यमकमिह्युतेन तस्यमिं उतिः। देवदेवोवस्य रं उमिं उरुणा
 यत्ति। अथाप्युक्तं तुर्वलोकोनसुः। सुकेति युक्तेकादस्य-रस्ये मैतिः। स्योमपातम-रस्योत्वातिवे-उंवा
 धुवातिरुम ॥४॥ मदीनं स्यप्रतीतयः। पुकीतुत प्ररस्यस्य विस्वा वरुतिरुगुपे काजिगुः। उं वरु
 सुकतं वेदेवासौ। उथने पुनः। उं वातीननु यत्तारणमो कस्ये। मरुतं मरुता वयं स्तोमैति रु वनसु
 तः। मरुतं नृत्तिप्रमाणं तुमः स्यमो कस्ये। नयां विविक्तो नां रस्यीनां तन्नि कति वृद्धिर्मा। अमादि रस्यति
 येस्यमो। कस्यमयदि उतनामो देवा र्वादिने पुनः। आदि हैरुयता रुनी ववहुतुः ॥५॥ यदावत-
 नं वीवतं रावस्यावहि नवभाः। आदि हैरुयता रुनी ववहुतुः। यदाते विष्णुमो कस्य ताति पुडा विवहुमे। आ
 दि हैरुयता रुनी ववहुतुः। यदाते र्कयता रुनी वावथा ये विवेदे। आदि है विस्वातु वना नियेमिने। यदाते मा
 नुता विस्वातु नमि उति येमिने। आदि है विस्वातु वना नियेमिने। यदास्यमिं उति विस्वातु वना नियेमिने
 थानयः। आदि है विस्वातु वना नियेमिने। उमां तं उं उं उं विस्वातु वना नियेमिने। आदि है विस्वातु वना नियेमिने।

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

तु गे द्विप्रतुर्वमह्योऽनुतस्य गोमेतः। तं तु तनुषु उर्ध्वं यथा विदे। यच्च क्रास्तिव नुव त्रियद्विवितैस्त्वद्व
 यद्वा समुद्रं पश्यो विते देस्तिग। ॥ ३३ ॥ वधतु नो। निमड्डं तु तास्य इदं वः। इदं कृविष्मती विस्तेजनातिशयः।
 तमिद्विप्रोऽभवत्पर्वः प्रवर्ततीति त्रुतिर्तिः। इदं क्रोती र्वथयन्वया इव। तिकं उके सुवेतनं देवार्थो यक्रम
 ॥ ११ ॥ ततः तमिद्वधं तु नो गिनः सदा वधं स्तोताय वेजने वतः कृषा न तु या इये। ॥ १२ ॥ यिः यावक उर्यते सोऽन
 हुतः। तदुत्तुस्ते वेततियद्वं वनेषु पर्वेषु। मनो यत्वा विते कृषु विवेतस्य। ॥ १० ॥ यद्विदेऽस्य माव न तु न स्य
 पृथग्निः सः। येन विस्वा कृति द्विषोऽनता निमः। कदा ते उगि वीतस्ते तात वा त्रांतमः। कदा नो गये न
 स्यो वदेनैव यः। इत ते स्युः कृता दनी र्वथ। तावकतो र्वथ। अकृयस्ते मृदितं मृयमी मदे। तमी मदे
 उतुतुतं नृद्वं प्रजाति त्रुतिर्तिः। निवर्द्धि विप्रोऽस्य उद्वधं विते। वधं स्वि। सुपु उतुतुतं र्विषुता नि त्रुतिर्तिः।
 पुमस्वे विष्णु मिव प्रवा वनः। ॥ ११ ॥ इदं तम विते देस्ती व्वास्तु वतो नृद्वधः। नृता देवि मिते यियं मनो
 यियं। इदं तम स्य मा मृता उकृ न स्यो मपीतयो दनी इदं प्रतुतुतु नृतिस्ते नृतिस्ते नृते तव उद्वधः
 स्य नृति स्य। इतो मृता वती विस्ते नृति वयः। इमा मृता वतुतयः वधं कृषतं यद्विषि। नाता यक्रम

लं० पु० अ० वि० को० अ० श्री० ज्ञानि० व० म० ले० का० वि० प्र० य० त० ध० ने० । मि० मी० ते० य० क० म० न० य० वि० व० स्त्री० ॥ ७० ॥ व० पा० य० मि०
 उ० ते० न० वे० उ० ना० ले० व० य० ल० न० की० । व० पा० व० र० त० क० तो० व० पा० व० य० व० य० या० वा० व० य० म० य० व० पा० य० मो० अ० य० न० त० व० य०
 य० को० य० मि० व० स्त्री० व० पा० व० व० । व० य० वा० व० य० ल० उ० वे० व० किं० वि० ता० ति० नु० ति० ति० । वा० व० य० किं० वि० ति० शु० ति० व० य० क० व० य० ॥ ७१ ॥
 य० किं० उ० क० य० य० त० मी० री० य० व० स्त्री० व० क० य० त० । स्त्री० ता० मे० गो० व० क० ल० य० ल० य० । ति० के० य० म० स्त्री० मे० ति० ह्ये० य० रा० वी०
 प० ने० म० नी० पि० ता० । य० उ० क० मो० व० ति० स्त्री० य० । ये० नु० श० उ० इ० नु० न० ता० य० क० म० ना० य० ल० य० ते० । गा० म० खं० पु० क० यी० उ० को०
 न० ते० व० त० स्त्री० रा० थ० ल० उ० इ० वी० न० म० त० य० । य० किं० ह० य० स्त्री० ल० तो० म० य० । य० क० उ० इ० म० व० थ० यी० म० उ० म० । वा० व० थ० यी० न० व० क०
 ता० व० पु० दा० वि० वि० ॥ ७२ ॥ वा० व० य० न० स्त्री० मे० ते० य० वि० स्त्री० य० ना० नि० किं० म० य० । इ० ति० मि० डा० व० ती० म० को० का० त० त० म०
 ति० न० म० उ० स्त्री० मे० ल० ना० व० ना० । उ० इ० य० र० ति० न० इ० ल० । उ० ज्ञा० ज्ञा० क० न० नि० नो० म० ना० वि० क० ल० व० नु० को० ल० ती० । नु०
 वा० री० नु० नु० वे० ल० । इ० इ० ता० र० यो० न० । इ० वे० इ० ल० नि० इ० कि० ता० ति० द० । स्त्री० ना० ति० न० प० ना० नु० री० अ० पा० मु० मि०
 म० इ० नि० व० स्त्री० इ० डा० क० रा० य० ते० । यि० ते० म० डा० म० ना० ति० शु० ॥ ७३ ॥ व० कि० त० म० म० व० थ० नु० इ० डा० ल० क० य० व० थ० नः० स्त्री०
 इ० ता० म० त० न० इ० क० । इ० इ० मि० के० यि० ना० क० री० यो० म० वे० यी० य० व० य० । उ० व० य० क० ल० ना० थ० ल० । य० पा० यी० नै० व०

[illegible]

३३
 यत्किञ्चिन्न विवाहितः। प्रथमं मंत्रं च पठेत्। नुविद्यावौ नमः सुवाक्यं भस्मो मयै। इति वृत्ताति किञ्चिन्ते। इ
 त्रुवेदिपुत्रश्च विदुश्चोरा ननु कस्या। वृत्ताति वृत्तं कुरु। दीप्यते अस्मिं करो येना वरु प्रयत्नं स्यात्
 कर्मानां यत्नते। ७३॥ अयंतं इति मंत्रो नुविद्यावौ नमः सुवाक्यं भस्मो मयै। इति वृत्ताति किञ्चिन्ते। इ
 विपुत्रनाय नारायण तस्युतः। अयंतं इति मंत्रो नुविद्यावौ नमः सुवाक्यं भस्मो मयै। इति वृत्ताति किञ्चिन्ते। इ
 कश्चिन्नामनः। वास्तोषादेः पुत्रास्तुतास्तं त्वं स्तोमानां। इति वृत्ताति किञ्चिन्ते। इ
 स्यात्। प्रवृत्तानां यत्नते। गवेषणा च कः सन्ति सुयसः। नुविद्यावौ नमः सुवाक्यं भस्मो मयै। इति वृत्ताति किञ्चिन्ते। इ
 मन्त्रं च पठेत्। ७४॥ इति मंत्रो नुविद्यावौ नमः सुवाक्यं भस्मो मयै। इति वृत्ताति किञ्चिन्ते। इ
 वात्तो कश्चिन्नामनः। पंचां स्तोमानां। अद्वैतं सन्ति पायवः सुमेव भगवत्पुत्रः स्यात्। तस्य गो
 वृत्ताति मन्त्रो नुविद्यावौ नमः सुवाक्यं भस्मो मयै। इति वृत्ताति किञ्चिन्ते। इ
 तिः ७५॥ अयंतं इति मंत्रो नुविद्यावौ नमः सुवाक्यं भस्मो मयै। इति वृत्ताति किञ्चिन्ते। इ
 स्यात्। ७६॥ अयंतं इति मंत्रो नुविद्यावौ नमः सुवाक्यं भस्मो मयै। इति वृत्ताति किञ्चिन्ते। इ

॥२॥
 र्ममनुवदं नुगां रं रं । त्रिवं भुं मनु तोयंत न रुद्रिः । ये ब्रुवन् मनुवं भवन्मादिना मन वस्मस्मिन् प्रलु
 न्मायुक्ती वस्मिन्नेतन ॥ ७ ॥ तं गुपयन् र्वाग्निं न देवास्तो देवमनुजिं पत्न्यै । देवता रुक्मामो दिने । विनु
 त नातिं विप्रवित्तसौ विषममिमीलिव्यं तु नं । न स्य मे पत्न्यस्यो मत्स्यो तने प्रेम धुना पुर्वं । यत्किं ह्य
 ताववमदे देवं देवता कोता नुममं तगि । न स्य न रुद्रिः सुहृत् । पुत्रो न पातं सुतं गं सुशक्तिं ममिने हारो
 विष । स नो मित्रे स्य व पुगा स्य स्यो मया मा सुमं यं कृते । विविचः स मिया स मा रु नी यो वे दे न रुद्रा
 रु मतो भुम्यै । अयो न मस्या न्वधुनः ॥ ७ ॥ तं स्यो रुद्रं तो नंद यंत न्मा रा वस्मस्मं भुम्यै तं मं य
 र्मः । न त मं को दे व रुद्रं तु तं न न मर्त कृतं न रा व्वा स्य म्यौ वो अग्नि मिः र्मा मं सुनो स्य रुद्र सु कपि ने ।
 सुवी न स्त मं स्य म्यः । पुरां स्य मानो जतिं मि मि मि मि यो म्या न यो न वे ह्यः । वे दे मा स्यो मर्त स्यं ति स्या भव
 स्त ना को न यो मा ॥ स्यो म्या म्या न र्वधु नो म्ये म तः सुत म्यः स पुरां र्मः । स यो नि पं स्यु स नि ता । य स्य व
 भु धो मि धु ना रा ति मि ति रु य दी नः स स्या पतो स्यो मर्त ह्यः स नि ता स विप न्म तिः स रुद्रैः स नि ता कृतः ।
 ॥३॥ न स्य मि व पु म्दे स्तो मं र्म नो र्पी त विर वी र्यः । रुक्मा वा वे विषु द्वि र्वः । विप्र स्य वा सु वतः स्य दलो

यस्यो मृदुते मन्त्र नातिवृ। सुवोदं वृमय (ने मन्त्रं कथिवस्तो विविडु) यो वनः। यो मन्त्रि देववीतयेन मोतिवसि
इमं मा विवा सति। गिना वा क्रिन् सौ विष०। यन्मन्त्रमुधे सिध नायति मन्त्रि मन्त्रमि पाये निदा ती यत्तु इति
ति० धामति नरस्य मन्त्रः। विरह्य धाति मन्त्र गो कना मन्त्रि मन्त्रु मन्त्रु इव ता विष क। तदमे मन्त्रु मन्त्रात्तु य
ह्या मन्त्रा दमे कर्षि विगा०। मन्त्रु० मन्त्रस्यु० कः॥ ११०॥ येन वसे वसेतो मन्त्रो मन्त्र माये नगा संत्ता तमः।
वृत्तं तत्तेरा वस्या गा तु विवृ मा इ इत्वे ता विर्य मन्त्रि। ते ये र मन्त्रा यत्ते ११०॥ ये ता विषु निर धिने न स र्क स्या विषा
सो दे वस्य कृतु०। तदेदि मन्त्र गुत म्ना दुति ते सो तु व विने दि विनि द्वा के ति। मन्त्रु मन्त्र धनं ये ते का मन्त्रे पुने।
तु जे नो मन्त्रि ना दुते तु ज्ञानुतिः मन्त्र गतु डो मन्त्र धनः। तद्वा तु व र्ता स्त यः। तद्मनेः कणुष्व वत्तु नु ये ये नो
स्या मन्त्रे स्या सनः। अवे स्थि ना तं नु ति दु तु नि रा धं तां व ने मा ते मन्त्रि सिं तिः॥ १११॥ शी लै जिना मन्त्रे दि तं वं
दे वा तु त मन्त्रि मे निने च किं मन्त्र द वा वा मन्त्रे०। ति मन्त्रं ता यत्तु ता यत्तु ना र्क ते प्रयो गा य स्य मन्त्रे यः
विं रा ते मन्त्र ता तिः सुवी र्य मन्त्रि यत्ते ति ना दुतः। यद्वा पु ते ति ना दुते वा री मन्त्रि तं नु त उ वा वे व। अन्त्रे न
इव निरु ति कं०। यो दु वा मन्त्रे न यत्ता मन्त्रे दि तो दे व स्या स्या स्या मन्त्रि ना। विवा स ते वा री ति स्थ धु ने को

तीरेवोऽसमर्थः। यदं मेमर्त्य स्वस्थामुदं मित्रमदोऽसमर्थः। सार्धं सः सुतवाहुत॥२३॥ तदी नारायणं तिरं स्त
 येव स्थानं पापुत्वा यस्यां ता। न मे स्तोता मेती वानुर्द्धितः स्थाः। मेन पापया। पितुर्न पुत्रः सुततोऽनोता जादेव
 पतु प्रणोदु विः। तवा रुमे प्रदु तितिः नदि आतिः सवेयु क्रोष्य मावेसो। सदा देव स्थामर्त्यः। न व कुत्वा स्थानेयं
 तव नाति ति न मेन व प्ररा स्ति तिः। त्वामि दं दुः प्रम ति व स्यो ममा मे द्र ष्ठ्या तवे। प्रसो ज मेन वो ति तिः सुवी
 ना ति स्थि न ते वा क त म तिः। य स्म त्वं स स्था मा व र्णः॥२४॥ तव दुःस्थो नील वाब्दा य नू तिय र्थी नः सि ष्ठ
 वा दे। तं मं दू ना मुष सां म स्थि प्रियः द्रु वो व र्धु बु ना क सि। य मा गं म्भ र्यो तं न यः स्य द्र स्य मु कं र्व
 ति शि म व स्ये प्सां ना कं ता स्य द स्थ वः। य स्थ ते स मे स मे स म य उ प क्रि तो व या ई वा वि पो न शु म्ना नि
 उ वे क ना नां त व द्रु वा ति व र्ध मं व। य मा दि त्वा स्यो अ दु रुः वा नं न य स्य म र्ती। मृ प्ये नां वि र्वे पो सु द
 न वः। यु यं ग जो नः कं रि व र्ध त्ती स्य दः द्र यं त मा नु षो स न। वृ थं ते वो व र्ण मि ता र्थ मं ह्म मा मे ह न स्य
 न स्यः। स र्द न्मे पो उ द ह्म यः पं वा रा तं त्व स्य दं स्य वृ धु नां। य मा दि हो न र्थः स त्तं ति। उ त मे प्र सि यो व
 यि योः। सु रा स्था अ धि नु यं नि। ति स्य प्तं स्य प्र ती मां र्प्या वः इ तो ता उ व द्र सु दि र्था नां प तिः॥२५॥ आ

गंतमाविषाणतप्रस्थावानोमावस्थातासमनवः। स्थिराविन्नमयिष्यवः। वीमुपविर्तिमउतचक्र
 पुत्राउडासः सुदीर्तिर्तिः। इषानोक्रुतागतापुत्रस्योयक्रुमास्येतनीयवः। विष्ठादिउडियाणांशुष्म
 मुधंमउतादिमीवता०। विष्ठावेवस्यमीनुष्म०। विष्ठापात्रपापतंतिमंशुक्रुनातेमुक्तिनोदस्याप्रथमा
 नोनतगुत्तस्यादयोचदेकयस्यतानवः। अयताविद्वोमक्रुभानानेद्विपर्वतास्योवक्रुभानसिः। तुमि
 यामेषुवेकते॥२५॥ अमायवोमउतोचातवेओकिदीतुतनाबुद्धन्। जसंताननोदेदिशतेननुष्ठाव
 नांस्थिबुद्धोक्रुस्यः। स्थयामनुस्विद्यंनरोमक्रुतेषाजमवंतोवर्षस्यवः। वर्कंतेक्रुतस्यवः। गोतिवर्तिम
 क्रुतेस्योतनीतांनयेकोदोदिभानयो। गोवंपवः। सुक्रुतास्यद्वेनुकेमक्रुतांनस्यनेस्येनु। प्रतिरोवर्षदं
 क्रुयोवर्षेराथयमार्जतायतनध०। क्रुवावर्षप्रयात्रे। वृषास्येनमउतोवर्षस्युतावर्षेनवर्षनातिना।
 आरयेनानोसोनपुष्टितावयानकोक्रुवानोधीतयेगत॥२६॥ अमानमक्रुषांवितीक्रुतेनुक्रु
 स्योक्रुपिदाउपुदविभुनक्रुश्रयः। तनुयास्योवर्षाद्वयवोक्रुनकिमनुष्येतिने। स्थिनाथनान्या
 रुपावर्षेनुवोनीकेष्वपिस्थयः। येषामातोमिष्यप्रयोनामतेष० रावतामेकमिद्वेवेयोवर्षेति०

木

म. तवंपवोविप्रोत्तरं द्विष्टे मिमांसायातेथाभा निवृत्तते निना गच्छि विस्वेतिः रणो मपीतये। सीकं तस्त्रेवयो यथा
गोसीतेमथौ महुने विवर्तते। अतिवा मिडनो नुमः॥१॥ सा छवलेनाम मस्यावर्ग मस्ति किमुकु खिविरीथयः
रंति काभा सौम निवोदुद्विष्टं स्तो वयं रंति नो धियः। नुनाय किं उते वयमुती मनुमनु किनुते मडिवः
विमापुनापनीता सः। विमास्य सिवमुतरुं न तो मः॥ मातेता वक्षिनी मदे उतो स मस्ति मना लीक्षि नो व
सो वा मै सु सिधु गोमति। यो न इमि इ पुना प्रवस्थ मा नि नायत मवस्तुवे। रणसाय इ मुतये। क्रयं स्वं स
तर्पति वषति सधुं सदिष्मा यो मम इता आनुतः सवयति मका मस्वीं स्तो तजो म पवरात॥१॥ त
यो दस्ति मुका वयं प्रतिस्व सतं वषत बुवी मदि स र्धे क न स्या गोमतः। क्रयं मका ने पु उदुत कानि
तो सति मे म डुकाः। न सि विव दन्ता मनुगुया मरावे नि डु प्र गो धियः। मना तु को मना त मना विनि डु
नु बा स मा इ स्ति युथे दं वि त मि छ स्यो न की ने व त स स्या य वि इ स्ये की रंति ते मनु ना र्वः। मना कु गो
विन डु न स मनु द स्या इति ते व दु स्यो माते म मा कु गो यथा मनु ना र्व इ स्ये त्वा वतः। निव श
मना ना र्व ते॥३॥ माते गो इ त निव ना म ना र्व त् इ इ माते ग द म दि इ म्ना र्व इ यः प्र म रा ता ते न ते न

॥६॥

अस्विनो रुवा मदे। वयं गीति विपुन्य वेः। तानि राया तं वपु मपे प मे रुवं विरव क्तां विरव वायं। इषा मं किं मा पु
 तुम मान राया तिः किं वि वा वपु स्ताति रा गतं। ता विरा विरव ना ता विरव ना वं मान उप पु वे। ता पुन मो ति
 नी मदे। ता विरव ना ता पु व सि रु न स्त ती ताया मे वु इ व र्त्तनी। मानो म र्त्त नि पु व वै वा किनी व रु पु नो उ डा व
 ति स्त तं। क्ता सु ग म्मा ल सु ग म्मा प्रा ता न र्त्त ना र्विनी वा सु क्ता ती। कु वे पु ते व रु तो त नी॥१॥ म नो रु व र्त्ता व
 यता म इ क्ता म रु ग्मा ति पु ति ति। क्ता रा ता वि रु त म र्त्त मे मं व र्त्त पु वी तिः पु त तो क र्त्ता। क्ता नो म र्त्ता व र्
 र्विनी व र्त्ति या ति शं म पु पा त म न रा गो म र्त्त र्त्ता दि र्त्ता व रु। सु प्रा व र्त्तं लु वी र्त्तं सु सु वा य मिनी थ सु न रु
 र्विनी। क्ता स्मिना वा मा या नै वा किनी व रु वि र्त्ता वा मा ति थि म दि॥२॥ म र्त्ता ति थि म दि र्त्ता वा २० य म र्त्त र्त्ता
 त वै र्त्तं। व नि लु थु म्मा र्त्ता ती त र्त्ता ति थि। त म न र्त्त वि र्त्त र्त्त ति थि र्त्त म नो ति थि। पु त रु वे वि र्त्त थि र्त्त
 या ना। थि र्त्ता वा थि र्त्ता म र्त्ता थि र्त्ता थि र्त्ता थि र्त्ता थि र्त्ता थि र्त्ता थि र्त्ता थि र्त्ता थि र्त्ता थि र्त्ता थि र्त्ता
 वा २० म र्त्ता थि र्त्ता थि र्त्ता थि र्त्ता थि र्त्ता थि र्त्ता थि र्त्ता थि र्त्ता थि र्त्ता थि र्त्ता थि र्त्ता थि र्त्ता थि र्त्ता
 ता र्त्ता थि र्त्ता थि र्त्ता थि र्त्ता थि र्त्ता थि र्त्ता थि र्त्ता थि र्त्ता थि र्त्ता थि र्त्ता थि र्त्ता थि र्त्ता थि र्त्ता थि र्त्ता

अ० वः ३० वः ३० वे मोता न० व पी पी ना० त मया वा वा प्य पो त मु व र्धु पे । य से तिन हु त क तु यं क पा रु द यं त ३३
 मि ले न क ने स्य र्थ त न ता व नो न ता वा न म ता य को ल रु र्ण स्या थ न० ॥ ३३ ॥ उ पो र न क रु पु र्म स र्ण रो म
 को ने म मि ने र्म म० य रु र्ण स्या थ० रु र्ण स्या थः । से ता यो म सि वि रु र्ण स्या थः ॥ ३३ ॥ म ये त व क म क र्ण न० धा ना
 से व रु र्ण स्या थः म र्वा ३ व व र्ण स्या थ वि र्ण स्या थः ॥ ३३ ॥ म ये त व क म क र्ण न० धा ना
 दा उ वि र्ण स्या थः ॥ ३३ ॥ तः सु प्री तो म रु पे वि र्ण स्या थः ॥ ३३ ॥ म ये त व क म क र्ण न० धा ना
 न वि र्ण स्या थः । मि म यि ने र्म म० य रु र्ण स्या थ० न रु र्ण स्या थः ॥ ३३ ॥ म ये त व क म क र्ण न० धा ना
 रु क र्ण स्या थः ॥ ३३ ॥ म ये त व क म क र्ण न० धा ना
 ता न म र्ण स्या थः ॥ ३३ ॥ म ये त व क म क र्ण न० धा ना
 यः ॥ ३३ ॥ म ये त व क म क र्ण न० धा ना
 वि र्ण स्या थः ॥ ३३ ॥ म ये त व क म क र्ण न० धा ना
 न व रु र्ण स्या थः ॥ ३३ ॥ म ये त व क म क र्ण न० धा ना
 वा र्ण स्या थः ॥ ३३ ॥ म ये त व क म क र्ण न० धा ना

ਝਾਂਗ

51

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri.

यमेकं बुद्ध्या पुत्रुत न से विविच्यतिः । तस्थवृतात्तान् वरवनामस्मिन्नुपवर्गिणोक्ताः सा मन्त्रास्तस्य स्वमाजित
 स्थवृतावर्तुगास्तदीप्यन्ति । पवित्रो नृस्मिन्नाद्विषो तांस्तु मेघेष्विक्ताः । उत्तेजा पशो नो रंस्यामहि तं वा । उतुप्यरीतुते
 द्विषो ज्योतिर्वयं स्तुत्यः । अग्निर्नृषुः स मिथुनमा रुतः । ववोऽप्यविराजनीरो वाकं स्याजो मर्त्यैः । शिरो दिपिषो
 विषयं तावने । ७४॥ तहृत्तुयं नो रंसीतुते शेषावस्थो नृषुवे । तोकेषु स्माग्नु नृषु नारणा । नृषु मृगाणां यने
 न कृतं न रंया । तो न रंयं युक्मस्यतामरुणामाणि । तामे अरवा नां रु नीप्तां नितारा ना । कृतानु कृत्वा नां नृष
 रंस्या । स्तनं तीरु करी वंता विप्रान विमस्या मती । मुषो वा क्तिना व रं ता स र्वा स न । ७५॥ युवो नृषु न रंयं युवे
 स्यं थस्तु ता यं स्तु विप्रैः । अतु रं दका वषाणा वषा वरु । युव रं नो युवा मे मुके तने ना स्यता । अवा तिर्य यो व
 षाणा वषा वं रं यु । तां वा मृगं वामा दे रुको र्ति व किनी वरु । पुवी त्रिषु र्भयं तावति रूपः । आ वां वा दिष्टो अस्वि
 न यो या तिरु तो न ना । उतुस्थो मीं नृषु न रंयं रति स्त्रियो । कुरु नाणा र्बि रं स्विना मन्त्रे षयां वषा वरु । यु वं रं नृषु न रंयं यु
 कति द्विषः । ७६॥ इत्यादि विरं मानुष मु कृतिः पत्रु नीयं यः । धियो रुक्ता मथु नागि युत स्याती । उचनो या तमस्विना
 नृणां विरु पुषा र्णा मा मयवा । ना र्णु वी नृप नं पशुता । आ मे नृ स्य रं ती क रु स्मिं रं ना स्यता गत । दे वा दे वे र्ति नृष
 स्य न रं स्या । वयं दिवा रुक्ता मय उरुणां तो वा र व व । नृ मति ति नृषु विप्रा वि दो गत । अस्विना र्बे र्नु दि कृ विवे

॥७॥

मनोवसवो विस्ववेदसो यानां तु त्वा वितानः प्रसूतय त्वधनो ७७ ग्रादेवेषु युक्ताः । आदित्यो पुत्रवज्रात् पृथुवते म
 नुष्य विस्वतानुषा विस्वेदिष्मामनवे विस्ववेदसो तु ववृथे निरादसः । आनशेतिः प्रायुति विस्ववेदसो यानां नो वकुः ७
 दिः । आनो आग्रसामनसौ यानां विस्ववेदसो यानां नो वकुः ७७ ॥ १७ ॥ आतिषि
 यामनुतो यावो अस्वामि मिति प्रयायना । आवर्द्धनं ३ वज्रात् सुतानन आदित्यो यानां नो वकुः ७
 दिः । अतिषि प्रयायना नुषा । सुतसो मासो वज्रात् मनुष्यदिधा ययः । आप्रयातमनुतो वसो अस्विना ७
 वन्माकीनया धिया ॥ ३ ॥ आतुत्रयमः सनिष्ठातिवृषा यो वलदा गतो । विनो देवा सो अतु मो छिद्रं मलिक्ता
 नय ७७ नादसो नु विदंति तो वनु यमा १५ धर्षति । आसिद्धिः स कात्या निरादसो देवा सो अस्मा पा । प्रायः युधस्मे
 सुविनायवो वत मरुत्तं म्याय न कासो ॥ १७ ॥ ३ सो दिव उ पस्युति मिवा मस्थत क्रये । डिपवो विस्ववेदसो नो वकुः ७
 ना ७ अस्मत्तु मा मि वे ७७ पास्य वितानु प्रणीतयो स्मा ७७ ध्वे नं ताः । विद्वि पादस्य तुष्पा दे अर्धिनो विन तस ३ स
 वः । देव देवां वो वसो देव देव मति शये । देव देव ७७ वेम वा क्त्वा तये गतां तो देवा धिया । देवा सो दिष्मा
 मानवे स भान्न वो विस्ववेदसो कं सनातयः । तेनो अग्रते का पनंतु ये तुत वंतु ववि को विदः ५ धवः रां स्यां न्ना ३ वः
 स ७७ स्य उ पस्युतीनां नतं ७७ ति वनु मा मि त्वम भर्ष्यो वो था मत्तो विथत् । प्रसूतयंति न ते विमदी निषो यो वो

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

कउनुगायो विरुक्रमेय तदेवाशोमद. विवित्तिद्वि नत एकयास्मि प्रवासेव वसतः। स्थको दावकावेतु प मास
 रु स्थो माका स विना सुती। अथ त एकै मद्रि स्या मम नवत तेन सुयमिने वाचनम् ॥१५॥ नक्षि वेम सभत को देवा रेणा
 न कुमानकः। विखे सतो मद्रो तद्वत् इति सुता सो अस्या विरादसो यो ह तस्य स्व त्विरात्र। मने देवा य क्रिया सः।
 तेन स्वाध. वेवत तउ नो जायि वा यत। मानः पयः पिता ममा नवा य धिदु नै श्रव नावतः। यो दे वा स्य इन्द्र स्थान विखे दे
 स्वान राउता। अस्मात्मा रा म स प्र योग वे अस्वा जय कृत ॥१६॥ यो य का सिय मा त इह न वद्व पवा तिय। विखे स
 तो मद्रो तद्वत् इति सुतु बं को दि इ स्य वा कन क। पु नो मारां यो अस्थो यो म न नत आ सि व। या दिते रा को अं रु स्य म
 त स्य अमा अस्या इ यो दे व कृतः स्य सु य व व। विखा व म न मि त्विया। अस्या प्र का वती ग रु स्य स्व. ती दि वे दि वे। इ
 ना थे नु म ती उ म्। या द. प ती स्य म न स्या सु न त आ व था व तः। दे वा सो नित्या सि ना ॥१७॥ ति प्र सा का इ तः
 सभ्यः वा द क्रि मारा ते। न ता वा क्रे शु वा य तः। न दे वा ना म पि कृतः सु म ति न कु प्त कृतः। स्व वे व रु द् दि वा स्य तः। पु
 त्रि ता ता कु मा वि ता वि खे मा यु र्वा स तः। उ ता दि व ता प्र ये रा सा। वी सि को वा क्तु इ सु रा स्यां ता। मृ ता य क।
 स्य सु थो ना म रा रु तो दे वे शु क्त। तो उ वः। आ रा म पि व ता नां वृ णी म्ने न डी ना। आ वि लो र्ग वा तु व ॥१८॥
 ऐ नु पु णा न क्षि र्गः स्व स्ति स र्व धा त मः। उ न न धा स्य स्य यो। अ न म स न न र्व ता वि खे दे व र्ग म न स्या। आ दि ता न।

117811

मानेकश्च यथा नो मितो अथमावतः संप्रगोपाः । सुमानतस्थपंथाः । अग्निः वः उर्ध्वः । मितो देवमीनेव सु
 जा । सपयः तः पुत्रियः । मितेन ते तस्यापनः । मरु देवतेन यः रुवे वा पृथुका सुविदेवानां यद्रुम
 नो यकमानद्रय रुतपीदय रुव नो तु वत् । न यकमान निष्ठा सिने सुवान ते देवयो । देवानां यद्रुमनो यक
 कमानद्रय रुतपीदय रुव नो तु वत् । न किंशः कर्मता न रान प्रयो यम यो पति । देवानां यद्रुमनो यक
 कमानद्रय रुतपीदय रुव नो तु वत् । अस्या तस्य दीर्घं तत्तदा खुरकां । देवानां यद्रुमनो यकमानद्रय रु
 तपीदय रुव नो तु वत् ॥ ४० ॥ ॥ प्रकृतान् क्रीषिताः । ऐतु पुषान यित्तिः । प्रतिप्राक्ताः । तः । यो यकानि यक
 तद्रुमनद्रिवो अस्थतकिः । वत्तु नेको वृषाः । रुज नो युवा । ये त्रिंशत् तव स्यतः । नृते स विंदते युयः । इन्द्रा विउ पसुता । अ
 तिप्रिया मनुतो वा वो अन्वा । अग्नि उक्ते पुनो कृतः । तव वायवतस्सते । वादिमो वरु वाना । वैष्णव रक्ता सुतं नना । इत्या
 दि विस्वमानुषक । युवे उषु रयं रुवे तस्युयः । नो इस्थी उने । अयमेकद्रुमा पुत्र । ते नो नायमुत्पत्ता । सो यो रात्रु नियोम
 रुः । तावां विस्वस्य गोपाः । तमुदनु नमीमहे । यस्या मितानि वीर्या । एउमथो मदि तन । नुमन्मवा विद्विद्वः । आत्मा
 गो । निवि वृक । ससायमा । शिषामदि । ममे विस्वां मनीषतः । यो अस्मै रुवादा तितिः । अस्वस्था वसुविदः । अमे
 तव तोमश्च न । अमे यादि सुरा स्थितिः । इति निष्ठादि प्रतीका । मने कवसा वृषा मद्रुता । यद्रुमा वो मद्रुता ।

यस्तत्तामनवेष्टुर्कः दिवाऽस्ति मन्त्रज्ञानर्यः। माते गोऽव विना मनायसः। तया दक्षिणमुखा वयं। आकाशे तैना
 नमस्त्यावदामसि। वयमुक्तामपुर्कविचयमुक्ताममेतवतावा मन्त्रिरेकयेदरा॥ ॥४॥ विः॥ ॥५॥ तिस्री
 ताकलस्य॥ किंताया॥ षष्ठासके द्वितीये॥ आचः॥ ॥४॥ विः॥ ॥५॥ प्रकृतान्मृत्नीषिणः कतावा॥ ॥३॥ रूपागा
 यया। मदेसो मन्त्रावो वत। यः सृष्टिं मनरनि। विष्टुं नमदीशुव॥ वधाउरो निपातनः। नार्थुदस्य विज्ञाप
 वशीण॥ वृद्धतस्तिने। कवेतदि॥ ३॥ पौ॥ रूपा॥ प्रतिसुतायवोथु। नृणां शिं ननिनेन पिदुवेष्टु शिष्टमुत्तरो। स
 गो नखस्य विष्टुं मन्त्रानः सोमोत्तः। पुनं नरुन॥ ३॥ रूपा॥ ॥४॥ यदमे नानताः सृष्टु कयेवा॥ ३॥ यो स
 नः। आनाउपस्वधागदि। वयं प्यते मविष्ठासिस्तोतान॥ ३॥ रूपा॥ ॥४॥ यदमे नानताः सृष्टु कयेवा॥ ३॥ यो स
 ननातो मविष्टुं मन्त्रपवंतु निवेष्टु। उत्तमो गोमतरश्च। पिदिनागवतो मस्तिनः। ३॥ रूपा॥ ॥४॥ यदमे नानताः सृष्टु कयेवा॥ ३॥ यो स
 वृद्धकयं मन्त्रा मदेष्टु प्रकनसु मुत्तरो। स्यापुक्तावतं मवस्ये॥ ॥४॥ यः सृष्टिं विष्टुतकुतुनादीः कृताति
 वृद्धा। कनित्तः पुत्रुवष्टुः। सनः। राकुस्त्रिकारा कदानवा॥ मन्त्रातनः। ३॥ रूपा॥ ॥४॥ यदमे नानताः सृष्टु कयेवा॥ ३॥ यो स
 वनिर्भदि। स्यापानः सृष्टुतः सस्या। तमिं मन्त्रिगा यंत। मया यंतानं मदि स्थिने चतुना सृष्टुवोक्तिं। तुनेनी

१७॥
 सानमो कृष्णान् किं न स्यात् रात्रीनां निशं तां शुभ्रतां । न किं र्वक्त्रा न दिति ॥ १॥ ननु नृवं ब्रह्माणां मां प्राप्नुनाम
 स्मिन् शुभ्रतां । न स्यामो न च तापये (पन्ना ३३) पगायत पन्ना उक्त्या निरां सत । ब्रह्मा कृणोत पन्ना इत् । पन्ना
 इति नृता स्यात् स्या वाक्पवतः । ३० इत्येयं यद्वा नो वधः । विष्णु वनस्य धातु कृत्सीनामन्वा रुवः । ३३ विवसुता
 तानां । विवस्वधेन वा नामुत यस्तु यो स्यात् । उता यमिंद्रय स्यात् ॥ ४॥ अतीदिमां नृषां वितां सुपुवां स्य
 मुपावतो । इमं नातं सुतं विव । इति स्यः पना वत इति पं वरुना । अतिथेता इति वाक्करात् । सुयो विस्मं यया
 स्यात्वा यत्तु मे गिनः । निम्नमापो न स्यात् । अथ यवानुदिभिं रस्यो मं । वीनाय स्यात् । तना सुत स्यात्
 तये । यत्तु इति च । निजन्ना ४ कृष्णि ५० न वा स्यात् । योगो पुपुष्वं धानयत् ॥ ५॥ अरु ब्रह्म मवीषमन्ना
 वा तमकी सुत । अमेता विधा इत् । प्रवत्तया यति मुनेषां । द्याय प्रस्य क्रो । देवत्त-ब्रह्म गायत । स्यो विस्वां
 ति वृता स्यो मस्या मदे मं थलाः । ३० इति देवेषु रेतति । इरुत्ता स्य मस्या मदी । इति रंता के रता । वे । न्ना सति प्रयो दितः ।
 अवी वत्ता पुत्र सुत विस्मो य सुता रुनी । स्याम पेया य वरुतः ॥ ६॥ वयं पत्वा सुता वं तजा पो न वृक्ष वरुति ॥
 पवित स्य प्रस्य वतो पु वृक्ष न्ना विस्मो तान न्ना सते । स्वनं ति वा सुते नो वस्यो निने क उक्ति यनः । कदा सुतं तजा

दन्तमेषां यत्पारात कुतो । अस्माकमस्मांतं संस्तो सं पिबुमस्माकं अस्माकं ते स्ववनात् तुरंतं आसदाय मुन
 सोमपाः ॥ १॥ तद्विषे सवतो ममरास्ते जन्मस्य नान्ति । योऽस्मादीनं ज्ञानयत् ॥ ३॥ इन्द्रात् ३३ वीहि
 यज्ञराशं मनः । कुतो अरु कुतं न प्युपस्य ही विद्वांस इत्युक्ता । मिथुना वक्रतो नयं । १५ वेधुर्वृक्ष उतरा । अथः
 पश्य स्वमोपनिशंतं रां पादकौ दनामाते कराल कौ दरां हवीं हि ब्रह्मा वत्तु विषा ॥ १०॥ १५३ यादि कनित्तु
 पकत्तवस्तु सुभुक्तं । दिवो अमुष्मरास्तो दिवं यरादिवा वस्यो अवा यावा वंति कस्यो जीयोषेण यस्तु । दिवो
 अमुष्मरास्तः । १॥ आत्मा दिने भिने जामुना नथुनु ते वक्रः । दिवो अमुष्मरास्तः । १॥ आत्मा कत्वा इका वस्ये
 वंते वाक्कस्यातये । दिवो अमुष्मरास्तः । १॥ ३ यादि ते रूतानां वृक्षे न पुर्वपाप्य ॥ दिवो अमुष्मरास्तः । १॥ १०॥
 स्मात्तु नं पि न्मगादि विस्वतो धीर्न दुतये । दिवो अमुष्मरास्तः । १॥ आनो यादि मदे मते स्म स्याते राता
 मप्य । दिवो अमुष्मरास्तः । १॥ आत्मा कोता मनुजितो देवत्ववक्त्ररी छाः । दिवो अमुष्मरास्तः । १॥ आत्मा
 मरुता रुनी रो न पश्ये व वक्रतः । दिवो अमुष्मरास्तः । १॥ आत्मा कायज्ञापनि स्वाकासो मस्या पीतये ।
 दिवो अमुष्मरास्तः । १॥ ११॥ आनो यां म्रुपस्तु कये पुनाया इन्द्र । दिवो अमुष्मरास्तः । १॥ सनु चैना
 स्युते गदि स्युतैः स्युत तावः । दिवो अमुष्मरास्तः । १॥ आत्मा दि पर्वतैः स्युतः स्युतः स्युतः पिवि विहापः । दिवो

470241

रणावाख्यस्य सुवतो मद्रयुता। स कोषस्या। तयस्स्वितातिनो अक्षु। न रमी। निवय्यनमधवा उपर्या
 वाख्यस्य सुवतो मद्रयुता। स कोषस्या। तयस्स्वितातिनो अक्षु। न रमी। निवय्यनमधवा उपर्या
 यातमध्विना गतमध्वस्य वा मद्रु। रुवे यत्नं न ज्ञानिना गुणे। न मोवाके प्रस्थिते मध्वने न विवक्तार्याधी
 तयोऽन्त्यायतमस्विना। सुमे। स्वादा कृतस्य पतं सुतस्य देवा वं पक्षः। नाना मस्तमस्विना। सुमे। ॥ ५ ॥
 जवितोऽसि सुवतो वृक्षवर्द्धनः। पिवा सोमं मद्राय कृतकृतो। यत्ते तागं मधवा यद्विद्वान् सोमः
 पूतमा उरु कृतः। स मद्रु क्रिन्म उवा। ३ इत्युक्ताते। प्राव स्तोता नमप्यवं नत्वा पिवा सोमं कृतो।
 यत्ते तागं सत्तते। उरु मद्रि देवाः। जव र्यो कृत्वा तां विवा सोमं मद्रा कृतो। यत्ते तागं सत्तते। कृ
 जिता विवो कृजिता पृथिव्याः। पिवा सोमं कृतो। यत्ते तागं सत्तते। कृजिता कृश्वानां कृजिता गवाम
 सि पिवा सोमं कृतो। यत्ते तागं सत्तते। अतीतां स्तोममद्रि देवा मद्रु पृथिव्या सोमं कृतो।
 यत्ते तागं सत्तते। रणावाख्यस्य सुवतस्तथा सुगुणो नतेः कर्मणि कृणवतः। प्रवस्य स्युमादि
 यवमेकं रूपाका ३ इवृणाति वधयन् ॥ १०५ ॥ ३ इवृणावतनुये विविधप्रसुवतः राशी १३ इविरका

तिउत्तिः। माध्यादिनस्य सवनस्य वृत्तमनेन प्रविवासा मस्य वक्रिवः। स्येमान उच्यते तना मतिउत्तुः रावी
 पत३३० तिः। माध्यादिनस्य = क्रिवः। एकनामस्य तुवनस्य नाक्रसि रावी पत३३० तिः। माध्यादिनस्य = क्रि
 वः। स्येस्थावाना यवयस्य त्वमेक३३० वी पत३३० तिः। माध्यादिनस्य = क्रिवः। के मस्य व प्रयुक्त स्वत्व मीति
 य३३० तिः। माध्यादिनस्य = क्रिवः। कृता यत्व मवसिन तमा विद्य रावी पत३३० तिः। माध्यादिनस्य सवन
 स्य वृत्तमनेन प्रविवासा मस्य वक्रिवः। स्या वाखस्य नेततस्त या सुता यथा रत्तो नवेः कर्माणि कृतावतः।
 प्रवत्स इत्युमा विद्य त्वमेक३३० नृणां ३३० कृताणि वधयिन्।। १०॥ यत्तु स्यदि स्य नृत्तिका सस्त्री वा के पुरुष
 ३३० इमी तस्य बोधतः। तो रासा नय यावाना वृत्तमना प नाक्रिता ३३० इमी तस्य बोधतः। ३३० वांम
 दिवं मधुधुनं नदिति नविः। ३३० इमी तस्य बोधतः। कृषे या य रुमि स ये शुतं स्योमं स्य सुती ३३० इमी
 जागत नना ३३० मा कृषे या सवन नायेति कृवा नृधुः ३३० इमी जागत नना ३३० मां गा यत्ववर्तनि कृषे
 या सुश्रुति मम ३३० इमी जागत नना ॥ १०॥ प्रातर्गवति नागतं देवेति केनो वसु ३३० इमी स्यो मपीतये।
 स्या वाखस्य शुव तोत्तीता सुता तद्वं ३३० इमी स्यो मपीतये। एवा वा म द्धुतये यथा रुवंत मे पिदाः।
 ३३० इमी स्यो मपीतये। आद स्य नस्थतीव ते विंदा म्यो नवो वृत्ते। आत्तां गा यत्व म्भुते ॥ १०॥ ममि मस्यो

अस्मिन्मन्त्रिणीनायक्यो। अग्निदेवाः न कुन उ ते क्विदयेकविने। तस्व न ति दु त्ता ७ न चं ता म न्न के स्य मे। न्म
 मेन का सा व व स्त नु पुरां स्य मे पां। न्म रा ती न ना वा मा वि स्वा स्त यो जि ना ती नि तो यु क्तं वा मु नो न त तां। मे।
 न मे म न्ता नि तु तां कं प्तं न कु द्वा सा स्या नि। स्य दे वे षु प्र वि कि र्ति त्वं न्म स्वि पु र्वाः शि वो दु तो वि व स्त तो न तं
 तां मे। त त ३ अग्नि व यो ३ ये य या य या कृ पा ण म ति। दु र्ग ति वि व स्तु ना वि स्व स्ये दे व रु त्ते न त तां मे। स्य वि
 के त स्य की य स्या मि वि ते ण क र्म ण। स्य को ता रा ख ती नां ३ क्रि णा नि न ती दू त नो ति वि प्र ती का ७ न त तां
 मे। ७७॥ अग्नि क ता दे वा ना म्म वि वे द म त नि म पी क। अग्निः स्य उ वि ता दा अग्नि र्वा ना वृ ण ते स्या
 दु नो न वी य स्या न चं ता म न्न के स्य मे। अग्नि दे वे षु स्य वं स्युः स्य वि रु य क्रि या स्या। स्य मु दा का वा पु त्र वि
 स्वं मु मे व पु ष्य ति दे वो दे वे षु य क्रि यो न त तां मे। यो न्म मिः स्य ह म्म नु षः स्वि तो वि स्वेषु सिं धु षु। त
 म्म न्म त्रि प स्य मं था तु र्स्म द त म्म। मग्नि य के षु पु र्ज न त तां मे। अग्नि त्रा ति वि धा तु न्म के ति वि र्वा
 रु वि शः स्य त्री ने का र रा य न व वि प्र य नो वि नो दु तः प नि ष्कृ तो न त मे। तं नो अग्नि य पु त्र दे वे षु पु र्ज वि
 स्व १ क र न्म सि। त्वा मा यः प नि रु तः प नि यं ति स्व स्ये त वो न त ता म न्न के स्य मे॥ ७८॥ इ डा म्नी य वं सु नः स्य दं

३
 संवयो
 स्वमयो
 ३५

तावत्तथा नृपतिः। येन हृन्मदास्यमह्वावीचं नृपतिह्यादिषीमस्य निर्वनेव वा तन्न तन्तां मे। नदिवां वव्रयास
 दे ये इमिअन्नामदेराविष्मन्ता ननः। सनः कदाचिद्वतागमादा वाकस्यातये गमरा मेधस्यातये नतः।
 मे। तादिमभ्यन्तेनात्तामिडा मीमिहितः। ताउकवित्वनाकवीरुसमानाससीयतेस्वांहीतमस्तुतं नना
 न तन्तामः मे। अत्तर्वनताकवदिडा मीयकस्यागिना। ययो विस्वमिदं कगदियं प्रोः पृथिवीमस्तु पस्थे
 वित्तो वस्तुनतः मे। प्रवृत्तातिनताकवदिडा मित्तामिनेकत। यास्यप्रबुधमाविः किं क्वानमपोतिः ३३
 रीरा नञ्जिस्तानततां। मे। अपिस्वपुनातावदुतते निवगुषितमेकौतास्यस्य तया। वयंतं रस्यस्य तं
 वृष्टिं देता वित्तं मेदिनतः तामन्य केता मे। १५॥ यदि डा मीकना मे विद्वयं तेतनागिना। अस्या केति
 नृतिर्विचं स्यात्तन्तामपुतं नतोनतः तां मे। यानु र्वेता वदो विचउव्रतातपुतिः। रं डा मी वव्रतमुका
 नायं तिसिः थवेयां ह्णी वं भा रमु कातां नतः मे। पुकी सं ३ डो प मातयः पुकी उत प्ररा सयः सूनो दिव
 स्यदनिवः। वस्वो वीनः स्यात्पुो यप्रुता थ तनो पियो नतंतः मे। तं दि सीता स्य वृद्धिस्तिस्त्वेषं सत्ता नम
 मिमयः। उ तो नृत्तं तु विम्रञ्जस्तारु ल्लस्यां डानि ते र नि के ष ह्यवती न पौ नतं तां मे। तं दि सीता स्य ध्वनं सत्तां

तिस्रो लुभा नधिकृतः। त्रिभुवनानि च प्रत्यर्षतु तासां भुवः सप्तदः सप्तानामि न कृति न तं तां। हो। यस्वे तां अथि
 निर्मि कृत्स्न कृत्स्नाऽकावृता। रणथाम भुवः ममे यस्मिन् तेन विनोद सी अ को न आ मथान यं न तं तां मना के स
 मे ॥७५॥ अस्मिन्ना मम सु नो विस्व वेदा ममि मी तव विमातां पृथिव्याः। आसीद्विस्वा नुवना निस्त्वं नाद्विस्वे ता
 नि वेत्तु तासां वृत्तानि। एवा वंद स्य वतु तां दुरु तं न मस्या धी न मम तस्य गोपा। स नः राम त्वि वतु यं वियं सत्ता तं
 नो आ वा पृथिवी उपस्थे। इमां पृथं सिद्धि मा तासां देव कु वं इदं वतु तासां सिरा धित्यथा त्वि विस्वा उ नितान ने म
 सु तं ममि मपि ना वं नु मे म। आ वां गु वा तां अस्विना धी त्वि विष्वा अमु का उः। ना सत्ता स्यो मपी तये न तं तां म
 म के स मे। यथा वाम त्वि न स्विता गी ति विष्वा अ को रु वी त्। ना सत्ता। स मे। एवा वा म रु द्रु तये यथा रु वं
 त मे पि ना। ना सत्ता स्यो मपी तये। स मे ॥७५॥ इमे विप्र स्थ वे प सो ग्रे न स्थू त य रु नः। नि न स्थो मा स श्री न ते।
 अ स्ये ने प्र ति द य ति का त वे दो वि वं र्ष तो। अ ग्रे रु ना मि स्यु ति। आ नो क उ व प्ये द क ति ग्मा अ मे त व त्वि षः। इ वि
 ना नि व स्य ति। रु व यो भु म के त वौ वा त रु ता उप म वि य तं ते वृ य ग म्म यः। ए ते तो वृ य ग म्म य इ आ स्य स्य म इ
 रु त। उ प स्या मि व के त वः। ७५॥ कृ त्वा न कां सि प स्यु तः प्र या तो का त वे द सः। अ मि र्थ इ ध ति रु मि। धा सिं कृ ता न अ
 प्प धा र्ष स्य इ म्म न वा य त। पु न र्थ त नु ती न वि। कि द्वा ति न रु नं न स र्षि षा कं क ता त वं न। अ मि र्थ इ ध ति रु मि। धा सिं कृ ता न अ

मेस्यपि श्वस्योपधानुपधस्ये। गतेस्त्रिंशत्यस्ये पुनः। उतयेतवतः कृतादक्षीनोवतः कादुतः। निस्तानं कुक्षोः ४२
 मुक्षे ॥ १३० ॥ उक्तानां वसांतां यस्यामपृष्ठा। यवेपस्ये। स्तोमैर्विधेमाग्नये। उत त्वानमस्यावयं द्रोतर्विनापकृते।
 काद्येस्यमिहिनोमदो। उत त्वानुवकुर्वे मनुष्यदमनादुत। कागिनस्वधवाग्नये। त्वं अग्नये अग्निना विप्रो विप्रेतासा
 हाता। स्यात्सस्यासमिभास्ये। सत्वविप्राय नारुषे नमिंदे क्त्वा रुद्रिणा। काद्येवीनवतीमिष ॥ १३१ ॥ काद्येत्तातः
 स्रुत्स्फुत्तनोदिदृश्वरुविव्रत। इमं स्तोमं कुषस्यमे। उत त्वामेममसुतो वास्याय प्रतिरुच्यते। गोष्ठं गावश्वा
 रात। तुत्तांताकागिनस्वमविस्वाः सुकितयः पृथक्। काद्ये कामायये जिने। काद्ये धातिर्मनीषितोमेथिनास्योवि
 पस्वितेः। काद्ये स्यात्तायदि विप्रैः। तत्वा मच्छेषु वाहिनंतत्वा नाग्नये काद्ये न० वद्धिंद्रोतानमीलते ॥ १३२ ॥ उत त्व
 क्त्वा इत्यस्य विरतो विस्वा मनुवतु ॥ समस्तु त्वान्वा मद्रोतमीलिष्वयनादुतो अवित्रा कृते पृतैः। इमं न स्यात्तव
 अव० तंत्वावयं रुवा मदेरात्त० तं कातवेदस्य०। काद्ये पू० तमपदिषः। विरोना कानमद्रुतमथ नम्यमिगामि
 म०। अग्निमीले स उतवत्। अग्निं विस्वायुवेपस्यमयं न वाहिनं कित० सप्रिनवाक्यामसि ॥ १३३ ॥ पूम्ह्रात्त
 पद्विषोत्त वक्रांस्त्रिविस्वा। काद्ये तिग्मेन द्वाद्विंशं त्वानास्य ३० पते मनुष्य ३० गिनस्वमाग्नये स्योधिमेव ३०

॥७१॥

यत्र मे दिविज्ञास्य शुभावासादस्मृत। तं वागीतिर्दवासादे। तुत्तं प्ये त्रेकनाशमे विस्वाः सुकृतयः पृथक्। पालिदिनं
 तातवे। ते प्ये त्रेकनाशमे विस्वाः सुकृतयः पृथक्। पालिदिनं
 दृष्टिर्मत्रेति नीमदे। स त्वममेवितो वसुः रूक् रूक् यो निवस्मिति। राधं तमांस्त्रि प्लस्ये। तत्रे स्यदस्वदीप्तदे ताव
 यन्नो पहरात्। तदमेवार्थं वसु॥२४॥ स मिथामि उवस्मत् प्लेतैर्लोयि यथा तिथिः। आस्मिन्नका कुदोतना
 आमे स्योम कृष स्वमे वपस्वानेन मन्मना। प्रतिस्तु क्त्वा निदयनिः। आस्मिन्नुतं नो दधे कका वाद मुप बुवे। देवाः
 आसादया विदुः। उते वृद्धं तो आरयिः स मिथानस्य दीदिवः। अमेरुष्य शी नते। उवत्वा कुदो ४४ मम प्लतावी
 र्यं नुदयति। आमेरु कका कृष स्वतः॥२५॥ मंत्रं सोता नमस्त्रि कं विवत्तानु वितो वसुः। अस्मिन्मिले स उ सवत्
 प्रज्ञं दोता नमी क्त्वां कृष मग्निः कवि कुरु। अथ नात्त मतिस्त्रियः। कृषात्तो ज्ञः जिवस्वमे मादकाः मानु
 षक्। आमेरु स नय नुया। स मिथान उस्मत्तारु कुरो वशका वद। विक्कितां दैकां कन। विप्रं दोता नम उदं धुम
 केनु वितो वसुः। यज्ञानां केनु मीमदे॥२६॥ आमेरु पाद नस्त्वः। तत्रे देव रीषतः। तिथि देवः स दस्मृत। ज
 मिः प्रज्ञेन मन्मनारु तानस्तं वृद्धं स्यां कवि विज्ञेता वावथे। उक्ते निपात मादु वेष्टि वाव करो विषः। आस्मिन्नका

स्वधने। अनोमित्रमरुस्वममेरुकोमरोविषा। देवैवास्याह्निवर्द्धिर्षि। योऽनृत्तित्वोऽधमे देवमर्तः। स्वधर्मातिताम्ना
 स्मात्रदीप्यवस्य॥१५॥ पित्राग्निर्धुपदिवः। कुरुतातिः। पृथिव्यामय॥ अपांनेता। स्वर्गिन्नेष्टोऽधमेरुवयस्तवगुणा
 तान् वशीनते। तवकोती। पृथिविः। शीतवेवायस्थार्द्धातस्याग्नेस्वर्धतिः। स्तोतास्यांतवाम्ना। त्वामग्ने
 मनीषितास्तांदि। त्विब्रित्तिः। त्वां वधं। नोमिनेः। अदवयस्यस्यधावतो। पुतस्यानेततः। स्वदा। अग्नेः। स्वा
 स्यावृणीमदे॥१६॥ पित्राग्निः। रुविब्रुततमः। रुविर्विप्रः। रुविः। कविः। रुशीनोवतमाकुरुतः। उतत्वाभीतयोमम
 गिनोवधं। रुविस्वदा। अग्नेस्यस्यास्मवोपिनः। यदग्नेस्यामदं त्वं त्वं वाप्यास्यामदं। अग्नेस्यस्यामदं। अग्नेस्यस्यामदं। अग्नेस्यस्यामदं।
 यः। वसुर्वसुपतिर्दिके मस्याग्नेवितावसुः। स्यामते सुमता। वसिन्नाग्नेयतवतायते स्यामृदायेवसिंधवः।
 गिनोवास्यास्यशीनते॥१७॥ अवाजं। विरमत्। कविर्विवाहं। पुत्रेयस्य॥ अग्निं। रुतामिमममति। अज्ञानां
 नष्टेयवयं। तिग्मकृतायवीजदे। स्तोमौविषेमाग्नेये। अयामग्नेवेसाविक्रवितानुतुसांता। तस्मैपावकस्य
 न्या। अनोऽस्यामस्यविप्रो नकागविरः। अग्नेदीप्यसिअवि। पुनाग्नेउचितेत्तः। पुनामग्नेत्तः। कवे। पु
 तामागुर्वस्तोतिन॥१८॥ आप्याये। अग्निमिधतेस्यांतिवर्द्धिना। नुषकाये। अग्निं। डोयुवास्या। वृद्धिर्द्धि

॥७७॥

अथ वा नुनिरास्यं पृथुस्थनुः। येणामिन्द्रः०। अथ यद्वा यथा वतं सुन आकृतिस्तत्त्वतिः। येणामिन्द्रः०। आह्वं वत
 कादयेकातः पृथुस्थमातनः। कठ्याः केदरं पृथुने। प्रतित्वारावस्थीवद्विना वद्वो नलो पृथुयस्तेरातुवमा
 वके ॥७७॥ उत तत्तमप्यवं कृत्वा यस्ते वद्विवद्वितत्तया वदीनया स्थीवुत द्वाय दानिं यात्ता किं कृत्वा इस्मस्थयुत
 पानथीतमो नयीना। विषुर्विस्वा अतिशुभो वद्विद्विष्वग्मया वरु। तवानः सुखवस्तमः। अस्माकं सुन यं पुन
 मिन्द्रः कृतो गुरुत्वा तये। नयं थुर्वति थुतयः। वद्वामाते पविद्विष्वो नते राफुता वने। गमे हदि ३ गोमतः ॥७८॥
 रा नैस्वि अंतो अद्विष्वो स्वावतः रातयिनः। विवद्वता अने कस्तः। उधुद्विते दिवे दिवे सदा स्या सुनूताराता।
 अतिवृत्तो विमं कृते। विद्वद्विताथनं कयमिन्द्रं कृत्वा विद्वानुक्तं आदावितं यथा गयं कृत्वा विद्वानुक्तं
 वेमं ३० थुथ विद्वानुक्तं। आतापतिं अदीमदे। अस्ते देवाः सदा राविः प्रममर्षमिप्यतये। तस्थने वेद
 आतन ॥७९॥ इम उता विवद्वते स्याय इन्द्रो मिनः। पुश्तावतो यथा पयः। उत त्वामप्यवद्वयं सुक्त
 त्तिरातम्युतये। उनादि कनवा मको य कृत्वा सुया इमं कवं उमर्षं वद्विता उत। तवे नापिर्नो अंतमः। यद्विधि
 ते अथि कयि अने न्वाः स्यो अमममदि। गोदा इन्द्रो वेधिनः। आतापनं तं न किं वृथे न नत्तारा वस्यते। उरम
 स्थित्वा स पयः पयः ॥८०॥ स्तोत्रमिन्द्रो यत पुत नृणां यस्तने। नकिं वद्वते यथा। अतिवावप्यतां ते सु
 यगा

तं कृत्वा मिथीतये। तं वा काश्चुकी म३०। मात्मा मुना अविष्म वो मो पदस्वान आदत्तं। माकी बुद्धि विषो वनः। ३३
 वागे पनीता मदे मं ५ तु नाथस्ये। स नो मो सो यथा विव। मा वलुमा पना वतिसनान वा ३३ कुवे। ता स्य स्य प्रवो
 वत। ॥ ४५ ॥ अपि वक्तुः सुतमि ३ः स्य स्य वावे। मा ता दे पदस्यो ० स्य स्य तं तं वरु री रा दो विदो नो मद्रु वा
 यम। वान दूर्ध्वो रा मि। त न मि को क नाना तं दं वा क स्य गो मतः। स मा न मु प्र स स्वि यं। न तु क्ता न वत वत
 रुधे तु गु मी वय ॥ ३३ ॥ स्य मे ल वा सु ले यः कृत त द्वि यो न्म विरो का य वि वि ५५०। गो स्यो गा तु न्मि वै त वे ॥ ४५ ॥
 य प वि प म न स्य स्य मं दान स्य स्य मं दानः प्रे दि रा द स्य। मा त क्ति वि ३ म न य। ३ तं वि धि ता वतः कृतं स्य ले म पि
 न मि कि गा वि ३ ते दानः। त वे ३ ताः सु की र्त यो स्य नु त प्र स स्य यः। य वि ३ म न य। स्य नः। मा न य क स्मि ना ग स्मि मा
 द्वो उ त वि प्र। व पी मा सु न तु ३ वि प्र। वि ले या क्ति वा क्ति प व त उ या द ति प्र तं। न तिः। ३ स्य मा ३ म म ती प द ॥ ४५ ॥
 मा स्य स्यः सु न मा वि दे मा पु त स्य प्र तु व स्यो। मा व त तु ३ ते म नः। को नु म र्मा मि ति यः स्य स्य स्य य म ब्र वी न्।
 रु द्वा को क स्य म दी प ते। ए वा ने व व ता सु ते अ स्यि वं नु य मि यः। स्व प्री व नि व ता व न व। मा त र ता म नो गु का र नी
 गृ ह्णु म ३ य। य ती वं द्वा ता ३ ३ ३ ॥ ति य वि र्वा क्ति प वि यः प वि वा यो क्ती म ५ ॥ व सु स्य क्त रा त न।
 य दी ना वि ३ य ह्यि ने य ता रा ति प ना त त। व सु स्य क्त रा त न। य स्य ले वि र्वा मा नु वे तु ने र्त स्य वे न ति।

॥७२॥

वसुधैव कुटुम्बकम् ॥ तत्रात्र ॥ ४ ॥ तावतः पुत्रवत्सोऽपि सः ॥ सः सः ॥ ५ ॥ अनया विदेः यद्यपि येन नरस्यसि ॥ सः विवक्तुवः सः ॥
 सौतमिन्द्रायणावतः ॥ ६ ॥ तावतः पुत्रवत्सोऽपि सः ॥ सः सः ॥ ७ ॥ अनया विदेः यद्यपि येन नरस्यसि ॥ सः विवक्तुवः सः ॥
 तिकविगमिः ॥ ८ ॥ विवक्तुवः सः ॥ सः सः ॥ ९ ॥ अनया विदेः यद्यपि येन नरस्यसि ॥ सः विवक्तुवः सः ॥
 मंडं पुत्रवत्सोऽपि सः ॥ सः सः ॥ १० ॥ अनया विदेः यद्यपि येन नरस्यसि ॥ सः विवक्तुवः सः ॥
 पृथुतः ॥ ११ ॥ विवक्तुवः सः ॥ सः सः ॥ १२ ॥ अनया विदेः यद्यपि येन नरस्यसि ॥ सः विवक्तुवः सः ॥
 शमीकना ॥ १३ ॥ विवक्तुवः सः ॥ सः सः ॥ १४ ॥ अनया विदेः यद्यपि येन नरस्यसि ॥ सः विवक्तुवः सः ॥
 स्थनत्तिका ॥ १५ ॥ विवक्तुवः सः ॥ सः सः ॥ १६ ॥ अनया विदेः यद्यपि येन नरस्यसि ॥ सः विवक्तुवः सः ॥
 वंताउतथमविता ॥ १७ ॥ विवक्तुवः सः ॥ सः सः ॥ १८ ॥ अनया विदेः यद्यपि येन नरस्यसि ॥ सः विवक्तुवः सः ॥
 थिर्नमोऽस्मि ॥ १९ ॥ विवक्तुवः सः ॥ सः सः ॥ २० ॥ अनया विदेः यद्यपि येन नरस्यसि ॥ सः विवक्तुवः सः ॥
 तावतः ॥ २१ ॥ विवक्तुवः सः ॥ सः सः ॥ २२ ॥ अनया विदेः यद्यपि येन नरस्यसि ॥ सः विवक्तुवः सः ॥
 नमः ॥ २३ ॥ विवक्तुवः सः ॥ सः सः ॥ २४ ॥ अनया विदेः यद्यपि येन नरस्यसि ॥ सः विवक्तुवः सः ॥
 निः ॥ २५ ॥ विवक्तुवः सः ॥ सः सः ॥ २६ ॥ अनया विदेः यद्यपि येन नरस्यसि ॥ सः विवक्तुवः सः ॥

[illegible]

[illegible]

॥७५॥

यासुगमनेरुसः॥नेरुतदं नरुस्विनेनावयेनोपयाउता। गवेरुतदं येनवेवीनायवरुवस्थतेनेरुसः॥१॥य
 नविर्चदयीया७०देवासोमस्तिउक्तु॥तिनेतद्विस्वमाप्राप्तावेकस्मात्तथातनानेरुसः॥१॥यत्रगोपु
 श्वप्रा०यश्चास्तेउक्तिर्दिवः॥तितायतद्वितावर्जाप्रापयपनावरुनेरुसोवः॥१॥निष्कंवाप्याकृतावते
 स्त्रकंवाउक्तिर्दिवः॥तिनेउष्वप्रांसर्वमाप्रापनिदुष्टास्तेनेरुसोवः॥१॥तद०नायतदपर्येतंतागष्ट
 पर्येदुवे॥तितायतद्वितायरोवोउष्वप्रा०वरुनेरुसोवः॥१॥यथाकला०यघारा०यानना०रप०
 नयाप्राप्ति॥७०वाउष्वप्रा०रुवमाप्राप्तेरानयाप्राप्तेनेरुसोवः॥१॥यज्ञेष्वाप्राप्तास्तेनाप्राप्तानुमा
 नागसोवय०॥७०वायस्माउष्वप्रा०दक्षेष्वापतउक्तुत्वेनेरुसोवः॥१॥तयःसुहुतयोवहुतयः॥
 ॥१०॥स्थागोनतद्विवयसःसुमेधाःस्वाधोवविदेवित्तनस्त॥विस्वेयंदेवाउतमर्त्तासोमप्रभुवंतोयानिसे
 वरंति॥जंतरवप्रागाजदित्तर्त्वास्वावयातादरुसोदेवास्ते॥इंदविंइत्यस्यसंक्रुवापाःसौम्रीवपुनम
 रुवाय०यथाः॥सवामसोमममृताजनुमागन्मज्जेति॥विदामदेवान्॥किंनुजमस्माकृतावरुना
 तिःकिमुपुर्तिनितममर्त्तास्तेनोतवरुदक्षापीतइंरोपितैवसोमसुनवेसुरोवः॥सस्वेवमस्तउ

उरंसथीनः प्रमथायुक्ती वस्ते सोमतानीः। इमे माची तयरा स्यु उवा देन यान गावः समनादवर्त्ति।
 तेमानरुं तुविस्सस्यवित्तउतमाश्रामाश्रवयं विवः॥१०॥ अग्निं नमामयितं स्यं दिदीपः प्रवक्ष्ये कृणु
 दिवस्सस्योनः। अथा द्विते मद्रमा सोममन्तेने वां इव प्र वनापुष्टिमह। इषिनेता ते मनसा सुतस्यतकीम
 द्विपित्वा स्ये वनायः। सोमना कन्नागा मा युः विता नी नदानी वसु यो विसनात्ता। सोमना कन्नाल
 यानस्यस्त्रितवरमसि वृत्ता ४४ स्तस्य विधि। अलर्ति इद्र उतमन्यु विं दोमानो अयो अनुकासं पनाशः।
 त्वं दिनस्तनूः सोम गोपागा वेगा वे निष स्यान्नु काः। य ते वयं प्रसिनामवृता निसनो मल्लस्य
 स्यादेव वस्यः। नुदनेता सस्य सवेय योमान विष्णे अयस्व पीतः। अयं यः सोमो न्नाथा यत्तस्येत
 स्मा इन्द्रं प्रति नमो भ्या युः॥११॥ अथ त्वा अय्यु न निरा अमी वा निन तस्यं तसि वी द्वा न तैषुः। आसो मो
 अस्मा अ नुरु वि दायान्न गन्माय त प्रति नंतमायुः। यो न द्रः उः पित नो हृ ह्य पीतो मर्त्यो मर्त्याः
 आ वि वेधता। तस्ये सोमा अरु विषा विधे ममूली के अस्म्यु मतो स्याम। त्वं सोम पितृ त्रिः सं वि
 दानो नु प्रा वा पृथिवी जातसं य। तस्यै त इं दो विषा विधे ममूयं सोम पत सो न यीता। ताता नो
 देवा अथि वो वतानो मानो निजा इदीया तमो तद्रु लिः। वयं सोमस्य विरवद्वि दायः सु वी न सो

७६॥

विदधमावरेम। त्वं नः सोमविस्वतो वयो धास्वस्वर्विगविद्वान्ब्रजाः। त्वं न इदं पुनितिः स्रक्षोषा पाद्विपस्याता
 उत्तवा पुनस्त्याव॥१०२॥ अथ बालिस्तित्याः॥ सति प्रवः सुनाथसमिंद्रमर्वयया विदे। यो क्वचित्तुलोमप्यवा पुत्रु
 वसुः स्रक्षोषो वसिष्ठतिरातानी के वप्रक्रिगातिपुष्ट्यादंतिश्चातिरायुषे। विने निवप्रनस्यान्नास्यपि विने रत्नाणि
 पुत्रोक्तलः। आत्वास्तुतास्यदं रवो भद्रा यदं रविर्वाः। आपोन वक्षि न वोक्ताः स्रनः पृतांति सुननाथस्यो जने
 दसं प्रतनाम विवक्राम मधः स्वादिममीं पिबा। स्नाययामं रस्थानः क्रिनासिनः प्रकुडे वल्लभा पृषत्ताना
 नः सोममुपद्रवधियानो अस्वो न स्रोतजिः। यं ते स्वधा वं ह्वयं तिपेन वद्रं इकावे पुनातयः॥१०४॥ पुं गं
 वी वं न मस्योपलेदिम विनुतिमज्जिता वसु०। उडी व वक्षि न वतो न सिं व ले क्रुवंती इधातयः। यद्यनुजं न द्वापका
 यद्रे यद्वा पृथिव्या मपि। अतो नो यस्मा रुतिमिदं मतु उग्र उग्रेति नागक्रि। अक्रिनास्तो क्रुवयो येतमारा
 वो वाता इव प्रसक्तिगः। येति न पत्तां मनुषः पनीयस्ये ये सिर्विस्व स्वर्दृरो। पतावतस्ते दीमद इंदुस्यस्य गो
 मतः। यथा प्रावो मप्यवन्मो धातिविधियानी याति विधियने। यथा कपावे मप्यवतस्य रस्य विद्यया पकथे
 दरा वक्रं। यथा गोदये स्य नो र्द्विस्वनी इगो मधिना पावत्त॥१०५॥ प्रसुसुतं सुनाथस्य मर्वा राकुमति
 हाये। नः स्रुवते स्रुवते कामं वसुस्य स्रुवते। रातानी कादं तयो अस्या उशना इंदुस्य स्रुवते।

मन्त्रः। निविर्ननुम्नामप्यवहृषिन्नुतेनदीः सुताममंदिषुः। यदीः सुताममंदिषुः। आपोनथा
 मिसामेनममावस्योऽप्याऽवोपदासुवे। अनेकसं वो रुवमानमुतयेमधः कुरुंतिधातयः। आत्वावस्योऽरु
 वमानासुऽवउपस्तोतेपुऽपिने। आनसोऽमेस्वधनऽयानोऽकतोऽनतोराते। यऽतेस्वथावऽह्वदंतिगु
 तयः। योऽनेछऽयलोऽरुवः॥१०५॥ प्रवीनमुग्रं विविविधनस्तुर्वितुतिं नाथस्योमदः। उदीववहृषिन्नुवतो
 वसुतनासदापीवेयदासुवे। यद्यनुनं पनावतिर्यदापृथिव्याऽदिविद्युऽकानऽरुऽरुनितिमिदमैमतनृषुऽरुष्वे
 तिवागद्वि। नचिरासोऽरुनयोयेतेकाथिन्नुकोवातस्यपिप्रति। येतिर्निर्दिश्युऽमनुषोऽप्योऽप्योयेतिः
 पनीयस्योऽपतावतस्तेवस्योविद्यामसुननकासः। यथाप्रावपतराऽकृत्कोपनेययावरांररावृके।
 यथाकावेमप्यवन्नेथेनधुनेदीर्घनीयेऽमुनस्त्रिययागोरायेऽकस्त्रिषासोऽकाऽवोमन्त्रिगो
 तऽरुनितिसिन्नु॥१०६॥ यथापमनोऽसाऽवनत्तौसाऽममिडापिवः सुतऽनीवातिगोमप्यवन्नेथा
 तिथोऽपुष्टिगोऽसुष्टिगोऽसाऽपार्षदागाऽप्रस्कृतांस्वमस्यादरुऽरुयानंकिविमुष्टितः। सुरुस्या
 पास्त्रिषासुऽवाऽमृषिस्तोतोऽरुस्यवेवकः। यउकयेतिनविधतेविकिन्नुपिबोऽनः। उंउं तमछावदन
 कास्यामताविष्मंतंनतेऽरुते। यदमाऽकऽरुहरीषागामानुऽस्वधातुमुतमेपदे। योवीऽमाविस्वा

॥१॥

तु वनजिबुधुपशक्तिनिष्ठावोऽस्य। योनोदाता वसुधा मिदं तं कुमके वयः। विशाल्यस्य सुमतिर्नीयसीं गमेष्टुः
 यो मातिवर्गे ॥१॥ यस्मै त्वं वसो दानाय दिक्षेत्पुनरायस्मो वमिषुते। तं वा वयं मय्यवः। ३ मिषिताः सुता वः
 तोरु वा मजै। कदाचन स्य नीनस्मिन् इत्यस्य स्य दाशुषे। ३ पोपे नमय वं नु यदं नु ते दानं देव स्य पयते। प्रयो न
 न दे मातो कस्या कि वि व यैः शुल्ल निषो यय न्दा य दे द सती तय यय नं सु ग वि मा दिक्षे क निष पा र्थि वः यस्या
 यः विस्व मा यो दा स्य स्यो व पि पा म निहा हिन स्वि दये न रा मे प वी न वि तु ते ह्यो मा ज ते न विः। तु न ग म वो म पु मं
 तं प ज सु तं वि प्रा स्यो म क मा न्नुः। म स्य मे न विः प प्र ये। व स्यो रा वो स्यो सु वा ना स्य इ व द्वा ॥१॥ य य म
 मो वि व स्य ति स्यो मं र द्वा वि वः सु तः। य य वि ते छं द ३ ३ कु जो प स्यो यो मा द य स्यो ल वा। पृष प्र मे थो
 मा त नि श्व मे ३ सु वा ने म म ३ याः। य य स्यो मं द वा दि प्रे द रो ग मे स्यु म न र मा व कु न स्वि वि उ क द्या
 के व ला ३ थ यः स्यो मं पृ ष ता वि व न्। य स्य मे वि षु स्वी ति प दा वि व कु म उ प म त्व स्य थ म तिः। य स्य
 त्व मि दं स्तो मे प्र वा क नो वा के वा कि छ त कु तो। तं वा व यं सु उ प्या मि व गो उ षो कु द्वा म स्वि स व स्य वः।
 यो नो दा ता स नः पि ता म मा ३ उ य द्वा रान क द्वा। य य म नु यो म य वा पु व सु मे वि व स्य प्र दा तु न ॥१॥
 य स्य मे त्वं व स्यो दा ना य म क से स्य ना य स्यो व मि ष ति। व सु य वो व सु प ति य त इ तं स्तो मे नि दं द वा

अमे। कदा वनत्रयुक्तस्य ते निपाति कम्पनी। तु नीचादिता रुवनं तद्वं दियमातरस्यावमृतं दिवि यस्मै व०
 मय व० नि० इति विगाः सिद्धौ सिद्धिदायुषे। मस्माकं गिरुतस्य शुक्तिं वसोकाववृद्धागुपी रुवं। मस्तौ
 विसवपुर्वा० वृद्धौ शयवो वत। पुर्वीरतिरूपवृद्धी ननुषतस्तौ तु मेधा न स्युक्त। स्मिं डोरा यो वृद्धी
 ननु तसं क्रोणी स मुस्यु०। संयुक्तस्यः सुवयः संगवारि नं स्यो मा इं डम मं दिष्टु ॥ १७ ॥ उपमं त्वाम
 व्यानां क्रो मं वृष्टनागा०। पुर्ति तमव्यव० नि० गोविदमीरानं नायडी मर्दे। यमाय० कृत्वा मति यि
 यमर्दयो वा वृथानो दिवे दिवे। त० त्वावयं कथं रव० रात कृतं वा कथं तो रुवामर्दे। आनो विस्वे चां न सं म
 थः सि० वृद्धा इयः। येष नावति सुद्धिने कने वा स्ये वृद्धिती० इवः। विस्वा देवां सिद्धिदा ववाकथि विस्वे सं
 वृ० त्वा लु। सीष्टो पुर्वि त्वै सदिना स्यो आरां वो यता स्यो मस्तत० पस्ति ॥ १७ ॥ इं डे दिदि मिति मेधा तिनुति
 तिः। मस्तत० मस्तत० माति नति ना स्याये रवा विनिः। आकि तु नं सत्ता ति० विस्ववर्षा ति० कथि वृद्धा स्या
 तग०। वृत्तुति वारा वीतिर्ये त उ कि यनः कृतं पुनत ज्ञानुषक। यत्ने स्या पि मो व स्ये ते स्या म तनेषु ते।
 वयं क्रो ताति उत देवदु तितिः स्ये वा० स्यो मना मर्दे। मर्द० दिते रुनि वो वृद्धा वा कथु ना कि या मि स

॥७५॥

रीतिनिः। तामिदेवतममैलमखयुग्मकनर्चमतीना॥७५॥ एतत्तेइंइवीर्यं गीर्तिगुणांतिका २ वः।
 तेस्योत्तमकुर्माववृष्टतस्तुतपोनासोनर्चपीतिनिः। नर्चतइंइमवस्येष्टकृत्तयायेषांस्तुतेप्रम-
 दस्योत्तमाल० वतेज्जिह्वोरायाकृत्। एवास्तेइंइमहव। ज्ञानोविदेवस्योवस्योगंतनोपनः। वस्तु
 वोत्तुइमवस्येनजागम० कृत्तवंतुमनुतोदव०। पुषाविष्णुर्नर्चनं मेस्यदस्थत्तवतुस्यतस्मिंथवः। ज्ञा
 कोवातः पवतोसोवनस्यपत्तिः राणोत्तुपत्तिवीर्यव०॥७४॥ यदिइंनाथोमस्ति तेमाप्योमंष्टापवत्तम।
 तेननोवोपितथमाज्ञोवपत्तगोदनामवत्तकृत्। ज्ञापितेनपतेत्वमिपिनोवाकृत्तावर्त्तिपु
 कृतो। वी० तीर्त्तौत्तान्तिउतदेववीर्त्तिनिःस्तस्ववा० स्योविष्ट०। त्वने। संतिक्ता० र्चत्तात्तिषइंइमाउ
 कृत्ताना०। अस्त्यांज्जस्वमववत्तुपावस्येधुक्तस्वविष्णुपीतिषां वयंतइंइस्तोमेतिविधेमत्वमस्मा
 कंरातकृतो। मद्दिष्ट्युन० रातज० नाथोमद्वयंप्रत्कणायजितोराज॥७५॥ पुनर्दिःइस्यवीर्य०
 वस्त्यमत्तायति। नापस्येइस्यवेवकारातस्येतास्तुक्तगोद्वितामोनोवते। मद्भादिवंनंतस्त्वत्तुः। रा
 तंवेत्तु० कृतंयुजःरातंरातंमत्तात्तिज्ञाता निरातंमेवस्तुक्तस्तुक्तपुपीणां वतुःरातं। इदेवास्त्यका

[illegible]

॥१८॥

शिवदुधासहिअकः सुयोविरुमनु वल्लुतः। एकैकोवाः शर्वमिदं वितात्तेकं वाङ्मयं विवर्तुवत्सर्वं। नोपे
 षातं केतुमंतं तिरुकुं सुखं नयं तु वरं तु निवानं। वितामप्यायस्य यो गेयि कृते तं वां कृदेन तिरुकुं विव
 र्थे। ॥१८॥ इति शिवं तागथेयानि लिख्यत इति। ॥३॥ इति शिवं तागथेयानि लिख्यत इति। ॥३॥ इति शिवं तागथेयानि लिख्यत इति। ॥३॥
 यः सुखं तेन कृमानाय लिख्यतः। निषिधनी नोषधीना वसाद्या मिंद्रावतुताम किमान माराता। यालि
 सनुन कलः सपने मधुनो ययोः रातुन किना देव इति। सत्तं तदिंद्रावतुताम कृदास्य वां प्रधु
 मिंद्रावतुते सत्तं वापीः तासि इति। सपवतं तु तस्मती यो वामा वरं नोपेति विवित्तिः। प्लतुवः
 स्तोमना कीनदानवः सपुस्वस्थानः सदनवत्तस्या। शकवा मिंद्रावतुताम प्लतरुत स्याति इति। स
 कृमानाय लिख्यतः॥ २॥ अथोवा मम कते सोत गाय सत्तं तेषां मदिमान मिंद्रियं। स
 स्यात्तिंद्रावतुताम प्लतरुत स्त्रिः स्यातेति रवतं तु तस्मती। ३॥ इति शिवं तागथेयानि लिख्यत इति। ॥३॥
 वायो मतिः सुत मरुत मये। यानि स्थानानि मरुतं तपीनाय कृतं नाना सवसात्त पदं। ३॥
 इति शिवं तागथेयानि लिख्यतः॥ ३॥ इति शिवं तागथेयानि लिख्यतः॥ ३॥ इति शिवं तागथेयानि लिख्यतः॥ ३॥

काय प्रत्तिनतं नसा युः ॥ २० ॥ वाल्मिल्यः समाप्तः ॥ अथ भाग्यलक्षणं प्रकीर्तयित्वा वृत्तिमर्हः । आत्मा मन
 कुर्वन्ततः विष्णुतीयादिभ्यः वर्द्धिना स हो नृणां दिवा स कलाः सुतो मणिः सुवस्वतं त्रधने । पुर्णं न
 पातं पतके राभी मर्हः प्रियं सैषु पुर्णं । अथैक विवेका मर्हः ताया व कलाः । मं डो य किमो धने
 श्री लो विवेतिः शुक्रम नातिः । न डो यमाव मोदा तो न विज्ञा देवाः न कस्तवीतये । अति प्रमांसि सुधि
 ताव स्यो गदि मं ड स्वधा निर्दितः । तमिह प्रयाजस्य मेवात नृतः कविः । त्वां विप्रासः समिधान ही दिवसा वि
 वासंति धेनवः ॥ २१ ॥ सो वारो विष्णु ही दि क्रि विरो मयो वा स्व स्तो ले मर्हः । अस्मि देवानां रा म म म स्यं तु
 नमः रा तुषादः स्वयं यः । न या वि द्य म त स्य म मे सं कुर्व सि क्र मि । ए वा द न मि त्व म को यो म म प गु र्म
 त्मा क स्य वे न ति । भानो म त म वि व वे न ह स्वि ने मा प्य रां सा ज नी न थः । न स्ये इ ति न ति ति य वि ष म शि
 वे तिः पाद पा यु तिः । पादि नो अ म्भ क या पा म्भुः । त द्वि ती य या । पादि गी ति स्वि स्य ति पु र्ण प ते पा दि व
 त स्य ति र्व स्यो । पा दि वि र्व स्य म्भुः । अ नातुः प्र स्य वा के पु नो वा त्वा मि धि ने । इ मं दे व ता त य मा पि न
 मा म र्ह व थ ॥ २२ ॥ आ नो अ म्भे व यो व थ न थि पा व क रां स्य । ना स्या व न उ प मा ते पु न स्य दं सु नी ती स्व

॥२०॥

मरास्तन०। येन वंसा मृतनासु राधति स्तनं तो मयि आदिराः। सत० नौव पत्रि मसारा वीव सु कि न्नापि योव
 सुविदः। सिरानो वृष तो यथा श्रिः नृ० गेद विधनु। तिग्मा कस्य दन वोन प्रति धृषे सुकंतः स दसो ननुः। नदि
 ते अमे वृष तत्र ति धृषे कंत सो य इति मसो। सत० नो दोतः सुकृतं क विष्कृ पिवं स्वानो वायी पुत्र। सोषे वने पु
 मातोः सत० म तसि इ० यते। सत० दोरु काव क सिरु विष्कृत मादिते वे पुना कति॥२४॥ सप्त दोतान सप्त मि
 शील ते वाग्रे सुत क मद्रिय०। तिन हृष्टा इति वसा विस्ते विषा प्राप्ते ति ह कनाः कति। अग्नि मग्निं बो न पि गुं दु
 वेम वृक्ष वर्धयः। अग्निं कितः प्रय सः राख तीष्ठा दोतानं रयी नी ना० कं ते नरा मही व ते सु पा मा पा म्ने तु न्मं
 वि कित ना। इष म्प यानः पुत्र पुमा तन वा कं हि म्मु तयो। न मे क वि त वि स्त ति स्ते पा नो दे व न क्त तः। न प्रोषि
 वाङ्मूक पति मदाः सति दिव स्ता युर्ज नो पा नुः। मानो न क्ता वे री दा प्पृणी व स्यो मा या नु र्वा तु मा वतौ।
 प नो ग वृत्ता नि ना म प नु प म्ने सौ य न क्त्वि नः॥२५॥ उत्त यं रा पा व वृ न इ० दो न क गि दं व वः। स त्वा म
 प्प वा सो म पी त ये पि यारा वि म्मा ग म्वा त० दि स्व ना कं वृ प तं त मो क स्ये पि य गो ति श त क्तुः। उत्तो प मा
 नां प्र य मो ति पी द लि सो म का मं दि ते मनः। मा वृष स्व पुत्र व स्यो सुत स्ये द्वां प सः। विष्मा कित क नि वः॥

[illegible]

॥२१॥

आने कस्मि कृणु क्रिदेव तय माने देती न देवीः । अथा आ स्वस्व ३ उता पने वनः । विखा वनो क निवृत्तता
 ते अका दिवान क वन क्रिषः । प्रत गी रुनो म प्य वातु वी म प्य स म स्तो वी र्णा य क उता ते बाहु वृष्णा रा
 त हू तो नि या व हू म मि क्रु तुः ॥ १२ ॥ ओ अस्मा उप सु ति त न ता य क क को ष ति । उ क षे दि उ स्य मा दि
 न व यो व ध ग ति स्यो मि नो त डा ३ उ स्य ना त यः । अ य को अ स्य मो न ति ने कः कृ शी न या स्यः । उ वी न
 ति प्र वा व धे वि र्का स का ता नो क स्या त डाः १० । अ दि ते न वि र्व ता की न डा नुः स्ति षा स्य ति प्र वा य मि उ
 त त व वी र्णा मि क नि षा तो त डाः १० । आ या दि कृ णा वा म त ३ उ द्रा ति व ध ति । ये ति रा वि श्र वा क नो
 त उ मि क्रु स व स्य ते त डाः १० । धृ ष त स्वि धृ ष न्न नः कृ णो षी उ य हू १ त व्रेः स्यो मेः स्य प र्य तो १ गो निः
 प्र ति नु ष तो त डाः १० । अ व व श न् वी ष मो व ता ३ व मा नु षः । कृ ष्ठी ३ द्र स्य स्यो मि नः स स्या यं कृ णु ते
 य क त डाः १० ॥ १४ ॥ वि र्वे त ३ उ वी र्णा दे वा अ नु उ तु ३ उः । नु वे वि र्वे स्य गो प तिः पु त्र पु त त डाः १० । गृ णो
 त दि उ ते रा व उ प म दे व ता न यो । य अ लि वृ त षे क स्या रा वी प ते त डाः १० । स्य म ने व व पु षा तः कृ णा व
 त्मा नु षा यु गा वि दे त दि ३ वे त न म प्य सु तो त डाः १० । उ कृ णा त मि उ ते रा व उ त्वा म त व कु तु १ नु नि गो नु नि वा
 वा वृ ष म्पि व त व रा म ति त डाः १० । अ कं व त्वं वृ त द हं यु क्ता व स नि त्त मा । अ ना ती वा वि ३ उ वे

आनुनौरु नमं स ते तदा ॥ १ ॥ सत्पमिदा उतं वयमिं संस्तवामना नृ० । मका ० असु नतो वपो तु निजो ती०
 विसु नतो तदा ३ ३ सत्पना तयः ॥ ४० ॥ सपुकोमिकानां वेन कुरुति नानके । यत्पदना मनुषि ता देवे पु
 पिये नानके । दिवोमानं नो ह ३ ० ह्योम पृष्ठा सो ज ३ यः । उ कथा वृक्ष वरां स्यात्स विवा ० अंगि नेत्ता इं डो गा
 आवृत्तो ३ व । सुवेत दस्यवो ० स्यात् । स प्रज्ञया कवि बुध ई डो वा कस्य वरुणिः । दिवो जर्क स्या कोम नारु
 त्ता गं व वरु । का ३ पुन ते अनु कुरु ० स्वाका व न स्या य जावः । स्वावम कजिनु वते ० उगो व स्या दावने । इं डे
 विरदा निवीर्य कृता निके की निव । यम क मिक्षु नं वि ३ ॥ ४१ ॥ यत्तां वरु नया विरो ० इय्यो पाद स्युत ।
 सस्युता गुरुणि विवि ० ३ ३ यो नान स्य स्य स्य ० । इय मुने अनु कुरुति रव कृषे तानि यो ० स्यात् । याव रव
 कस्य वरु नि । सस्य वरु को ३ न ३ उ क मिक्षु की वरु । यावं न य रव जा दे । तद धाना ना व स्य
 वो ३ यत्ता ति इ क्षि त नः । स्या मम नु वतो वथे । वरु विद्या यथा मनु कृति ० न नो नु मः । के पा
 मे ० ३ व स्या ३ का । का स्ये उ ड मे कना पर्व ता स्ये वरु कृते त न कृतौ स को पा ३ । यः सं स ते तु
 वने था यि प ३ इं डे जो ह्या ज स्या ० अवंतु दे वाः ॥ ४२ ॥ उवा म् ई नु तो माः कृणु धनाथो न डि वः ।

॥३७॥

नववृद्धादिषोडश्रि। पञ्चपत्नीः पञ्चपत्नीः निवापस्वमदाः कसिानदिताकखनइति। त्वमीतिषेयुता
 नाभिः इवमस्युतानाः। त्वंवाका कनानाः। १८ दिव्रेदिमयोदिवा ४० व्योषं वर्षतीनाः। इति पत्नीनां १८ स्त्रीः।
 तदा वित्तवर्तनं निनिशतवतं सदास्थिताः। विद्वोतत्तुनेनेदिया। वचं मुत्वादिवा सुते वचं न कूदं वामदे। सस्या
 कं काममापत्ता ॥४४॥ कृष्णवपतो युवातु विग्रीवो मनानंतः। वृद्धाकस्तं सपयति। कस्यास्थिहव
 नं वृषाकृच्छ्राः नवगच्छति। इदं कउस्त्रिदावके। कं नेनानाका स्युतवृत्तकं कं सुवीयाठि कथेकउस्त्रि
 इतमः। दायतेमानु वेकने लोमः पुनुपुसुयते। तस्यादिप्रइवापिवा। दायते दायतावतिसुषोमाया
 मापिप्रियः। साकीकीये मदिसिमः। तममनापलेमदायपुपुये। १८ दीमिंइइवापिवा ॥४५॥ नदिंइ
 प्रागपागुइइत ग्राहुचलेनृनिः। कायादिनुचमागुनिः। यदा प्रसवतो दिवोमादयालेस्वाग्निः।
 यदासमुदेकांथसः। सातागीतिमकासुतुं दुवे गामिवतो कसे। इंदस्योमस्यपतये। सातइंदमदि
 मानं सनयोइवतेमदः। नयेवदं नुवित्ततः। इंदगुणीषु सुषेमदाः उइरीरानकव। १८ दिनः
 सुतं पिवा। सुतावतस्त्रावयं प्रयत्नतो रुवामदे। इंदोवदिनोत्यदे ॥४६॥ यद्विद्विराखतामसीः ३

साथानास्य० तं तावत्तः कदा मदे। इत्य० ते सोमं मधु उक्तं न इति ननुः। कुषाणा इति तत्ति वा विद्याः न यो विप
 रितोति सप्तसु यमागदि। सस्येथे सिस्र बो तुरु द्वा ता मेषतीना० न क्वादिना पदीना० मादेवा मप
 वा निषत्। सस्येथे पृथतीना मपि रवं उ० वृत्तत्तु। सु क्वादिना मप मादु। न चातो उ० दस्य मे स्य स्ये
 तात्तु नाथसः। स्रवो देवेषु कृतं ते नो। सिर्वो वि० दस्य मि० इ० सवा मपु तये। वृत्तत्ता यंतः स्युत सो मे सध
 नेरु वेत्त न का निता० मप उ० धा व नं ते न स्थिना मु नो मदे सु सिध म० थसः। य द्वा र्त्ता रा रा माना
 य स्यु न ते ता ता क नि व उ कय क०। यः स को म्मो म र्वो यो क की को दिना मप यः। स्रु व स्य ने कय
 त्वा पा वृत्त मि० दौ ग क स्य वृत्त का। नि स्यात० स सः पु न स्यां त० व स्यु दि० प ति न रा पु०। व क्री सु नि यो
 रु य स्व र्त्त न वि० उ क्त्वा म ला व रा त्। य द्वा र्त्त य पु न सु त पु न वि० न न०। व यंत त द्वा० स त ना म सि य क
 मु कय० न व रः। १४०। स स्या तो मे पु पु न सु त व क्ति वो म र्त्त य च स्यो म पाः। त मि धि वं क कृते का स्यं
 व स्यु डे मः स्यु न ते नु वः। व य मे न मि न स्यो पी वे मे रु व क्ति ता०। त स्या उ० म० स० स० म०। सु त त्ता नु नं
 नु न त्ता नु ते। व क्ति वं द स्य वानु उ० न म वि० ना व० नु नं नु प ति स० मं न० स्यो। कुषाणा ता मदी० उ० वि० त०

[illegible]

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

॥२४॥

सुगवद्भनः। सप्तमो तानुस्मिदीनता। मानो न प्रेवयो वृधः। सो वा सो विश्वीद्विद्विरो मयाः। सप्तमया
 सप्तमिः। सप्तमया मयुतेनौ तयाया। इमा ज्ञेवाः तानुये यानि रिस्यते। यमृद्विज्ञे वदुधा कल्लयः। तः। यव
 ईवा कुरुनाडु केना। प्रसिते दस्यवेरुका। तुनीदः इस्मवीर्य। यद्विः। इवा यो न क्लितो। एतत्तः। इवीर्यः। इ० इने दी यरद्वि
 दि। उवमः। तामप्योना। यस्मै त्वं वसो दानाय मः यस्मै। यथा मने। विवस्वति यस्मै त्वं वसो दानाय सि
 मंति। यथा मने सा वरातो। प्रवीर्यमुयं विवस्वति यस्मै त्वं वसो दानाय सि। यथा मने सा वरातो। प्रवीर्यमुयं विवस्वति यस्मै त्वं वसो दानाय सि
 दिमा। अतिप्रवः। सुनाथ सः। सप्तममस्मृनी ना ममीवाः। अमिनमो मयितं सदिदीपः। रयादो न तन्निवये
 सप्तममेधाः। तर्दिनाय तर्दयस्मै। आदिनाय वद्विस्ततः। पविद्वेत्तना कनः। मदिबो मरुता मषवः। यो अरद्वि
 सिवद्वेत्तव सप्तमयाः। आसप्तमयवीर्य। दिवेषा सिनू कान्वसुना। जद्विर्तेरुन नाथ सः। तमिद्वानमी मदे
 वावतः। उवमः। त्वावतः स्वादो न तन्निवये। त्ववो काम विवस्वते यथा नृकृति यो धृत्वादि। रुनिः॥ ॥३॥
 रीरा कलसदिताया। वमो श के वतु यो यथायाः॥ ॥ रुनिः॥ आता रयुं यथो तजै सुम्या यवत
 यामंति। तुवि कृति मती पमिंदु राविष्टु सततते। तुर्वि सुपुनर्वि कृतो रावी वा विवस्वता मते। आयं प्रावमदि
 तनाय सतते मदिना मरुः। पविष्टुता यत मी यतुः। दस्ता वरुः। दिराय यः। विवस्वत रयु य सतति मनी
 ततस्म रावसः। एवै रयवति ना मरुती कृवेन या वा। अतिप्रवः। सुनाथ सः। सप्तममस्मृनी ना ममीवाः। अमिनमो मयितं सदिदीपः। रयादो न तन्निवये

[illegible]

॥२७॥

त्रितयाप्तौ। यद्वा मन्त्रं मंदं स्य मितुतिः। यद्वा यत्कृ पनावति स्य मुडे न पिमं थं स्ये। अस्मा क मितुते
 न ताम स मितुतिः। यद्वा सितु वृत्तौ वधो यत्क मान स्य सतन ते। उक्ते वा यत्क नार्त सितु मितुतिः।
 देव देव वा वल ३० इ मितु ३० गृणी पत्ता। यद्वा यत्क नार्त वी गो वान नः। यत्क सितु वृत्तौ वधो यत्क सितु मितुतिः।
 म्पात मं। यद्वा सितु विडं वा वपु यत्क नः॥ ४॥ मन्दी न स्य प्रती न यः पु वी नु त प्र र स्य यः। विस्वा
 वरु नि द्यु त्र प्पे वान नः॥ ३० इ वृत्ता यत्क त वे दे वा सौ द धि ने पु नः॥ ३० वी न नु यत्क त स्य मो क स्ये।
 मन्दी तं मन्दी ना वयं स्यो मे ति रु वि न स्यु तं। यत्क न ति यत्क नु नः स्य मो क स्ये। न यं वि वि क्ते मे द स्यी नां त वि क्ता ता
 व द्धि ता। यद्वा मन्दी न स्य ति वि वि स्य मो क स्ये। यद्वा यत्क नु नः स्य मो क स्ये। यद्वा यत्क नु नः स्य मो क स्ये।
 ॥ ५॥ यद्वा यत्क नु नः स्य मो क स्ये। यद्वा यत्क नु नः स्य मो क स्ये। यद्वा यत्क नु नः स्य मो क स्ये। यद्वा यत्क नु नः स्य मो क स्ये।
 यद्वा यत्क नु नः स्य मो क स्ये। यद्वा यत्क नु नः स्य मो क स्ये। यद्वा यत्क नु नः स्य मो क स्ये। यद्वा यत्क नु नः स्य मो क स्ये।
 यद्वा यत्क नु नः स्य मो क स्ये। यद्वा यत्क नु नः स्य मो क स्ये। यद्वा यत्क नु नः स्य मो क स्ये। यद्वा यत्क नु नः स्य मो क स्ये।
 यद्वा यत्क नु नः स्य मो क स्ये। यद्वा यत्क नु नः स्य मो क स्ये। यद्वा यत्क नु नः स्य मो क स्ये। यद्वा यत्क नु नः स्य मो क स्ये।
 यद्वा यत्क नु नः स्य मो क स्ये। यद्वा यत्क नु नः स्य मो क स्ये। यद्वा यत्क नु नः स्य मो क स्ये। यद्वा यत्क नु नः स्य मो क स्ये।

१ यद्वा यत्क नु नः स्य मो क स्ये। यद्वा यत्क नु नः स्य मो क स्ये। यद्वा यत्क नु नः स्य मो क स्ये। यद्वा यत्क नु नः स्य मो क स्ये।

[illegible]

॥ अष्टाशकप्रानं नः ॥